UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186577
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

H 181.404

Call No. S 52 S A   Accession No. G.H. 2632

Author श्यामजी भाई ed.

Title श्री विश्वशान्ति   1961

This book should be returned on or before the date last marked below.

पता:— श्री विश्वशान्ति आश्रम,
C/o सुखदेव भवन कल्याणी देवी,
इलाहाबाद-३ । (उ० प्र०)

श्री विश्वशान्ति

(भाग (१) का शेष ज्ञान)

इस ग्रंथ को एक बार पठन करने
वाले भी हज़ारों के धन की
हानि से बचकर लाभ
का अनुभव करेंगे ।

मूल्य सेवा का ज्ञान

भगवन् ! पुनः प्रकाशन हेतु और विश्व-सेवा विद्या के विद्यार्थियों की सेवा हेतु उदार भाव से सेवा प्रदान करने की प्रार्थना है ।

स्मृति रहे ! श्री धार्मिक ग्रन्थ बिना सेवा-दान के लेना वर्जित है ।

श्री ग्रन्थ परिचय

भगवन् ! श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (१) जो १९२ पृष्ठों में प्रकाशित था उसका आंशिक ज्ञान दैनिक पाठ हेतु ८० पृष्ठों में प्रकाशित कराया गया और मासिक पाठ हेतु शेष ज्ञान आपके कर कमलों में अर्पण है।

श्री प्रकाशन सेवा का ज्ञान

श्री सन् १९६० तक समस्त प्रकाशन संख्या ४,९,६०० से श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा सभी प्रान्तों की व्यापक सेवा हुई है।

यह संस्करण सन् १९६१ में प्रकाशित हुआ है।

श्री विषय-सूची

विवरण	पृष्ठ संख्या
(१) श्री दिव्य संदेश	१
(२) मेरा अनुभव	३
(३) अपना अनुभव	६
(४) श्री ध्यानयोग के माहात्म्य का ज्ञान ...	८
(५) श्री ध्यान योग की विधि	१८
(६) श्री समाधि शक्ति के प्रभाव से समाज सुधार	२२
(७) श्री प्रभु मर्यादा का फल—ध्यान ...	२८
(८) श्री योगसिद्ध महामन्त्र का प्रभाव ...	३३
(९) श्री मन्त्र विद्या का रहस्य	४८
(१०) श्री सेवायोग यज्ञ का ज्ञान	६०
(११) आहार का ज्ञान	७६
(१२) दुःखों की खेती का ज्ञान	८३
(१३) चित्त नाराज क्यों होता है ?	८८
(१४) चिन्ता और नाराजी	९१
(१५) गुण-बम का ज्ञान	९२
(१६) देवियों का दुःखमय जीवन	९४
(१७) ॐ श्री प्रभु के दण्ड विधान का ज्ञान ...	११५
(१८) ब्रह्म-हत्या का ज्ञान	१२५
(१९) श्री नानक देव संत की चेतावनी ...	१३१

विवरण	पृष्ठ संख्या
(२०) संन्यासी और पण्डित शब्द का ज्ञान ...	१३५
(२१) वर्ण-धर्म का ज्ञान	१३६
(२२) श्री ब्राह्मण-पद का ज्ञान	१४५
(२३) श्री विश्वपिता के न्याय और प्रेम का ज्ञान	१६४
(२४) सेवक की सविनय प्रार्थना	१६८
(२५) श्री गीता दर्शन	१८२
(२६) असुर कौन है ?	१८७
(२७) श्री विश्व सेवार्थ प्रार्थना	२००
(२८) नम्र निवेदन	२०३
(२९) श्री देश निवासियों के प्रति प्रार्थना	(आवरण पृ० ३)
(३०) श्री सार तत्त्व	(आवरण पृ० ४)

श्री विशेष ज्ञान

(१) मूल्य का ज्ञान (प्रथम पृ०)		(८) ज्ञान और अज्ञान	९३
(२) श्री ग्रन्थ परिचय (द्वितीय पृ०)		(९) बौद्धिक रोगोंका नुस्खा	११४
(३) सेवा, ध्यान के त्यागी	५	(१०) भाग्य और पुरुषार्थ	१२४
(४) अपराधी और प्रेमी	१८	(११) असल और नकल	१३८
(५) श्री ध्यानयोग	२१	(१२) विद्वान् और मूर्ख	१४४
(६) प्रेमी और पदार्थ	५९	(१३) भारत की मर्यादा	१६८
(७) दरिद्रता और कलह	७५	(१४) पद और जेल	१९०

(१५) सेवा और प्रतिष्ठा ... १९६

श्री दिव्य सन्देश

श्री भगवत् कृपा से मुझे अति प्रेम और प्रसन्नता के साथ मानव मात्र की सेवार्थ पूर्ण आनन्द और शक्ति दायक श्री दिव्य सन्देश देने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, श्री ध्यान- समाधि दायक महापुरुष देव के प्रेम प्रभाव से मैं धन्य हूँ। अस्तु

सेवा में प्रार्थना है कि आनन्द शान्ति युक्त आठ सिद्धियों की प्राप्ति हेतु और दुःख-अशान्तिदायक आठ असिद्धियों की शान्ति हेतु श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (१) का आंशिक ज्ञान पृष्ठ ८० में प्रकाशित है और कुछ परिवर्तन कर शेष ज्ञान इस ग्रन्थ में प्रकाशित कराया है।

जिस आत्मिक आनन्द शक्ति का उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रन्थों में है और जिसे प्राप्त करने की अभिलाषा से दूर देशों के, ऐश्वर्य और सौन्दर्य को भोगने वाले, धुरन्धर वैज्ञानिक लोग भी भारत की ओर आकर्षित होते हैं उसी आत्मिक आनन्द शान्ति की प्राप्ति का सुगम मार्ग बतलाने वाला यह श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित है।

मन को शान्त कर आत्मिक आनन्द में मग्न करने के समान कोई दूसरी आनन्द शक्ति दायनी विद्या विश्व में

नहीं है। स्मृति रहे! दिमागी शान्ति के प्रभाव से ही संपूर्ण ज्ञान शक्तियों का सुगमता के साथ विकास होना सम्भव है।

विचारशील भगवन्! लेखनी द्वारा इस ग्रन्थ का अधिक माहात्म्य न लिखकर आप से विनय पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि आप नियमानुसार इस ग्रन्थ का अध्ययन करें और परिवार सहित अपने को आनन्द सम्पन्न, गुण सम्पन्न, ज्ञान सम्पन्न व शक्ति सम्पन्न बनाकर यथा शक्ति देश को उन्नतशील बनाने का प्रयत्न करें।

मेरा अनुभवपूर्ण विश्वास है कि जो मानव इस दिव्य ग्रन्थ में प्रकाशित गुण-ज्ञान को हृदय रूपी अलमारी में संग्रह नहीं करते हैं उन अहंता और ममता के उपासकों को श्री न्यायकारी प्रभु जी चिन्ता-क्रोध प्रद मानसिक अग्नियों द्वारा आजीवन उबालते रहते हैं। गुण रहित मनुष्यों को श्री प्रभु जी सदैव ही नाराज रखते हैं।

वेदना बाहिरी शरीर के विकारों की सूचक है और चित्त की नाराजी भीतरी शरीर के पापों की बोधक है।

स्मृति रहे! चित्त की नाराजी श्री प्रभु जी का महा-भयानक दण्ड है और चित्त की समता आनन्द शक्ति दायक परम पद है जिसकी प्राप्ति का यह नुस्खा है।

ॐ आनन्दमय

विश्वशुभ चिन्तक

मेरा अनुभव

ॐ आनन्दमय ! ॐ शान्तिमय !

आनन्द शान्ति अभिलाषी मानव-समाज की सेवा में प्रार्थना है कि मैंने दीर्घकाल तक भारत के प्रसिद्ध पण्डित-संन्यासी और पण्डे-पुजारियों के आदेशानुसार आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन, विभिन्न देवों की पूजा आराधना, मंत्र जप, तीर्थ, व्रत, दान-दक्षिणा आदि धार्मिक आचरण श्रद्धा-प्रेम पूर्वक किए किन्तु मुझे किंचित भी मानसिक आनन्द-शान्ति की प्राप्ति नहीं हुई।

श्री कृपामय प्रभु की कृपा से मुझे आठ वर्ष पूर्व श्री महापुरुष आनन्दमय देव जी का दर्शन प्राप्त हुआ ❀। श्री आपके आदेशानुसार मैंने श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का स्वाध्याय तथा ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करना प्रारम्भ किया, जिससे मुझे कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान हुआ और मेरे चित्त में शान्ति प्रद प्रसन्नता का प्रादुर्भाव होने लगा। तत्पश्चात् श्री आपके चरणों में बैठकर नियमानुसार ध्यानयोग का अभ्यास करने से चार

❀ मेरी आयु ५८ वर्ष की है। टाईप फौन्ड्री मेरा कार्य है। मेरे पुत्र और पुत्रवधु भी इस ब्रह्मविद्या अर्थात् आनन्द शक्ति दायक विश्व सेवा विद्या के अध्ययन में संलग्न है।

ही दिन के अन्दर मेरे हृदय में आनन्द शान्ति का अनुभव होने लगा। क्रमशः मुझे प्रति दिन छः घन्टे ध्यानजनित आनन्द प्राप्त हो रहा है और मेरा चित्त हर समय प्रसन्न रहता है।

नेत्र बन्द कर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के स्वरूप की स्मृति करने से जो आनन्द शान्ति की उपलब्धि हुई उस आनन्द के सन्मुख इन्द्रियों द्वारा जो आनन्द प्रतीत होता था वह परिणाम में दुःख अशान्ति दायक होने का बोध हुआ।

ध्यान जनित आत्मिक आनन्द तो देदीप्यमान सूर्य के सदृश भासित हुआ और इन्द्रिय विषय जन्य आनन्द का प्रकाश टिमटिमाते जुगनु के सदृश भासित हुआ। ध्यान के आगे जो अपरिमित व अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होती है उस परमपद का मैं विद्यार्थी हूँ।

मेरे वचनों पर विश्वास करने वाले प्रयाग निवासी नर-नारी अपने बालक-बालिकाओं सहित सब प्रकार के अशान्ति दायक संकटों से मुक्त होते हुए ध्यान जनित आनन्द शान्ति को प्राप्त हो रहे हैं और भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में श्री विश्वशान्ति ज्ञान ग्रन्थ का व्यापक प्रचार हो रहा है।

यह मनोवैज्ञानिक ग्रन्थ परम श्रद्धेय श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित सैंकड़ों ही महानुभावों का स्वानुष्ठान

युक्त आदर्श अनुभव है जो बालक, वृद्ध, युवा, देवी हो या पुरुष सब के हृदय को निर्मल करने वाला और सब प्रकार से सुख-शान्ति युक्त आनन्द-शक्ति दायक है। आपके सूक्ष्म शरीर को गुण, ज्ञान तथा ध्यान रूपी अमृत आहार कराकर दुःखी 'जीव' से आनन्दमय 'ब्रह्मनिष्ठ' बना देगा। इस विशुद्ध ज्ञान के प्रसार-प्रचार से एक भारत देश ही नहीं विश्व का भाग्य उदय होगा।

वर्तमान में स्कूल-कालेजों के छात्र-छात्राओं में जो अज्ञान जनित विप्लव हो रहा है उसे शान्त करने में पूज्यजन संलग्न हैं। उन महानुभावों के प्रति अनुरोध पूर्वक करबद्ध प्रार्थना है कि श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ विद्यार्थी समाज के लिए परमहितकारी सिद्ध हुआ है। कृपया आप स्वयं अनुभव करें। ॐ आनन्दमय।

प्रार्थी सेवक

सेवा, ध्यान के त्यागी पंडित, संन्यासी व पण्डे, पुजारी आदि धार्मिक वक्ताओं का आनन्ददायक और मोक्षदायक वचन तथा मन्त्र कैसा ?--जाली सिक्के जैसा !

अपना अनुभव

ॐ आनन्दमय ! ॐ शान्तिमय !

श्री विश्वशांति एक परम रहस्यमय ग्रन्थ है जिसकी महिमा अपार अपरिमित है । इसमें सम्पूर्ण धार्मिक ग्रन्थों का सार संग्रहित किया है । इसकी रचना तो सरल है परन्तु इसका आशय बहुत गूढ़ और गम्भीर है । श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ अनन्त आनन्दमय भावों का अथाह समुद्र है । जैसे समुद्र में गहरा गोता लगाने से रत्नों की प्राप्ति होती है ऐसे ही एकाग्रचित्त होकर श्रद्धा-प्रेम और उत्साहपूर्वक श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ को प्रतिदिन पठन करने से जिज्ञासु प्रेमियों को नित्य नये-नये भावों की रत्न-राशि प्राप्त होती है ।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का एक भी शब्द अनुभव रहित तथा सदुपदेश शून्य नहीं है । यह अनुपम ग्रन्थ अत्यन्त प्रभावशाली है । इसके नित्य स्वाध्याय से क्या ही अपूर्व लाभ होता है इसका तो कहना ही क्या, एक बार पठन करने से भी एक महान उद्देश्य की पूर्ति होती है । श्री ग्रन्थ सरल होते हुये भी इसके भावार्थ अत्यन्त गम्भीर और उदार हैं ।

सूत्र रूप पंक्तियों में और अधिक क्या लिखूं। श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित परम आदरणीय श्रीमान् पुरुष एवं श्रीमती वीराङ्गना देवाङ्गना देवियाँ श्री भगवत् ध्यान जनित आनन्द शान्ति की ज्ञाता और दाता हैं। इन्होंने भारत की पतित हुई सात्विक संस्कृति का उत्थान किया है। यह संस्कृति एक भारत ही नहीं विश्व के लिये आदर्श है। श्री विश्वशान्ति आश्रम ही हमारा एवं विश्व का भाग्य उदय करने वाला है।

मुझे पूर्ण आशा है कि ग्रन्थ भाग (१) के आंशिक ज्ञान में पृष्ठ ६ पर लिखी विधि अनुसार साधन करने से श्री प्रेमियों के हृदय में अपार सुख, शान्ति युक्त आनन्द शक्ति की जागृति होगी। श्रीमती देवियाँ व श्रीमान पुरुष तथा बालक-बालिकाएँ मुझ सेविका के वचनों पर विश्वास कर आदरपूर्वक श्री ग्रन्थ को अपनाएँ और इसका नियमानुसार स्वाध्याय कर इस आनन्दमय ज्ञान का रुचिकर सेवन करें, आपका जीवन अमृतमय बन जायेगा।

मेरी आयु प्रायः ६२ वर्ष की है। मैं बाल्यावस्था से ही उपदेशकों का सङ्ग तथा वेद-शास्त्रों का पठन-श्रवण और तदनुसार साधन करती रही तथा बर्षों तक आर्य समाज की प्रधान रही। किन्तु श्री महापुरुष भगवान के १२ वर्ष के समागम से मुझे जो ध्यान जनित आनन्द

शान्ति का लाभ प्राप्त हुआ, वह वर्षों तक अनेकों साधन करने पर भी नहीं हो सका था।

श्री समाधिमग्न महापुरुष भगवान के प्रेम-प्रभाव से मेरे अशान्तिदायक सम्पूर्ण दुखों का अन्त हुआ है और अब मैं प्रतिदिन श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का पठन करती हूँ और घरेलू व शारीरिक कार्य करते हुए ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करती हूँ तथा प्रातः और सांयकाल नेत्र बन्द करके ध्यान करती हूँ। ध्यान ही आत्मा का अमृत आहार है।

श्री आनन्दमय प्रभु ध्यान-समाधि उसी शरीर को प्रदान करते हैं जो भीतरी-बाहरी दोनों शरीरों से श्री विश्वपिता के अनुकूल सात्त्विक आहार-व्यवहार करता हुआ श्री सज्जन समाज की सेवा-शुश्रूषा करने में प्रयत्न-शील रहता है।

इन वर्षों में भारत देश के अनेकों परिवार के परिवार श्री विश्वशांति आश्रम द्वारा आध्यात्मिक आनन्द-शक्ति को प्राप्त हो रहे हैं। मेरी अभिलाषा है कि मानव मात्र ही सात्त्विक आनन्द शक्ति के ज्ञाता हों।

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की जय !

शुभ चिन्तिका

श्रीं ध्यानयोग के माहात्म्य का ज्ञान

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ की विधि अनुसार गुण-ज्ञान को धारण करने से क्या-क्या लाभ होता है ?

—अनुभव पूर्ण उत्तर

(१) अन्तः शरीर के आहार-व्यवहार, रोग, औषध एवं चिकित्सा का ज्ञान होता है (दिमागी चिकित्सा सम्पूर्ण विद्याओं का राजा है) ।

(२) बाहिरी शरीर के आहार-व्यवहार का उत्तम-उत्तम ज्ञान प्राप्त होता रहता है ।

(३) कारण शरीर के आहार-व्यवहार का ज्ञान होता है।

(४) महाकारण शरीर (आत्मा-परमात्मा) के प्रभाव का ज्ञान होता है ।

(५) उत्तम-जल-वायु वाले देश में निवास होता है ।

(६) अन्न, वस्त्र, धन, भवन, जन आदि सात्त्विक प्रेमी-पदार्थ यथा समय आवश्यकतानुसार प्राप्त होते हैं।

(७) शरीर में रोग होने पर चिन्ता, भय एवं कष्टदायक अशान्ति नहीं होती❀ ।

❀ रोगावस्था में औषधि का सेवन न करना, दिगम्बर रहना, अग्नि तपना, विभूति रमाना, केश बढाना, नशीले और विषैले पदार्थों का सेवन करना इत्यादि तामसी साधुओं का ज्ञान है ।

(८) हमारा शरीर हल्का, मन शान्त, हृदय में आनन्द, सेवा-कार्य में उत्साहयुक्त प्रसन्नता और समाज के साथ प्रेमपूर्वक उत्तम व्यवहार होता है ।

(९) हमारे शरीर में तामसी मनुष्यों के सदृश हार-थकावट तथा हृदय में घबराहट नहीं होती ।

(१०) मानसिक रोगों की निवृत्ति होकर मानसिक आरोग्यता रहती है (मानसिक रोगों का ज्ञान श्री आंशिक ज्ञान ग्रन्थ में पृ० २८ से ४६ तक प्रकाशित है) ।

(११) श्री गीता के आदेशानुसार श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित गुण दायक धर्म के पालन में हमारा उत्साह और नकली धर्मों से वैराग्य हुआ है ।

(१२) श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा भंग करने के संकल्प से हमारे हृदय में लज्जा होती है ।

(१३) छः घन्टे सोने से ही शरीर स्वस्थ तथा बुद्धि कुशलता पूर्वक कार्य करती है ।

(१४) मुख पर शान्ति, प्रसन्नता, प्रफुल्लता, तेज, उज्ज्वलता आदि चिन्हों का प्रादुर्भाव रहता है ।

(१५) ॐ श्री महापुरुष देव के प्रेम-प्रभाव से कई घन्टे ध्यानावस्थित बैठ कर अलौकिक आनन्द में मग्न हो जाते हैं (ध्यान-समाधि का आनन्द ही असली आनन्द व स्थायी रहनेवाली शान्ति है) ।

(१६) अनुकूल-प्रतिकूल द्वन्द्वों में समचित्त रहना सात्त्विक समझा है ।

(१७) हर प्रकार के स्वभावयुक्त प्रेमियों के साथ नानात्व होने पर भी अपनी विजय का दर्शन करते हैं ।

(१८) निशाचर प्रकृति के दुर्जन मनुष्य चाहे कितना ही विरोध क्यों न करें, श्री आनन्दमय प्रभु की अदृश्य शक्ति के प्रभाव से अन्त में द्रोह करने वाले स्वयं पराजित होकर, श्री दुष्टदण्डदायक प्रभु के विधान से दुःखमय अशान्तिमय हो जाते हैं । अर्थात् हमारे साथ निन्दा-अपमानादि तामसी व्यवहार करने वालों को श्री प्रभु चिन्ता, क्रोध, भय और रुदन दायक दण्डों द्वारा पीड़ित रखते हैं ।

(१९) गुणों के ज्ञाता श्रद्धालु प्रेमी जन संग, सेवा, यश, मान कर सब प्रकार के लाभ को प्राप्त होते हैं और मूढ़ पापी लोग निन्दा करके विनाश को प्राप्त होते हैं, जिससे भूभार हल्का होता है ।

(२०) विश्व के दुखी-अशान्त मानवों की श्री विश्वशान्ति ग्रन्थों द्वारा सेवा करने से ही सुखी होने का ज्ञान हुआ है ।

(२१) राजसी, तामसी, सात्त्विक गुणमयी माया का ज्ञान होता है ।

(२२) आत्मा-परमात्मा के भेद-अभेद का ज्ञान होता है ।

(२३) नाना प्रकार के मनुष्यों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण पहचानने की योग्यता प्राप्त होती है।

(२४) हम लोग उत्तरोत्तर श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद को प्राप्त हो रहे हैं, इस विषय का प्रत्यक्ष अनुभव होता है, जैसे एक सिपाही को क्रम-क्रम से राष्ट्रपति पद पर पहुँचने तक अपने से आगे वाले पद का ज्ञान होता रहता है।

(२५) 'पिण्डे सो ब्रह्माण्डे' का ज्ञान होता है अर्थात् जो सुख-दुःख, शान्ति-अशान्ति, ज्ञान-अज्ञान, आनन्द और शक्ति देने वाले श्री आनन्दमय प्रभु सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हैं, वही न्यायकारी, दयालु, प्रेमी श्री आनन्दमय प्रभु हमारे हृदय में विराजमान हैं।

(२६) हमको हर समय पद-पद पर ॐ आनन्दमय प्रभु के मंगलमय विधान का ज्ञान होता है।

(२७) अनुकूल-प्रतिकूल प्रेमी-पदार्थों के संयोग-वियोग में श्री आनन्दमय प्रभु की अहेतुक कृपा का अनुभव होता है।

(२८) ध्यानावस्था में श्री प्रभु से वार्तालाप होती है।

(२९) श्री विश्वपिता के न्याय, दया, प्रेम आदि गुणों का ज्ञान होता है।

(३०) श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु सर्वशक्तिमान्, सर्वान्ति-

यामी हैं इत्यादि श्री भगवत् प्रभाव का ज्ञान होता है ।

(३१) ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के दण्ड-पुरस्कार का प्रतिक्षण प्रत्यक्षवत् अनुभव होता रहता है, जैसे रसना द्वारा कड़वे-मीठे रसों का ज्ञान होता है ।

(३२) श्री आनन्दमय प्रभु हमको हर समय हृदय से ही कर्त्तव्य-अकर्तव्य का सात्त्विक ज्ञान प्रदान करते रहते हैं ।

(३३) दिमागी ज्ञान को कथन करने में, लिखने में तथा विभिन्न कार्यों के परिणाम में पश्चाताप नहीं होता ।

(३४) श्री आनन्दमय प्रभु स्वयं भीतरी गुण, ज्ञान, आनन्द, शक्ति, और ध्यान शान्ति प्रदान करते रहते हैं और विश्व से उत्तम प्रेमी-पदार्थों का संयोग करवाते रहते हैं ।

(३५) जो श्रद्धालु प्रेमी (श्री महापुरुष देव द्वारा प्राप्त) हमारी बतलाई हुई विधि अनुसार ध्यानयोग का अभ्यास आरम्भ करते हैं वह प्रथम सप्ताह में ही ध्यान जनित आनन्द शान्ति युक्त श्री भगवत् शक्ति का अनुभव करते हैं । यह महापुरुष देव की योग शक्ति का अलौकिक व शास्त्रातीत चमत्कार है । इस आश्चर्यजनक शक्ति का अनुभव कर आप स्वयं चकित हो जाएँगे ।

आनन्दमय जीवन हमारा।
शान्तिमय जीवन हमारा।
सुखमय जीवन हमारा।
प्रेममय जीवन हमारा।
सेवामय जीवन हमारा।
ध्यानमय जीवन हमारा।
ज्ञानमय जीवन हमारा।
शक्तिमय जीवन हमारा।

हमारा यह अनुभव ज्ञान है कि श्री न्यायकारी आनन्दमय प्रभु सम्पूर्ण मनुष्यों को उनके श्रेष्ठ व कनिष्ट संग और सेवा के अनुसार ही गुण, ज्ञान, शक्ति, आनन्द व दुःख, अशान्ति और अज्ञान प्रदान करते हैं। जो साधक श्री महापुरुष देव की आज्ञानुसार मन-इन्द्रियों का संयम, श्री सज्जनों की सेवा और स्मरण-ध्यान करते हैं अर्थात् श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के नियमानुसार साधन कर ध्यानावस्थित हो जाते हैं उनके हृदय में श्री प्रभु कार्य को विधिवत् करने की सर्वोत्तम बुद्धि-ज्ञान देते रहते हैं। जैसे साधन करने वालों को उपेक्षाकृत श्रद्धा का, उपदेश देने वालों को उपदेश देने का, तत्त्वज्ञान लिखने वालों को शास्त्र लिखने का, प्रजारक्षक राष्ट्रपति को प्रजा की सुव्यवस्था का, सेनापति को संग्राम का, वकील को वकालत विषय का, पुलिस आफिसर को शासन करने का,

डाक्टर-वैद्य को रोगों की उत्पत्ति तथा किस रोग के लिये कौनसी ओषध उपयोगी है और श्री भगवान् ने कौनसी जड़ी-बूटी, अन्न, फल, पुष्प आदि बनस्पति किस काम के लिए बनाई है इत्यादि का, अध्यापकों को पढ़ाने का, छात्रों को पढ़ने का, व्यापारियों को क्रय-विक्रय का, काश्तकारों को वृक्ष, अन्न, रुई, शाक, फल, पुष्प आदि अधिक पुष्ट, बड़े, रसमय बनाने की युक्ति तथा जल, खाद्य, जमीन इत्यादि के विषय का, साइन्सवेत्ताओं को साइन्स का, इंजीनियरों को मशीनरी का इत्यादि अनेक प्रकार के विभिन्न कार्यों को सर्वोत्तम विधि से करने का।

ॐ श्री महापुरुष देव के आदर्श गुणों को धारण करने वाले श्री देव-देवाङ्गनाओं द्वारा विश्व के प्राणियों का कितना हित होगा और श्री महापुरुष देव की द्वेष भक्ति करने वाले तामसी मनुष्यों द्वारा विश्व में कितनी हानि होगी, उसको हम वाणी-लेखनी से प्रकट करने में असमर्थ हैं।

उपरोक्त विषय ठीक-ठीक केवल हमारी बुद्धि ही समझी है। हम लोग उत्साहपूर्वक अमृतदायक श्री विश्व-शान्ति सद्ग्रंथ में प्रकाशित गुण, ज्ञान, भाव, आचरणयुक्त धर्म का आजीवन पालन करते रहेंगे।

स्वेच्छा से, परेच्छा से, लोभ, भय अथवा प्रेम के वशीभूत होकर श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा

का त्याग नहीं करेंगे । अपितु भाव, आचरण, वाणी, लेखनी द्वारा इस आनन्ददायक ज्ञान को विश्वव्यापी करने व करवाने में प्रयत्नशील रहेंगे ।

सात्त्विक गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों को पालन करने में हमें किंचित् भी कष्ट नहीं होता, अपितु श्री महापुरुष देव के प्रेम-प्रभाव से सम्पूर्ण सङ्कटों का नाश होकर प्रत्यक्ष सुख, शान्ति, आनन्द, शक्ति दायक श्री भगवत् पद की ही प्राप्ति हो रही है ।

हमारा दृढ़ विश्वास है कि ॐ श्री गुरु भगवान् की दिव्य कृपा से अतिशीघ्र पूर्णानन्द शक्ति दायक इस राज-विद्या, विश्व-सेवा-विद्या, ध्यानविद्या, ब्रह्मविद्या एवं मानसिक चिकित्सा (दिमागी डाक्टरी) की पढ़ाई को अवश्य ही पूर्ण कर लेंगे ।

प्रश्न—भगवन् ! आपने इस ग्रन्थ का नाम श्री विश्वशान्ति और श्री महापुरुष देव को विश्वशान्ति स्थापक नाम से प्रकाशित किया, किन्तु एक ही श्री महापुरुष द्वारा ऐसा महत् कार्य होना कैसे सम्भव है, शास्त्र, युक्ति और अनुभव प्रमाण दीजिए ?

उत्तर—हे श्री प्रेमो ! शास्त्र प्रमाण तो श्री गीता अ० १२/४ में दैवी-सम्पदावान् महापुरुष को 'सर्वभूत-हितेरताः' तथा अ० १६/६ में आसुरी-सम्पदावान् को 'क्षयाय जगतोऽहिताः' कह कर दोनों को समान ज्ञान-

शक्तियुक्त बतलाया है। प्रत्यक्ष में आसुरी सम्पदावान् एक-एक पुरुष ने दिमागी ज्ञान-शक्ति से विश्वनाशक एटम, हाईड्रोजन आदि बम तैयार किये हैं। इसी प्रकार श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु से सम्पूर्ण भूतों का हित व शान्ति स्थापन करने की ज्ञान-शक्ति प्राप्त करना भी सम्भव ही है।

श्री महापुरुष देव के आदर्श गुणों को धारण करने वाले मानव महापुरुष-पद को प्राप्त हो जाते हैं, इस युक्ति से यदि सम्पूर्ण मनुष्य ही सत्त्वगुण को स्वीकार करें तो सभी को श्री भगवत् युवराज-पद प्राप्त होना सम्भव है।

जो कोई भी श्री प्रेमी देवी-पुरुष अथवा बालक-बालिका श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ की मर्यादानुसार सङ्ग, सेवा, स्मरण-ध्यान, आज्ञापालन करते हैं, वे सब प्रकार से आनन्द शान्तियुक्त ज्ञानवान् हो रहे हैं। नकली धर्मों की प्रतिष्ठा करने वाले विरोधी समाज का घोर आन्दोलन होने पर भी कई परिवार के परिवार श्री आश्रम द्वारा ध्यान जनित आनन्द शक्ति के अनुभवी हुए हैं।

ज्ञान करें! राजसी-तामसी मनुष्य तो अपने अनुकूल न चलने वालों का अपने ज्ञान-शक्ति से अनिष्ट करते हैं, किन्तु श्री सात्त्विक मानव न्यायकारी, दयालु, प्रेमी होते हैं। अतः श्रद्धा-प्रेम पूर्वक उनके अनुकूल चलने से ही

मनुष्य का परम हित होता है—यही आसुरी-दैवी सम्पदावान् के ज्ञान एवं शक्ति के प्रयोग में अन्तर है।

हे श्री प्रेमी ! श्री महापुरुषों का अपरिमित गुण, ज्ञान, एवं प्रभुत्व वाणी-लेखनी द्वारा अभी तक प्रकट नहीं हो सका, क्योंकि आन्तरिक आनन्ददायनी सम्पत्ति व शक्ति अनुभवगत् अनिर्वचनीय है। ॐ आनन्दमय

अपराधी और प्रेमी

अपराधी मनुष्यों के हृदय को नाराजी के तीरों द्वारा विदीर्ण करते रहना श्री प्रभु का न्याय विधान है।

प्रेमीजनों को आनन्द शक्ति प्रदान कर उनके चित्त को प्रसन्न रखना श्री आनन्द-मय प्रभु के प्रेम का लक्षण है।

चित्त की नाराजी अज्ञान की और चित्त की प्रसन्नता-समता ज्ञान की दाता है।

श्री ध्यान योग की विधि

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय श्री दिव्य मंत्र के जप के साथ साथ श्री इष्ट भगवान के स्वरूप को याद करने का जितना अधिक अभ्यास होगा उतना ही मन शान्त होगा। ध्यानकाल में तो गीता अ० ६ श्लोक २६ के विधान अनुसार जिस-जिस उद्देश्य को लेकर मन संकल्प-विकल्प करे उससे सर्वथा वैराग्य कराकर पुनः पुनः श्री आनन्दमय भगवान के नाम रूप की स्मृति कराने की तत्परता के साथ चेष्टा करनी सात्त्विक है।

मानसिक सामग्रियों द्वारा विविध प्रकार से भगवान के स्वरूप की पूजा करते रहना भी मन को भगवान में लगाने का सुगम साधन है।

व्यवहारकाल में भूत-भविष्य के संकल्पों का त्याग कर मंत्र जप के साथ-साथ श्री आनन्दमय भगवान के स्वरूप को याद करने का ही विशेष रूप से अभ्यास करने का विधान है।

अश्रद्धा जनित संकल्पों को "श्री मानसिक चिकित्सा" की विधि अनुसार बदलते हुए उन राजसी-तामसी भावों का निरादर करते रहने का अभ्यास करते रहना चाहिए।

श्री आंशिक ज्ञान ग्रंथ पृष्ठ ६ में प्रकाशित सात नियमों को सतत् सावधानी के साथ पालन करते रहने का अभ्यास ही समस्त संकटों का अन्तकर ब्रह्मानँद में मग्न करने का एक मात्र विधान व वरदान है।

जो मनुष्य दर्शन-श्रवण जनित मानसिक संकल्पों द्वारा जितने-जितने राग-द्वेष और स्वार्थ-अहंकार के भावों को धारण करता है उतना ही चिन्ता, भय, क्रोध और नाराजी दायक संकल्प रूपी बाणों द्वारा श्री आनन्दमय प्रभु जी उसके हृदय को विदीर्ण करते रहते हैं।

जो मानव जितना-जितना श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के गुण-ज्ञान को धारण करेगा उतना-उतना ही श्री प्रभु जी उस साधक का हृदय आनन्द शान्ति सम्पन्न निर्मल बनाएगें।

दर्शन-श्रवण जन्य समस्त जड़-चेतन श्री आनन्दमय भगवान का ही साकार स्वरूप अर्थात् श्री लीला विग्रह है। इस सात्त्विक भावना से मन को आह्लादित करते हुए प्रेम-प्रसन्नता में मग्न करने का अभ्यास अपने हृदय को अति शीघ्र गुण-सम्पन्न बनाने का साधन है। विधि-विधान श्री विश्वशान्ति आंशिक ज्ञान पृष्ठ २३ सूत्र ८ "हे प्यारे प्रेमियों ! मेरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम को मत भूलो, मुझे सर्वत्र, सब रूपों में और अपने हृदय में मानो।" तथा श्री गीता अध्याय ६ श्लोक ३० और

अध्याय १३ श्लोक १३ से १५ तक प्रकाशित है।

स्मृति रहे! इससे सम्बन्धित ज्ञान श्री आंशिक ग्रंथ पृष्ठ ७४ पर प्रकाशित है।

ध्यान की वृद्धि करने के अभिलाषी प्रेमीजन श्री ग्रंथ नियमावली के सात नियमों को तथा "सेवायोग यज्ञ" नामक लेख के ज्ञान को धारण करें।

(श्री ध्यान अभ्यासी प्रेमीजन इस लेख को मनन विचार पूर्वक प्रत्येक माह में एक बार पठन करेंगे।)

ॐ आनन्दमय

श्री ध्यानयोग परायण मानव का धार्मिक ज्ञान और मंत्र आनन्द-शक्ति दायक कैसा ? —स्वर्ण सिक्के जैसा !

श्री समाधि शक्ति के प्रभाव से समाज सुधार

प्रश्न—भगवन् ! ध्यान करना श्रेष्ठ है या समाज सुधार-सेवा कार्य करना उत्तम है ?

उत्तर—हे श्री प्रेमी ! जैसे बाहू बल द्वारा संग्राम करने वालों से, दिमागी शक्ति से प्राप्त हुए अस्त्र-शस्त्र आदि बमों द्वारा आकाशी युद्ध करने वाले अत्याधिक शक्ति-शाली सिद्ध हुए हैं वैसे ही अहं-बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान शक्ति से जो समाज की सेवा करते हैं उनसे अनन्त गुना अधिक श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के ध्यान द्वारा प्राप्त आनन्द शान्ति और शक्तियुक्त ज्ञान से समाज की सेवा करने वाले विश्व हितकारक सिद्ध होते हैं ।

जैसे स्थूल शरीर की रक्षा एवं शक्ति ज्ञान की वृद्धि के लिए नींद, भोजन, जल एवं पथ्य परहेज़ युक्त औषध आदि की आवश्यकता आप समझते है, वैसे ही हृदय को जप-ध्यान, प्रार्थना और सद्गुण-सदाचार के मनन-विचार रूप आत्मिक आहार देने की भी परम आवश्यकता है ।

सात्विक भोजन से रक्त, मांस, वीर्य की वृद्धि होकर बाहिरी शरीर में शक्ति का प्रादुर्भाव होता है । कारण शरीर के आहार अर्थात् निद्रा द्वारा देखना, सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि दिन भर के नाना कर्मों के कारण

हुई हृदय की चंचलता, अशान्ति एवं शरीर तथा मस्तक की थकावट दूर हो जाती है, किन्तु पुनः जागने के साथ ही, न चाहते हुए भी भूत, भविष्य, और वर्तमान के नाना कर्मों के व्यर्थ संकल्प-विकल्प हृदय में प्रकट होने लग जाते हैं। मन की एकाग्रता न रहने के कारण नवीन कार्य करने में असमर्थता होती है, परन्तु जप-ध्यान और सद्गुण-सदाचार प्रद श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का पठन करने से पिछले प्रमाद संकल्प-विकल्प शान्त होकर हृदय में शान्ति, आनन्द, प्रेम-प्रसन्नता तथा शरीर में फुरती एवं उत्साह बना रहता है और मन की एकाग्रता के प्रभाव से बुद्धि भी कुशलता पूर्वक कार्य करती है।

ध्यानमग्न प्रेमियों को श्री आनन्दमय प्रभु की न्यायकारिता का प्रत्यक्षवत् पद-पद पर अनुभव होता रहता है कि प्रत्येक मानव को श्री आनन्दमय प्रभु कैसे सुख, शान्ति, आनन्द, शक्ति व उत्तम ज्ञान, एवं प्रेम-प्रसन्नता, समता, सन्तोष आदि गुण प्रदान करते हैं और किस-किस प्रकार अहंता, ममता, आसक्ति, कामना युक्त चिन्ता, क्रोध, भय और रुदन आदि मानसिक रोगों द्वारा दण्ड देते हैं। इस ज्ञान से हमारे हृदय में राग-द्वेष, स्वार्थ, अहंकार मूलक द्वन्द्व न होकर समता रहती है।

हे श्री प्रेमी ! जिनके हृदय में समता-सन्तोष है, उनको श्री आनन्दमय प्रभु अमृतपान कराते हैं और

जिनके हृदय में चिन्ता-क्रोध है उनको श्री दण्डदायक प्रभु विपरीत ज्ञान देकर विषपान कराते रहते हैं।

जैसे बाहिरी शरीर के आहार—अन्न-जल के ग्रहण एवं त्याग करने की विधि है; ऐसे ही अन्तःशरीर के लिए भी सद्गुणों को ग्रहण तथा दुर्गुणों अर्थात् मानसिक रोगों का त्याग करने की शिक्षा श्री ध्यान-समाधिमग्न अनुभवी वैद्यराज से प्राप्त करने की परमावश्यकता है अन्यथा दिमाग परेशान रहेगा।

देश सेवा अधिकारी मानव को प्रत्येक प्रतिकूलता में अपने दिमाग को सम, शान्त व प्रसन्न रखने की सामर्थ्य को प्राप्त करने की परम आवश्यकता है अन्यथा ध्यान-समाधि रहित मनुष्यों द्वारा की हुई सेवा बालू-मिट्टी के महलों के सदृश कार्य करती है।

जैसे स्थूल शरीर के रोगों की निवृत्ति के लिए चिकित्सक औषध एवं पथ्य-परहेज की आवश्यकता है, ऐसे ही मानसिक रोगों की निवृत्ति के लिए भी श्री मानसिक वैद्यराज के आदेशानुसार जप, ध्यान, प्रार्थना, स्वाध्याय और श्री ध्यानमग्न सज्जनों का संग-सेवा कर सद्गुणों को धारण करने की परमावश्यकता है।

हमारे तीन शरीर हैं—स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल शरीर का आहार है अन्न-जल, सूक्ष्म का जप-ध्यान और कारण का निद्रा। इन तीनों शरीरों को अपना-

अपना आहार विधि पूर्वक देने से सम्पूर्ण शक्ति-ज्ञान ठीक रहता है।

ध्यान-समाधि रहित मानव सामाजिक प्रतिकूलताओं से विषम अर्थात् उद्विग्न हो जाते हैं; परन्तु जप-ध्यान का अभ्यास करने से समाज का कार्य पक्षपात रहित, धन सम्पत्ति पर अहंता-ममता के त्यागपूर्वक, श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के आदेशानुसार होता है तथा भोजन-वस्त्र आदि की सादगी रहती है। हम लोग प्रायः छः घन्टे शयन, छः घन्टे जप-ध्यान, प्रार्थना, स्वाध्याय, सत्संग, चार-पाँच घन्टा शौच, स्नान, व्यायाम, भ्रमण आदि शारीरिक कर्म करते हैं और प्रायः आठ घण्टा पर-शरीरों की सेवा करते हुए समाज-सुधार का कार्य प्रेम एवं उत्साह-पूर्वक करते हैं।

जब तक आप ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मन्त्र का जप आरम्भ नहीं करते तब तक आपका ध्यान नहीं लग सकता; बिना जप-ध्यान किए श्री महापुरुष देव से क्या लाभ होता है, यह भी आपकी समझ में आना असम्भव है।

मानव मात्र के अन्दर श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का रक्खा हुआ आनन्द शक्ति दायक गुणों का और विशुद्ध ज्ञान का कोष है, किन्तु हमें प्राप्त नहीं हो रहा था, उस अलमारी की चाबी श्री महापुरुष देव से प्राप्त की है।

श्री भगवत् आनन्द और ज्ञान शक्ति के आश्रय से हम लोग आजीवन समाज-सुधार-सेवा-कार्य करने को तैयार हैं तथा जो भी श्री श्रद्धालु प्रेमी हमारा संग करते हैं और करेंगे वह भी तन, मन, धन एवं ज्ञान-शक्ति से समाज को पूर्ण सहयोग देंगे। हम लोग समाज की सेवा करने के लिए ही श्री आनन्दमय प्रभु से ज्ञान, शक्तिदायक गुण प्राप्त कर रहे हैं।

हे श्री प्रेमी ! श्री ध्यान-समाधि रहित मनुष्यों के राजसी-तामसी हृदयों का ज्ञान सूर्य के सन्मुख नक्षत्रों की चम-चमाहट मात्र है। ध्यान-समाधि रहित कामी-क्रोधी मनुष्यों के मुखारविन्द के शब्द जाली सिक्के हैं। जैसे ध्यान-समाधि रहित संस्कृत भाषा के अभिमानी वेदवक्ता काम-क्रोध परायण रावण ने अपने सहित अपने कुल का क्या किया? पिता धृतराष्ट्र, माता गान्धारी अपनी ही कामी-क्रोधी सन्तानों द्वारा आजीवन उबलते रहे। अस्त्र-शस्त्र धारी जर्मन-जापान के राजाओं ने क्या किया ? धनबल-जनबल के अभिमानी भारत के राजा रंक हुए इत्यादि अनेकों प्रमाण हैं।

अब वह सात्त्विक मर्यादा भी निकट आ रही है जब कि एक पैसे, एक इंच भूमि व एक मानव शरीर पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं रहेगा।

क्या इन्द्रियों द्वारा भोग आनन्द से आज तक कोई

भी मनुष्य स्थायी सुख, शान्ति युक्त आनन्द-शक्ति को प्राप्त हुआ ? अपितु, 'परिणामे विषमिव' ही होता है। अतः ध्यान-समाधि-आनन्द से रहित मनुष्यों के वचन अर्थात् उन्नतियों का ज्ञान आजीवन चिन्ता, क्रोध, भय और रुदन दायक ही होता है। यही श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का बन्दीगृह—जेल है।

ध्यान का प्रभाव

ध्यान सिन्धु मुक्ता घने, जो खोजे सो पाय।
चंचलता मन की मिटे, सहज शान्ति मिल जाय॥
ध्यान बिना नहीं भक्ति है, ध्यान बिना नहीं ज्ञान।
ध्यान बिना शान्ति कहाँ, कहते श्री भगवान्॥
विधि ध्यान की यों करो, जैसे लोभी दाम।
कहे आनन्द बिसरे नहीं, पल पल लेत संभाल॥
ध्यान सिद्धि को यों करो, जैसे कामी काम।
एक पल बिसरे नहीं, निशदिन आठों याम॥
ध्यान भगवत् प्रेमी करें, पावें परमानन्द।
ध्यान बिना जो सुख चाहें, वे नर हैं मतिमन्द॥
सिमरत सुरत लगाय के, मुख से कछु न बोल।
बाहर के पट देय कर, अन्दर के पट खोल॥
आँख, कान, मुख, मूँद कर, तुरत आनन्द लखाय।
आनन्दमय के सुमरन से, आनन्दमय हो जाय॥

ॐ आनन्दमय

श्री प्रभु मर्यादा का फल—ध्यान

प्रश्न—भगवन्! सुनते हैं कि ध्यान तो एकान्त में लगता है, किन्तु जब हम लोग मानसिक अग्नि को शान्त करने की अभिलाषा से जप-ध्यान करने बैठते हैं तो दिमाग में भूत, भविष्य, वर्तमान के अनन्त संकल्प-विकल्प प्रकट होने से मन परेशान होकर नेत्रों को खुला देता है और हमारा शरीर भी सम शान्त न रह कर प्रायः डगमगाता रहता है अथवा नींद घेर लेती है। परन्तु ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जप करने वाले बालक-वृद्ध युवक-युवतियां अर्थात् वर्तमान के छात्र-छात्राएं भी कई घन्टों मूर्तिवत् ध्यानावस्थित हो जाते हैं। इस कार्य में दम्भ व हठ होना तो असम्भव है। कृपया इस विषय पर कुछ प्रकाश डालिए?

उत्तर—हे श्री प्रेमी! मनुष्य का हृदय जड़ है, उस जड़ मन-बुद्धि के प्रेरक चेतनस्वरूप ज्ञानस्वरूप श्री न्याय-कारी आनन्दमय प्रभु हैं। श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का न्याय विधान है कि जो मनुष्य श्री भगवत् प्रतिकूल चलने वाले कामी-क्रोधी मनुष्यों के संग-सेवा में रत रहता है अर्थात् श्री भगवत् द्रोहियों के दुर्गुण-दुराचार प्रद आदर्श व आदेशों में ही श्रद्धा रखता है, उन राजसी-तामसी

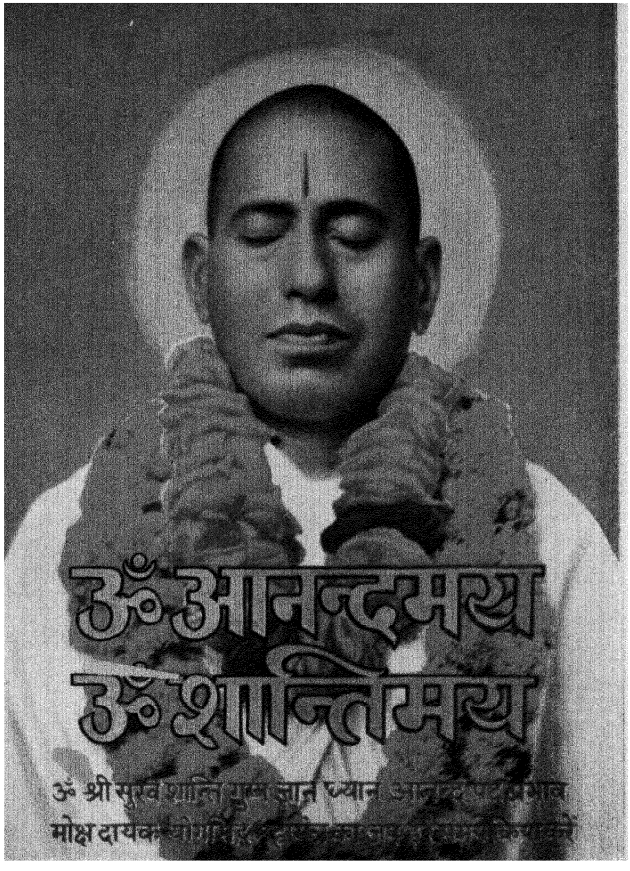
ॐ आनन्दमय
ॐ शान्तिमय

मनुष्यों के हृदय को भी श्री प्रभु मानसिक अग्नियों द्वारा तपायमान रखते हैं। इसी का नाम है दिमागी अशान्ति।

जैसे श्री सरकार किसी सरकार द्रोही को सरकारी पद पर नियुक्त नहीं होने देती वैसे ही हृदय में विराजमान श्री प्रभु जी अपनी मर्यादा भंग करने वालों को हठ पूर्वक नेत्र बंद करके योग आसन से एक घंटा भी शान्ति पूर्वक नहीं बैठने देते।

ध्यान जनित आत्मिक आनन्द शान्तियुक्त शक्ति की प्रप्ति के लिए आपको श्री ध्यानमग्न मानव के सद्गुण-सदाचार प्रद ज्ञान को धारण करना होगा अन्यथा ध्यान रहित मनुष्यों के संग-सेवा और आज्ञापालन से आपके हृदय में श्री दण्डदायक प्रभु मानसिक अग्नि प्रज्वलित रक्खेंगे।

हे श्री प्रेमी! श्री विश्वशान्ति आश्रम के गुण-ज्ञान को धारण करने से मन एकाग्र, बुद्धि स्थिर-शान्त-ध्यान-मग्न हो जाती है। जैसे निद्रा एकान्त में अथवा समय पर ढोल, नगारे, बाजे बजने पर भी आ जाती है, ऐसे ही श्री महापुरुष देव के प्रेम-प्रभाव से ध्यान जनित आनन्द-शान्ति भी एकान्त में अथवा लोकान्त में प्राप्त हो जाती है।

जो कोई भी देवी-पुरुष व बालक जिस दिन से श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित श्री भगवत् मर्यादा पालन करना स्वीकार करेगा उस दिन से ही उसका मन सदा-

सर्वदा शान्त और आनन्द में मग्न रहना प्रारम्भ हो जायगा और कैसा ही देश काल क्यों न हो, वह जब चाहे खड़े व बैठे ध्यानमग्न हो जायगा ।

कारण शरीर का आहार—निद्रा की शान्ति तो ॐ श्री परम दयालु प्रभु अपने महाद्रोही को भी प्रदान करते हैं, किन्तु अन्तः शरीर के अमृत आहार—ध्यान का आनन्द तो श्री प्रभु अपनी मर्यादा को पालन करने वाले अपने प्रेमियों को ही प्रदान करते हैं । आप श्री योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामन्त्र का जप तथा श्री भगवत् मर्यादा के ज्ञान से पूर्ण श्री विश्वशान्ति ज्ञानग्रन्थ का नित्य स्वाध्याय करिए और श्री महापुरुष देव के सन्मुख अथवा श्री ध्यानमग्न साधक के सन्मुख ध्यानानन्द की इच्छा से विधि-पूर्वक एक दो घन्टा पांच-सात दिन बैठिए, आप भी ध्यानमग्न हो जायँगे । आपके हृदय से ही आनन्द-शान्ति दायक उत्तम-उत्तम ज्ञान प्रकट होगा और भी विभिन्न प्रकार का अनुभव होगा जो वाणी लेखनी से प्रकट नहीं हो सकता, क्योंकि यह भगवत्-आनन्द अनुभवगत् अनिर्वचनीय है ।

सत्त्वगुणों के लक्षणों में ध्यान प्रधान लक्षण है । श्री प्रभु मर्यादा को पालन करनेवाले मानव को श्री प्रभु ध्यान गुण प्रदान करते हैं ! श्री प्रभु प्रेमी का प्रमाण पत्र ध्यान है, परन्तु याद रक्खें ! प्राण वायु को रोककर जमीन के

गड्ढे की जड़ समाधि सात्त्विक गुण, ज्ञान, आनन्द-शान्ति रहित, श्री प्रभु अमान्य मिथ्या आचरण है। गड्ढे की जड़ समाधि लगाने वाले धन-मान के लोभी उस व्यक्ति का शरीर अति दुर्बल हो जाने के कारण महीनों तक चिकित्सा होती है, और कोई-कोई मनुष्य तो गड्ढे में ही मृत्यु के शिकार बन जाते हैं। इस दम्भाचरण के कारण ध्यान-समाधि के तत्त्व से अनभिज्ञ भोली जनता को असल-नकल ध्यान-समाधि में भ्रम हो जाता है, जिससे विश्व में महती हानि हो रही है। परन्तु क्या किया जाय, धन का लोभी मनुष्य क्या-क्या नहीं करता है*।

श्री भगवत् द्रोही का प्रमाण पत्र क्या है ?—मन इन्द्रियों में विषय भोगों की लालसा व कामनाओं द्वारा दिमागी अशान्ति, हृदय में पागल के सदृश विपरीत ज्ञान तथा चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन, ईर्षा-द्वेष इत्यादि मानसिक रोगों की वृद्धि। प्राचीन प्रमाण के लिए विस्तार ज्ञान श्री गीता में राजसी-तामसी नामक श्लोकों में वर्णित है।

स्मृति रहे ! श्री गीता के तामसी नामक श्लोकों में वर्णित लक्षणों का अर्थ श्री प्रभु का **कालापानी** है और

* प्राणायाम (रेचक, कुम्भक, पूरक) नासिका के छिद्रों को खोलने तथा फेफड़ों की अशुद्ध वायु को शुद्धि के लिए प्रातः सांय दोनों समय दो-चार मिनट करना आवश्यक है किन्तु श्वास को हठ पूर्वक रोकने का प्रयत्न शरीर विधान कर्ता के विरुद्ध होने से सर्वथा हानिकारक है।

राजसी नामक श्लोकों में वर्णित लक्षणों का अर्थ श्री विश्वपिता की **जेल** है तथा सात्त्विक नामक श्लोकों में वर्णित लक्षणों का अर्थ श्री विश्वपिता का **पद** है एवं गुणातीत व समाधिस्थ नामक श्लोकों में वर्णित लक्षणों का अर्थ श्री प्रभु का **युवराज** पद है।

यदि आपके मन की एकाग्रता नहीं अर्थात् ध्यान नहीं लगा तो समझ लें कि मेरा धार्मिक गुण, ज्ञान, भाव, आचरण सात्त्विक नहीं है केवल बनावटी धर्मों का मनोरंजन व अहंकार मात्र है। यदि हृदय में चिन्ता, क्रोध, ईर्षा आदि की अग्नि प्रज्वलित है तो समझें कि अति दुर्लभ मानव शरीर व्यर्थ ही नहीं बिताया अपितु युवराज पद दायक परम दयालु श्री आनन्दमय प्रभु की जेल में निवास किया है। "गई सो गई राखो रही को"।

हे श्री प्रेमी ! धर्म का पालन करने तथा मन्त्र जपने से प्रत्यक्ष आनन्द-शान्ति की प्राप्ति न होने का विस्तार ज्ञान "श्री योगसिद्ध महामंत्र का प्रभाव" और "श्री मंत्र विद्या का रहस्य" नामक लेखों में पढ़ें।

ॐ आनन्दमय

श्री योगसिद्ध महामन्त्र का प्रभाव

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का अर्थ और भावना

ॐ आनन्दमय	ॐ शान्तिमय
(१) श्री परमात्मा देव आनन्दमय !	(१) श्री परमात्मा देव शान्तिमय !
(२) श्री महापुरुष देव आनन्दमय !	(२) श्री महापुरुष देव शान्तिमय !
(३) मैं आनन्दमय !	(३) मैं शान्तिमय !
(४) सब आनन्दमय !	(४) सब शान्तिमय !

ॐ आनन्दमय मंत्र के अर्थ और भावनाओं की व्याख्या निम्नलिखित है ।

(१) **श्री परमात्मा देव आनन्दमय**—श्री विश्वपिता आनन्द-मय प्रभु निराकार रूप से सर्वत्र और आनन्द के समुद्र हैं अतः ॐ आनन्दमय मंत्र का जप करते हुए अपने को ऐसा माने कि मैं आनन्द के समुद्र में निवास करता हूँ । ऐसी भावना का अभ्यास करते रहने से अपने में आनन्द की वृद्धि होती रहेगी ।

(२) **श्री महापुरुष देव आनन्दमय**—साकार रूपों में श्री महापुरुष देव ही आनन्दस्वरूप हैं अतः मन से

ॐ आनन्दमय मंत्र जप के मनन के साथ-साथ बुद्धि से श्री महापुरुष देव के श्री विग्रह को स्मरण अर्थात् याद करते रहने से अपने अन्दर आनन्द का प्रादुर्भाव होता रहेगा और क्रमशः अखण्ड आनन्द की प्राप्ति हो जायेगी।

(३) **मैं आनन्दमय**—श्री आनन्दमय प्रभु का पुत्र होने के नाते मैं भी आनन्दमय ही हूँ। अतः इस प्रकार ॐ आनन्दमय महामंत्र का जप करते हुए अपने को "आनन्दमय" की भावना देते रहने से आप आनन्दमय ही हो जायेंगे।

(४) **सब आनन्दमय**—सभी रूपों में श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु आत्मरूप से विराजमान हैं अतः ॐ आनन्दमय महामंत्र का जप करते हुए ऐसा माने की सब ही आनन्दमय हैं। दुःख, शोक, अज्ञान तो लीलामात्र है। मधुमक्खी जैसे मीठे रस को ही ग्रहण करती है, कड़वे, खट्टे नमकीन आदि रसों को नहीं; इसी प्रकार अपने ज्ञान से यावनमात्र जड़-चेतनादि पदार्थों में "आनन्दमय" की भावना करने का अभ्यास करें। जिससे अन्य के दुर्गुण-दुराचार रूपी मानसिक रोगों के विषैले कीटाणु आप में नहीं आ सकेंगे, केवल आनन्दरूपी अमृतरस ही आता रहेगा।

ॐ शान्तिमय मंत्र के अर्थ और भावनाओं की व्याख्या निम्नलिखित है।

(१) **श्री परमात्मादेव शान्तिमय**—श्री विश्वपिता शान्तिमय प्रभु ही निराकार रूप से सर्वत्र और शान्ति के समुद्र हैं अतः ॐ शान्तिमय मंत्र का जप करते हुए अपने को ऐसा माने कि मैं सदा-सर्वदा शान्तिमय समुद्र में ही निवास करता हूँ। ऐसी भावना का अभ्यास करते रहने से अपने में शान्ति की वृद्धि होती रहेगी।

(२) **श्री महापुरुष देव शान्तिमय**—सम्पूर्ण साकार रूपों में श्री महापुरुष देव साक्षात् शान्तिस्वरूप हैं। अतः ॐ शान्तिमय मंत्र का मनन करते हुए मन-बुद्धि से श्री समाधिमग्न श्री विग्रह को याद करते रहने से अपने अन्दर शान्ति का प्रादुर्भाव होता रहेगा और क्रमशः पूर्ण शान्ति की प्राप्ति हो जायगी।

(३) **मैं शान्तिमय**—श्री शान्तिमय प्रभु पिता का पुत्र होने के नाते मैं भी शान्तिमय ही हूँ। अतः इस प्रकार ॐ शान्तिमय मंत्र का जप करते हुए अपने को शान्तिमय मानने का अभ्यास करें आप शान्तिमय हो जायेंगे।

(४) **सब शान्तिमय**—सभी शरीरों में एकमात्र श्री शान्तिमय प्रभु ही विराजमान हैं अतः ॐ शान्तिमय मंत्र

का जप करते हुए ऐसा माने कि सब ही शान्तिमय हैं। मीठे रस को लेने वाली मधुमक्खी के सदृश सब रूपों में शान्ति दर्शन करने का अभ्यास करें, आप में शान्ति रस आता रहेगा।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामन्त्र का जप करते हुए उपरोक्त प्रकार से सात्त्विक ज्ञान की स्मृति का अभ्यास और पूर्व के कनिष्ट ज्ञान की स्मृति का वैराग्य हृदय में जाग्रत रखने से श्री भगवत्-आनन्द शान्ति की वृद्धि होती रहेगी।

प्रश्न—हे भगवन्! आप 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' मंत्र का ही जप क्यों बतलाते हैं?

उत्तर—हे श्री प्रेमी! श्री मंत्र एवं श्री भगवत् विषयक ज्ञान भगवत् आनन्द शक्ति सम्पन्न सन्तोषी समतावान समाधिमग्न महापुरुषों के ही मुखार्विन्द से श्रवण करने का विधान है अन्यथा ध्यानानन्द-शान्ति रहित कामना-क्रोध से तपायमान अशान्तिमानों के दर्शन-श्रवण से मनुष्य चिन्ता-क्रोधयुक्त मानसिक रोगी ही बनता जाता है।

हे श्री प्रेमी! आत्मिक ज्ञान और आनन्द शान्तियुक्त, ध्यान-समाधिदायक, योगसिद्ध, वैदिक, सनातन, ब्रह्मवाची, महावाक्य ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय श्री महापुरुषों के आनन्दसम्पन्न हृदय कमल से प्रकट हुआ है। यह दिव्य

महामन्त्र परम फलदायक मनुष्य के सच्चे भाग्य को उदय करने वाला है। इस युगल मन्त्र का निरन्तर जप करने से अशान्तिदायक सम्पूर्ण दुःखों का नाश होता है। चलते-फिरते, खाते-पीते, शारीरिक, सामाजिक एवं आजीविकार्थ सम्पूर्ण कर्म करते हुए हर समय इस परम पवित्र नाम का जप करने से प्रतिदिन परम आनन्द शान्ति प्राप्त होती है और मनुष्य ॐ आनन्दमय प्रभु की कृपा का पात्र बन जाता है।

विविध प्रकार के विघ्नकारक दोष इस पावन नाम का उच्चारण करते रहने से नष्ट हो जाते हैं। यह परम प्रभावशाली राजमंत्र प्रकृति संघर्षण रूपी युद्ध में विजय देने वाला है। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का आश्रय लेने से दुर्गुण-दुराचारों का दिन-प्रतिदिन नाश होकर सद्गुण-सदाचारों की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है। यह सर्वोत्तम मंत्र दुःख, चिन्ता, भय, कामना, क्रोध, लोभ, ईर्षा, द्वेष आदि मानसिक रोगों की परम ओषधि है और युक्तियों से समाधान करें जैसे—

(१) काठ को काठ नहीं जला सकता किन्तु किंचित जला हुआ काठ भयानक जंगल को भस्म करने में समर्थ है, ऐसे ही श्री महापुरुष देव का स्वानुष्ठानयुक्त योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र सम्पूर्ण अशान्तिदायक दुःखों को भस्म करने में समर्थ है। यह केवल मेरा ही नहीं, हजारों प्रेमियों का प्रत्यक्ष अनुभव है।

(२) जैसे मिट्टी से वस्त्र साफ नहीं होता किन्तु शुद्ध सोडा सज्जी मिट्टी वस्त्रों को शुद्ध कर देती है, ऐसे ही ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय विशुद्ध महामंत्र अन्तःकरण को अतिशीघ्र शुद्ध कर देता है, किन्तु ध्यान आनन्द रहित कामी-क्रोधी गुरुओं के मंत्र वर्षों भर रटने से भी लाभ नहीं होता।

(३) हे श्री प्रेमी ! लोहे को लोहा नहीं काट सकता किन्तु लोहे की आरी घन लोहे को काट कर खण्ड-खण्ड करने में समर्थ है। ऐसे ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्री महापुरुष देव का 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' समाधियोग द्वारा सिद्ध महामंत्र मन के राजसी-तामसी संकल्प काटने में समर्थ है। इसे हर समय रटन कर अनुभव करिए, प्रथम महीने में ही आपके हृदय में आनन्द शान्ति व प्रेम-प्रसन्नता की वृद्धि होगी।

(४) हे श्री प्रेमी ! तोप का गोला शक्तिशाली तोप के मुख से ही अपना प्रभाव दिखाता है हाथ से नहीं, ऐसे ही पूर्ण निष्ठावान् श्री समाधिस्थ महापुरुष देव के मुखारविन्द के योगसिद्ध मन्त्र तथा ज्ञान से ही तमोगुण-रजोगुण का नाश होकर आनन्द-शक्तिदायक सत्त्वगुण की प्राप्ति होती है, समाधि रहित गुरुओं के मन्त्र एवं ज्ञान से नहीं। क्या ध्यान आनन्द-शान्ति रहित गुरुओं के संग, सेवा, भक्ति से किसी का ध्यान लगा अथवा चिन्ता-क्रोधादि मानसिक

रोग शान्त हुए ? यदि नहीं तो वह मंत्र जाली सिक्का है।

(५) हे श्री प्रेमी ! जो अध्यापक स्वयं शिक्षा-रहित है वह दूसरों को कैसे पढ़ा सकता है ? ऐसे ही केवल शास्त्र कंठस्थ करने वाले, स्वयं तमोगुण-रजोगुण के आचरणयुक्त, धन, मान, भोगों में ही श्रद्धा रखने वाले नाममात्र के उपदेशकों के मन्त्र तथा उपदेश से किंचित भी मन की एकाग्रता रूप आनन्द शान्ति दायक ध्यान का लाभ नहीं होता, किन्तु ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय योग-सिद्धि महामन्त्र के जप तथा मानसिक चिकित्सा के ज्ञान से पूर्ण श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के पठन से अनेकों परिवार प्रत्यक्ष ध्यानमग्न हो रहे हैं। जिनके अनुभवों का श्री ग्रन्थ पुनः प्रकाशित होने वाला है।

'राजा की कलम, और महात्मा का वचन'

पदाधीश की कलम से तो कुछ समय तक और अपने ही जिले प्रान्त में कार्य सिद्ध होता है किन्तु श्री प्रभु युवराज पद प्राप्त समाधिमग्न समतावान् महापुरुषों का मन्त्र एवं श्री भगवत् मर्यादा का ज्ञान आजीवन सुख, शान्ति, आनन्द, शक्ति और गुण, ज्ञान प्रदान करता रहता है।

विशेष जानकारी तथा श्रद्धा-विश्वास के लिए श्री गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित श्री ग्रंथों में पढ़ें :—

(क) श्री गीता तत्त्वविवेचनी अ० ५/१७ पृष्ठ २३५ तथा अ० ६/२० पृष्ठ २७१ ।

(ख) मनुष्य जीवन की सफलता—पृष्ठ ३४३ से ३५१ 'परमात्मा के आनन्दमय स्वरूप का ध्यान' ।

(ग) श्री तत्त्वचिन्तामणि भाग १ पृष्ठ ५८, १८८; भाग ५ पृष्ठ ३८४; भाग ६ पृष्ठ ४४१ में देखें ।

(घ) प्राचीन प्रमाण के लिए वेदान्त-दर्शन (ब्रह्मसूत्र) भाष्य० (गीता प्रेस) अ० १।१।१२ से १९ तक की व्याख्या तो निम्नलिखित है और अ० ३।३। १४ से १८ एवं पृष्ठ २५६, २५७ पर श्री वेदान्त-दर्शन (ब्रह्मसूत्र) ग्रन्थ में ही देखें ।

तैत्तिरीयोपनिषद्र की ब्रह्मानन्दवल्ली में सृष्टि की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए सर्वात्मस्वरूप परब्रह्म परमेश्वर से ही आकाश आदि के क्रम से सृष्टि बतायी गयी है । (अनु० १,६,७) । उसी प्रसंग में अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय इन पाँचों का वर्णन आया है । वहाँ क्रमशः अन्नमय का प्राणमय को, प्राणमय का मनोमय को, मनोमय का विज्ञानमय को और विज्ञान-मय का आनन्दमय को अन्तरात्मा बताया गया है । आनन्द-मय का अन्तरात्मा दूसरे किसी को नहीं बताया गया है, अपितु उसी से जगत् की उत्पत्ति बताकर आनन्द की महिमा का वर्णन करते हुए सर्वात्मा आनन्दमय को जानने

का फल उसी की प्राप्ति बताया गया और वहीं ब्रह्मानन्द-वल्ली को समाप्त कर दिया गया है।

यहाँ यह प्रश्न उठता है कि उस प्रकरण में आनन्द-मय नाम से किसका वर्णन हुआ है, परमेश्वर का ? या जीवात्मा का ? अथवा अन्य किसीका ? इस पर कहते हैं—

आनन्दमयोऽभ्यासात् ॥ १ । १ । १२ ॥

अभ्यासात् = श्रुति में बारंबार 'आनन्द' शब्द का ब्रह्म के लिये प्रयोग होने के कारण; **आनन्दमयः** = 'आनन्द-मय' शब्द (यहाँ परब्रह्म परमेश्वर का ही वाचक है)।

व्याख्या—किसी बात को दृढ़ करने के लिये बारं-बार दुहराने को 'अभ्यास' कहते हैं। तैत्तिरीय तथा बृहदारण्यक आदि अनेक उपनिषदों में 'आनन्द' शब्द का ब्रह्म के अर्थ में बारंबार प्रयोग हुआ है ; जैसे तैत्तिरीयोपनिषद् की ब्रह्मवल्ली के छठे अनुवाक में 'आनन्दमय' का वर्णन आरम्भ करके सातवें अनुवाक में उसके लिये 'रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्धवाऽऽनन्दी भवति। को ह्येवान्यात् कः प्राण्याद् यदेष आकाश आनन्दो न स्यात्। एष ह्येवानन्द-याति' (२/७) अर्थात् 'वह आनन्दमय ही रस स्वरूप है, यह जीवात्मा इस रस स्वरूप परमात्मा को पाकर आनन्द युक्त हो जाता है। यदि वह आकाश की भाँति परिपूर्ण आनन्दस्वरूप परमात्मा नहीं होता तो कौन जीवित रह

सकता, कौन प्राणों की क्रिया कर सकता ! सचमुच यह परमात्मा ही सबको आनन्द प्रदान करता है ।' ऐसा कहा गया है । तथा 'सैषाऽऽनन्दस्य मीमाँसा भवति,' 'एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रामति ।' (तै० उ० २/८) 'आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन ।' (तै० उ० २/९) 'आनन्दो ब्रह्मेति व्याजानात्' (तै० उ० ३/६) 'विज्ञानमानन्दं ब्रह्म' (बृह० उ० ३/९/२८)—इत्यादि प्रकार से श्रुतियों में जगह-जगह परब्रह्मके अर्थ में 'आनन्द' एवं 'आनन्दमय' शब्द का प्रयोग हुआ है । इसलिये आनन्दमय नाम से यहाँ उस सर्वशक्तिमान्, समस्त जगत् के परम कारण, सर्वनियन्ता, सर्वव्यापी, सबके आत्मस्वरूप परब्रह्म परमेश्वर का ही वर्णन है, अन्य किसी का नहीं ।

सम्बन्ध—यहाँ यह शंका होती है कि 'आनन्दमय' शब्द में जो 'मयट्' प्रत्यय है, वह विकार अर्थ का बोधक है और परब्रह्म परमात्मा निर्विकार है । अतः जिस प्रकार अन्नमय आदि शब्द ब्रह्म के वाचक नहीं हैं, वैसे ही, उन्हीं के साथ आया हुआ यह 'आनन्दमय' शब्द भी परब्रह्म का वाचक नहीं होना चाहिये । इस पर कहते हैं—

विकारशब्दान्नेति चेन्न प्राचुर्यात् ॥ १ । १ । १३ ॥

चेत्=यदि कहो; **विकारशब्दात्**=मयट् प्रत्यय विकार बोधक होने से; **न**=आनन्दमय शब्द ब्रह्म का वाचक नहीं

हो सकता; **इति**=तो यह कथन; **न**=ठीक नहीं है, **प्राचुर्यात्**=क्योंकि 'मयट्' प्रत्यय यहाँ प्रचुरता का बोधक है (विकार का नहीं)।

व्याख्या—'तत्प्रकृतवचने मयट्' (पा० सू० ५।४।२१) इस पाणिनीसूत्र के अनुसार प्रचुरता के अर्थ में भी 'मयट्' प्रत्यय होता है; अतः यहाँ 'आनन्दमय' शब्द में जो 'मयट्' प्रत्यय है, वह विकार का नहीं, प्रचुरता-अर्थ का ही बोधक है अर्थात् वह ब्रह्म आनन्दघन है, इसी का द्योतक है। इसलिए यह कहना ठीक नहीं है कि 'आनन्दमय' शब्द ब्रह्म का वाचक नहीं हो सकता। परब्रह्म परमेश्वर आनन्दघनस्वरूप है, इसलिए उसे 'आनन्दमय' कहना सर्वथा उचित है।

सम्बन्ध—यहाँ यह जिज्ञासा होती है कि जब 'मयट्' प्रत्यय विकार का बोधक भी होता है, तब यहाँ उसे प्रचुरता का ही बोधक क्यों माना जाय ? विकारबोधक क्यों न मान लिया जाय ? इस पर कहते हैं —

तद्धेतुव्यपदेशाच्च ॥ १ । १ । १४ ॥

तद्धेतुव्यपदेशात्=(उपनिषदों में ब्रह्म को) उस आनन्द का हेतु बताया गया है, इसलिए; **च**=भी (यहाँ मयट् प्रत्यय विकार-अर्थ का बोधक नहीं है)।

व्याख्या—पूर्वोक्त प्रकरण में आनन्दमय को आनन्द

प्रदान करने वाला बताया गया है (तै० उ० २/७)। जो सबको आनन्द प्रदान करता है, वह स्वयं आनन्दघन है, इसमें तो कहना ही क्या है; क्योंकि जो अखंड आनन्द का भंडार होगा, वही सदा सबको आनन्द प्रदान कर सकेगा। इसलिये यहाँ मयट् प्रत्यय को विकार का बोधक न मानकर प्रचुरता का बोधक मानना ही ठीक है।

सम्बन्ध—केवल मयट् प्रत्यय प्रचुरता का बोधक होने से ही यहाँ 'आनन्दमय' शब्द ब्रह्म का वाचक है, इतना ही नहीं, किन्तु—

मान्त्रवर्णिकमेव च गीयते ॥ १ । १ । १५ ॥

च = तथा; **मान्त्रवर्णिकम्** = मन्त्राक्षरों में जिसका वर्णन किया गया है, उस ब्रह्म का, **एव** = ही; **गीयते** = (यहाँ) प्रतिपादन किया जाता है (इसलिये भी आनन्दमय ब्रह्म ही है)।

व्याख्या—तैत्तिरीयोपनिषद् की ब्रह्मानन्दवल्ली के आरम्भ में जो यह मंत्र आया है कि—'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्। सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता।' अर्थात् 'ब्रह्म सत्य, ज्ञानस्वरूप और अनन्त है। वह ब्रह्म विशुद्ध आकाशस्वरूप परम धाम में रहते हुए ही सब के हृदयरूप गुफा में छिपा हुआ है। जो उसको

जानता है, वह सबको भली-भाँति जानने वाले ब्रह्म के साथ समस्त भोगों का अनुभव करता है।' इस मंत्र द्वारा वर्णित ब्रह्म को यहाँ 'मान्त्रवर्णिक' कहा गया है। जिस प्रकार उक्त मंत्र में उस परब्रह्म को सबका अन्तरात्मा बताया गया है, उसी प्रकार ब्राह्मण-ग्रंथ में 'आनन्दमय' को सबका अन्तरात्मा कहा है; इस प्रकार दोनों स्थलों की एकता के लिये यही मानना उचित है कि 'आनन्दमय' शब्द यहाँ ब्रह्म का ही वाचक है, अन्य किसी का नहीं।

सम्बन्ध—यदि 'आनन्दमय' शब्द को जीवात्मा का वाचक मान लिया जाय तो क्या हानि है? इस पर कहते हैं—

नेतरोऽनुपपत्तेः ॥ १ । १ । १६ ॥

इतरः = ब्रह्म से भिन्न जो जीवात्मा है, वह; **न** = आनन्दमय नहीं हो सकता; **अनुपपत्तेः** = क्योंकि पूर्वापर के वर्णन से यह बात सिद्ध नहीं होती।

व्याख्या—तैत्तिरीयोपनिषद् की ब्रह्मानन्दवल्ली में आनन्दमय का वर्णन करने के अनन्तर यह बात कही गयी है कि 'उस आनन्दमय परमात्मा ने यह इच्छा की कि मैं बहुत होऊँ; फिर उसने तप (सङ्कल्प) किया। तप करके इस समस्त जगत् की रचना की।' (तै० उ० २/६) यह कथन जीवात्मा के लिये उपयुक्त नहीं है; क्योंकि—

जीवात्मा अल्पज्ञ और परिमित शक्तिवाला है; जगत् की रचना आदि कार्य करने की उसमें सामर्थ्य नहीं है। अतः 'आनन्दमय' शब्द जीवात्माका वाचक नहीं हो सकता।

सम्बन्ध—यही बात सिद्ध करने के लिये दूसरा कारण बतलाते हैं—

भेदव्यपदेशाच्च ॥ १ । १ । १७ ॥

भेदव्यपदेशात् = जीवात्मा और परमात्मा को एक दूसरे से भिन्न बतलाया गया है, इसलिये; **च** = भी ('आनन्दमय' शब्द जीवात्मा का वाचक नहीं हो सकता)।

व्याख्या—उक्त वल्ली में आगे चलकर (सातवें अनुवाक में) कहा है कि 'यह जो ऊपर के वर्णन में 'सुकृत' नाम से कहा गया है, वही रसस्वरूप है। यह जीवात्मा इस रसस्वरूप परमात्मा को पाकर आनन्दयुक्त हो जाता है।' इस प्रकार यहाँ परमात्मा को आनन्ददाता और जीवात्मा को उसे पाकर आनन्दयुक्त होने वाला बताया गया है। इससे दोनों का भेद सिद्ध होता है इसीलिये भी 'आनन्दमय' शब्द जीवात्मा का वाचक नहीं है।

सम्बन्ध—आनन्द का हेतु जो सत्त्वगुण है, वह त्रिगुणात्मिका जड़ प्रकृति में भी विद्यमान है ही; अतः 'आनन्दमय' शब्द को प्रकृति का ही वाचक क्यों न मान लिया जाय? इस पर कहते हैं—

कामाच्च नानुमानापेक्षा ॥ १ । १ । १८ ॥

च = तथा; **कामात्** = ('आनन्दमय' में) कामना का कथन होने से; **अनुमानापेक्षा** = (यहाँ) अनुमान-कल्पित जड़ प्रकृति को 'आनन्दमय' शब्द से ग्रहण करने की आवश्यकता; **न** = नहीं है ।

व्याख्या—उपनिषद्में जहाँ 'आनन्दमय' का प्रसंग आया है, वहाँ 'सोऽकामयत' इस वाक्य के द्वारा आनन्दमय में सृष्टिविषयक कामना का होना बताया गया है, जो कि जड़ प्रकृति के लिए असंभव है । अतः उस प्रकरण में वर्णित 'आनन्दमय' शब्द से जड़ प्रकृति को ग्रहण नहीं किया जा सकता ।

सम्बन्ध—परब्रह्म परमात्मा के सिवा, प्रकृति या जीवात्मा कोई भी 'आनन्दमय' शब्दसे गृहीत नहीं हो सकता; इस बातको दृढ़ करते हुए प्रकरणका उपसंहार करते हैं—

अस्मिन्नस्य च तद्योगं शास्ति ॥ १ । १ । १९ ॥

च = इसके सिवा; **अस्मिन्** = इस प्रकरण में (श्रुति); **अस्य** = इस जीवात्माका; **तद्योगम्** = उस आनन्दमय से संयुक्त होना (मिल जाना); **शास्ति** = बतलाती है (इसलिये जड़ तत्त्व या जीवात्मा आनन्दमय नहीं है) ।

व्याख्या—तै० उ० (२ । ८) में श्रुति कहती है कि 'इस आनन्दमय परमात्मा के तत्त्व को इस प्रकार जानने वाला विद्वान् अन्नमयादि समस्त शरीरों के आत्मस्वरूप

आनन्दमय ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है।' बृहदारण्यक में भी श्रुति का कथन है कि '(ब्रह्म को जानने वाला पुरुष) ब्रह्मरूप होकर हीं ब्रह्म में लीन होता है' (बृह० उ० ४।४।६)। श्रुति के इन वचनों से यह स्वतः सिद्ध हो जाता है, कि जड़ प्रकृति या जीवात्मा को 'आनन्दमय' नहीं माना जा सकता; क्योंकि चेतन जीवात्मा का जड़ प्रकृति में अथवा अपने ही-जैसे परतन्त्र दूसरे किसी जीव में लय होना नहीं बन सकता। इसलिए एकमात्र परब्रह्म परमेश्वर ही 'आनन्दमय' शब्द का वाच्यार्थ है और वही सम्पूर्ण जगत का कारण है; दूसरा कोई नहीं।

श्री दिव्य महामन्त्र की महिमा

ॐ आनन्दमय तेरा नाम, ॐ शान्तिमय तेरा नाम ॥टेक॥
तेरा नाम तेरा ध्यान, चिन्तन करते जो निष्काम।
ॐ आनन्दमय जो कोई रटते, वे होते हैं पूर्ण काम ॥ १ ॥
मूल मन्त्र जो मानें इसको, वे पावेंगे पद निर्वाण।
ॐ शान्तिमय जो जपते वे, शान्ति शाश्वत पाते नाम ॥२॥
मन ही मन में जो इस जप को, रटते रहते आठों याम।
सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ मैं, उनको मिल जायँ भगवान् ॥३॥
अर्थ सहित जो जपते हैं वे, हो जायँगे आनन्दमय समान।
कहता हूँ कर जोर विनय से, "आनन्द" आनन्दमय
चरणरज जान ॥४॥

ॐ आनन्दमय

श्री मन्त्र विद्या का रहस्य

प्रश्न—भगवन् ! भारत में सभी सम्प्रदायों के भिन्न-भिन्न ग्रन्थ हैं उनमें अनेकों नाम मन्त्रों का जप तथा धर्माचरणों की विधियाँ एवं उनसे प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार के लाभ भी लिखे हैं। परन्तु बीसों वर्षों से मन्त्र जपने वाले भी चिन्तित, क्रोधित, भयातुर, चंचल और अनुकूलता-प्रतिकूलता में उद्विग्न होते हुए दुखी-अशान्त अर्थात् मानसिक रोगी देखे जाते हैं, इसका क्या कारण है ? तथा बहुत लोग प्राचीन श्री महापुरुषों द्वारा रचित उत्तम ग्रन्थों का स्वाध्याय करते हैं और उनमें बतलाए हुए अनेकों प्रकार के यज्ञ, दान, तप, व्रत, तीर्थ, पूजा आदि नियमों का अनुष्ठान भी करते व करवातें हैं; किन्तु ग्रन्थों के माहात्म्य अनुसार सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द का लाभ क्यों नहीं प्राप्त होता ? अपितु वह लोग भी ईर्षा, द्वेष, कलह-क्लेशयुक्त कपट विद्याओं में रत, कर्तव्य-विमूढ़, तथा शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक, बौद्धिक सब प्रकार के रोगों में ग्रसित क्यों हो रहे हैं ? भगवन् ! धर्मानुरागी श्रोता व वक्ता और धर्म के त्यागी सभी लोग चिन्ता-क्रोध परायण दुखी-अशान्त क्यों हो रहे हैं ?

उत्तर—हे श्री प्रेमी ! श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु एक हैं और वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, निराकार हैं इसलिए वास्तव में उनका नाम नहीं है। ग्रन्थों में जो हजारों नामों की व्याख्या है, वह श्री प्रभु प्रेमी भक्तों ने अपने-अपने प्रेम से ही की है। श्री प्रभु के दण्ड व पुरस्कार की मर्यादा का विधान भी अनादिकाल से एक ही है। श्री सन्तोषी समतावान समाधिमग्न आनन्द-शान्तिमान जीवित महात्मा या श्री परमात्मा के नाम का जप तथा स्वरूप की स्मृति रखते हुए इन्द्रियों के संयम युक्त श्री महापुरुष देव के आदेशानुसार संग-सेवा परायण होकर समस्त गुणों को धारण करने वाले मानव के सम्पूर्ण मानसिक रोग शान्त होते हैं। जिससे मनुष्य भगवत् युवराज स्वरूप आनन्दमय शान्तिमय बन जाता है। यह सिद्धान्त सर्वथा सत्य है परन्तु स्मृति रहे ! श्री भगवत् आनन्द-शान्ति सम्पन्न ध्यान-समाधिमग्न गुणवान श्री देव-देवाङ्गनाओं द्वारा ही श्री भगवत् विषयक शिक्षा प्राप्त करने का विधान है। वह जो श्री भगवन्नाम मंत्र तथा स्वरूप की स्मृति और जो सेवा-कार्य देश, काल, परिस्थिति अनुसार बतावें उसी से ही पूर्ण लाभ प्राप्त होने का न्याययुक्त विधान है अन्यथा जैसे उत्तम औषधियों से सम्पन्न चिकित्सालय के विद्यमान रहते हुए भी बिना ज्ञानवान चिकित्सक के हम शारीरिक निरोगता प्राप्त

नहीं कर सकते ऐसे ही मानसिक चिकित्सा के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए।

चिन्ता-क्रोधादि मानसिक रोगों की शान्ति और आनन्द शक्तियुक्त श्री विश्वपिता के युवराज पद की प्राप्ति रूप लाभ न होने में कई कारण हैं। जैसे—

(१) जिस व्यक्ति से मंत्र लिया हो सम्भव है कि वह ध्यान जनित आनन्द-शान्ति का अनुभवी न हो, गुण रहित केवल वाणी का ही वाचाल हो।

(२) जप जपने वालों ने स्वयं ही ग्रन्थों से पढ़ कर जप जपना आरम्भ कर दिया हो।

(३) श्री मंत्र जप करने वालों ने झूठ, कपट, चोरी, रिश्वत आदि से धन उपार्जन करने के स्वभाव का त्याग न किया हो।

(४) श्री प्रभु द्रोही चिन्तित-क्रोधित मनुष्यों के संग-सेवा का त्याग व श्री ध्यानमग्न सात्त्विक मानव के संग-सेवा का ग्रहण न किया हो।

(५) कथा वाचक, उपदेशक व मंत्र-दाता गुरुदेव स्वयं ही श्री प्रभु की जेल रूप चिन्ता-क्रोधयुक्त नाराज मुद्रा का दर्शन देते हों।

(६) जिस-जिस नाम-रूप के आधार पर भारत देश में पण्डे-पुजारी, साधु-संन्यासियों द्वारा धोखेबाजियाँ होती हैं और धर्मात्मा कहलाने वाले भी अहंता-ममता बुद्धि से

धन-संग्रह कर हानिकारक इन्द्रिय-भोग भोगते हैं; उन ध्यान आनन्द रहित राजसी-तामसी मनुष्यों द्वारा प्राप्त श्री प्रभु का नाम मंत्र और साकार स्वरूप तथा ग्रंथ चाहे कितना ही प्रतिष्ठित क्यों न हो, सुख, शान्ति, आनन्द-रहित शुष्क हो जाता है। किन्तु जैसे बनावटी वैद्यों की ओषध और जाली नोट भोली जनता में चलते हैं, ऐसे ही बनावटी भेष-भाषा के महात्मा-पण्डितों की मंत्र-विद्या का उपदेश तथा अनेकों धार्मिक अनुष्ठान चल रहे हैं।

जैसे श्री सरकार अपने विधान के विरुद्ध आचरण करने वालों पर नाराज होकर उन्हें कारागृह में रखती है वैसे ही अपने विधान के विरुद्ध भाव आचरण करने वाले मनुष्यों को श्री न्यायकारी प्रभु जी चिन्ता-क्रोध रूपी जेल में रखते हैं। अपराधी मनुष्यों के हृदय को श्री प्रभु जी नाराजी रूपी तीरों द्वारा विदीर्ण करते रहते हैं। नाराजी समस्त पापों की जननी है और समता धर्म की माता है।

वर्तमान में अनेक संस्थाओं के संचालकों के कलुषित भाव हो जाने के कारण उनके मन्त्र तथा ग्रन्थों द्वारा जनता को श्री भगवत् पद विषयक ध्यान जनित आनन्द शक्तियुक्त समता-सन्तोषादि गुणों का लाभ नहीं हो रहा है, वैसे ही जिस दिन ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मन्त्र तथा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के प्रचारक भी ध्यान-शान्ति

रहित कामी, क्रोधी, लोभी अर्थात् विषयी-पामर चिन्तित-क्रोधित हो जाएँगे, उस दिन से यह मन्त्र तथा श्री विश्व-शान्ति ज्ञान ग्रन्थ भी शक्तिहीन हो जाएगा। जैसे वर्तमान में—पढ़ता सुनता हूँ मैं दैनिक गीता परन्तु ध्यान-समाधि रहित हूँ रीता का रीता।

(६) चिन्ता-क्रोध दायक पाप कर्मों का त्याग नहीं किया हो :—

(क) चिन्तित-क्रोधित असुर मनुष्यों का संग-सेवा करना पाप है (ख) अहंता-ममता बुद्धि से सम्पत्ति संग्रह करना पाप है (ग) अनावश्यक इंद्रिय-भोग भोगना पाप है (घ) अकर्मण्य रहना पाप है (ङ) अपनी सन्तानादि को श्री सात्विक सेवा-स्मरण ध्यान आदि में प्रवृत्त न करने के भाव रखना पाप है (च) धृतराष्ट्र-गान्धारी के सदृश राजसी-तामसी अर्थात् कामी-क्रोधी मनुष्यों को पालन-पोषण करते रहना पाप है (छ) मुफ्तखोर रहना पाप है (ज) अनुभव-रहित ज्ञान उपदेश देना महापाप है (झ) श्री ध्यान-समाधिमग्न इन्द्रिय संयमी विश्व सेवक गुणवानों पर दोष बुद्धि करना तो महाघोर ब्रह्महत्या पाप है इत्यादि ❀।

❀ पाप-पुण्य विषयक पूर्ण ज्ञान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (१) के आंशिक ज्ञान में प्रकाशित है।

सत्य-असत्य की परीक्षा का ज्ञान

(१) याद रक्खें ! किसी भी श्री भगवन्नाम् मंत्र को एक महीना जपने तथा मनन कीर्तन करने से यदि आन्तरिक शान्ति प्रसन्नता का अनुभव न हो तो निश्चय कर लें कि यह मंत्र श्री विश्वपिता को मान्य नहीं है; शक्तिहीन शब्दमात्र है। आप ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करें, आपको अवश्य ही आनन्द शान्ति का अनुभव होता रहेगा।

(२) याद रक्खें ! किसी भी ग्रन्थ को पन्द्रह दिन पठन करने से यदि क्रोध-चिन्ता आदि कम होकर—प्रेम, प्रसन्नता आदि उत्तम गुणों की वृद्धि न हो तो निश्चय कर लें कि यह ग्रन्थ आत्मिक उन्नति करने वाला नहीं, इसका माहात्म्य बनावटी नोट के सदृश है। आप अनुभव पूर्ण आदर्श सद्ग्रन्थ श्री विश्वशान्ति का विधिपूर्वक पाठ करें, आपके दुर्गुणों का नाश और सद्गुणों का विकास होना प्रारम्भ होगा। आप भगवत् प्राप्ति एवं मोक्ष की इच्छा छोड़ कर पहले श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा को ही धारण करने का प्रयत्न करें। श्री भगवत् आनन्द पद तथा आत्मज्ञान एवं मोक्ष तो श्री आनन्दमय प्रभु कृपा करके अपने आप प्रदान कर देंगे।

(३) याद रक्खें ! किसी भी श्री महापुरुष भगवान् का एक सप्ताह विधिपूर्वक संग करने पर यदि ध्यानजनित

आनन्द-शान्ति का अनुभव न हो तो निश्चय कर लें कि यह सुन्दर भेष-भाषा का ही पण्डित-महात्मा है। आप श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित ध्यानमग्न श्री प्रेमियों का समागम करें आपको चार ही दिन के अन्दर ध्यान लगाने की विधि एवं योग्यता प्राप्त होगी।

यदि कोई अन्धश्रद्धामय धर्मों का अनुष्ठान कराने वाला पण्डा-पुजारी व पण्डित-संन्यासी कहे कि अमुक पूजा-पाठ का फल मृत्यु के बाद होगा, तो आप भी कह सकते हैं कि आपको भी दान-दक्षिणा और भोजन आदि उसी जन्म में देंगे, अभी आप काम करके भोजन पाएँ। यदि कोई बाहरी शरीर का डाक्टर कहे कि औषध का लाभ मृत्यु के बाद होगा, तो क्या आप उसकी सेवा-शुश्रूषा करेंगे ?

(४) उपदेशक के सम्पर्क में रहने वाले प्रेमियों में से यदि किसी को भी ध्यान-समाधि का लाभ नहीं हुआ तो समझ लें कि यह गुरु श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का प्रेमी नहीं अपितु कामी-क्रोधी जेल निवासी है। आप गुरु भगवान् से प्रार्थना करें कि भगवन् ! चार छः घन्टा ध्यान-समाधि का आचरण-दर्शन देने की कृपा करें। यदि उपदेशक सफाई शब्द उच्चारण करे तो समझ लें कि यह वक्ता आनन्द शक्तिदायक श्री विश्वपिता का भक्त नहीं यह तो ग्रन्थों की सुन्दर वाणी रट कर हमारा स्वामी होने

का इच्छुक है इनके ज्ञान से श्री विश्वपिता के पदरूप ध्यान, आनन्द-शान्ति की प्राप्ति तो दूर रही जेल रूप चिन्ता-क्रोध से भी मुक्त होना सम्भव नहीं।

ध्यान का दर्शन देने पर अथवा न देने पर यह निर्णय हो जायगा कि वक्ता धर्मात्मा है या पापात्मा।

श्री भगवत् विषयक ज्ञान दाता देवी स्वरूप हो या पुरुष रूप हो यदि वह दो-चार घन्टा भी योग आसन से विराजित होकर नेत्र बन्द करके भजन-ध्यान का दर्शन देने में असमर्थ हो तो उनके उपदेश व कथा-कहानी सिनेमा के सदृश केवल इन्द्रियों का विषय होगा, आत्मिक आनन्द-शान्ति की प्राप्ति कदापि नहीं होगी। ऐसे मनुष्यों को दान-दक्षिणा देना धर्म नहीं अपितु चिन्ता-क्रोध दायक पाप है। श्री भगवत् प्रेमी की परीक्षा करने की यह प्रधान कसौटी अर्थात् दूरबीन यन्त्र है। आप श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित ध्यानावस्थित मण्डली का दर्शन करें आपको ज्ञान होगा कि ध्यान किस पदार्थ का नाम है।

अब श्री प्रभुजी पण्डितों द्वारा ही देश के मुक्ति-दाताओं की गिरफ्तारी करा रहे हैं।

प्रश्नकर्त्ता का समाधान

भगवन्! आपके दिव्य वचन महापुरुष श्री कृष्ण भगवान् के आदेशानुसार सत्य हैं। अमर वाणी श्री गीता में भी अध्याय ३ श्लोक २१ में मनुष्यमात्र के प्रति यही

आदेश है कि श्रेष्ठ महापुरुष जो-जो सद्गुण-सदाचार का आचरण करता है वही आचरण सब कोई करें और उनकी ही आज्ञानुसार शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक व सामाजिक आदि सम्पूर्ण कर्म करें।

श्री प्रभु पिता के विधान का ज्ञान

हे श्री प्रेमी ! काम-क्रोध परायण ध्यान-समाधि रहित बनावटी महात्मा-पण्डितों के बतलाए मन्त्र एवं उनके सुन्दर व्याख्यान से तथा उनकी सेवा-पूजा से श्री न्यायकारी आनन्दमय प्रभु ध्यान जनित दिमागी आनन्द-शान्ति प्रदान नहीं करते अपितु राजसी मनुष्यों की सेवा-रक्षा के दण्ड स्वरूप दुःख-अशान्ति देते रहेंगे तथा तामसी मनुष्यों का पालन-पोषण करने के दण्डस्वरूप तो सेवाकर्ता को दारुण दुःख-अशान्तिदायक कालापानी रूप चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन प्रदान कर श्री गीता अध्याय १८/३५ के लक्षण युक्त तामसी बना देंगे।

ध्यान समाधि रहित कामी-क्रोधी मनुष्यों से मन्त्र लेना व उनसे ज्ञान श्रवण करना तो उनके पशु बन कर अशान्तिमय जीवन बिताना है।

पहले जन्म में किए कर्मों का सुख-दुःख इस जन्म में भोगो और इस जन्म में किए कर्मों का फल अगले जन्म में मिलेगा, यह बनावटी धर्मात्माओं का सफाई-ज्ञान है।

मानव-भाग्य के ज्ञाता महात्मा श्री कृष्ण भगवान् ने श्री गीता अध्याय ४ श्लोक ३४ में मनुष्यमात्र के प्रति आदेश दिया कि आनन्द-शान्तियुक्त शक्तिसम्पन्न होने का और मुक्ति प्राप्त करने का समस्त ज्ञान श्री समाधि-मग्न सन्तोषी-समतावान, तत्त्वदर्शी, आत्मज्ञानी महापुरुष से ही प्राप्त करें अर्थात् उन्हीं के आदेशानुसार संयम, सेवा, स्मरण-ध्यान तथा समस्त आहार-विहार सम्बन्धी कार्य करें अन्यथा ध्यान-समाधि रहित मनुष्यों के उन्नति विषयक सम्पूर्ण ज्ञान जाली सिक्के हैं।

हे श्री प्रेमी ! गुणरहित बनावटी धर्मात्माओं की प्रतिष्ठा के प्रभाव से भारत देश का सब प्रकार से पतन हुआ है। देश उत्थान के लिए दो उपाय हैं—

(१) मानव सेवा के त्यागी, ध्यान-समाधि, समता-सन्तोष, प्रेम-प्रसन्नता आदि गुणों से रहित बनावटी भेष-भाषा के वाचालों की निन्दा एवं उन अन्ध-श्रद्धा के स्थापक बनावटी धर्मियों के प्रति सदा के लिए दण्ड-विधान की धारा बना दी जावे।

(२) श्री गीता शास्त्र अथवा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के अनुसार आदर्श गुणों को धारण करने वाले ध्यान-समाधि-मग्न, आनन्द-शान्तिमान, समता-संतोषयुक्त श्री महापुरुषदेव की प्रतिष्ठा अर्थात् आज्ञाओं का पालन करें।

(३) उपरोक्त ज्ञान को धारण करने वाला व्यक्ति

समाज एवं देश सुख-शान्ति दायक श्री भगवत् आनन्द शक्ति को प्राप्त होगा अन्यथा राजसी-तामसी मनुष्यों की आज्ञापालन करने वाला व्यक्ति सदा दुःखी-अशान्त रहेगा। यही मन्त्र विद्या का रहस्य है।

श्री योगसिद्ध महामन्त्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय जपें, श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ नियमानुसार दैनिक पढ़ें और तदनुसार सेवा व स्मरण-ध्यान करते हुए उक्त गुणों को धारण करें, आपका भाग्य उदय होता रहेगा। ॐ आनन्द

प्रेमी और पदार्थ

मानव जब श्री प्रभु के अनुकूल (सात्त्विक) होता है तब प्रेमी पदार्थ अपनी आजीविकार्थ समता-प्रसन्नता दायक अनुकूल प्राप्त होने का विधान है।

मनुष्य जब श्री प्रभु की मर्यादा के प्रतिकूल (राजसी) होता है तब धन, जन आदि पदार्थ चिन्ता और नाराजी दायक प्रतिकूल प्राप्त होने का विधान है।

श्री सेवायोग यज्ञ का ज्ञान

श्री भगवत्-आनन्द-पद प्राप्ति अर्थ श्रद्धा, प्रेम, उत्साह एवं निष्काम भावपूर्वक श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के अनुकूल सेवा करने की क्रमशः सत्ताईस प्रक्रियाएँ निम्नलिखित हैं।

इस धर्मयुक्त सिद्धान्त के विपरीत स्वार्थभाव अथवा स्वामीभाव से श्री प्रभु के जेल निवासी चिन्ता-क्रोधयुक्त राजसी-तामसी मनुष्यों की सेवा करने से वह सेवा श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के प्रतिकूल होती है जिसके दण्डस्वरूप सेवा करने वाले मानव का जीवन भी क्रमशः चिन्ता-क्रोधयुक्त दुःखमय-अशान्तिमय होने का विधान है।

(१) **श्री प्रेममय भगवत् दृष्टि**—जो कुछ भी देखा-सुना जाय सब कुछ ॐ आनन्दमय प्रभु का ही साकार स्वरूप है। इस सिद्धान्त का मनन करते हुए प्रेम-प्रसन्नता की भावना में मग्न रहना। यह समग्र-विराट-स्वरूप श्री साकार भगवान् की व्यापक सेवा है, इस सेवा के फल-स्वरूप मानसिक रोगों की वृद्धि नहीं होती। अन्यथा दोष दर्शन की आदत दिमागी रोगों की जन्म दाता है।

(२) **आदर सत्कार**—समागम के समय श्री आनन्दमय भगवान् की भावना करते हुए अपने से गुणवानों के साथ नतमस्तक होकर करबद्ध ॐ आनन्दमय और समान गुण वालों से हाथ जोड़ कर ॐ आनन्दमय तथा छोटों से ॐ आनन्दमय मंत्र उच्चारण कर प्रेम-प्रसन्नता प्रकट करना। यह सेवा सामाजिक उन्नति में सहायक है।

(३) **आसन**—स्थान पर पधारे हुए श्री प्रेमियों में ॐ आनन्दमय प्रभु की भावना करते हुए यथापात्र आसन प्रदान करना। इस सेवासे सामाजिक उन्नति होती है।

(४) **प्रिय वचन**—सब पर श्री आनन्दमय भगवान की भावना करते हुए जिस किसी के साथ वार्तालाप करने का अवसर प्राप्त हो उसे सत्य, प्रिय, हित के वचन कहे। भूत, भविष्य और वर्तमान की व्यर्थ वार्तालाप न बढ़ाकर श्री भगवत्-विषयक सात्त्विक वार्तालाप करे अन्यथा मौन मुद्रा से ॐ आनन्दमय भगवान का स्मरण करते रहना उत्तम है। यह सेवा गुण और ज्ञान की वृद्धि में सहायक है।

(५) **जल**—स्थान पर पधारे हुये श्री भगवत् स्वरूपों को जल पिलाना तथा गर्मी में हवा करना और अपनी शक्ति अनुसार प्याउ, कुआं, तालाब, पुष्करिणि, नहर, नल, ट्यूबवेल, टैंकी आदि द्वारा नगर व देश की सेवा करना।

(६) **भोजन**—मन ही मन ॐ आनन्दमय भगवान का स्वरूप समझते हुए अपनी परिस्थिति अनुसार उदारतापूर्वक श्रद्धा-प्रेमयुक्त श्री ध्यानमग्न सद्गुण-सदाचारी मानवों को भोजन अथवा जलपान कराना।

(७) **अन्न**।
(८) **वस्त्र**।
(९) **धन**।
(१०) **भवन**।
(११) **जागीर**।
(१२) **औषध**।
(१३) **जन (सेवक)**।

संख्या ५ से १३ तक की सेवाएँ योग्यपात्र की अपनी शक्ति अनुसार भगवत्-बुद्धियुक्त निष्कामभाव से करें और अन्य मित्र-बन्धुओं से भी करवाने की चेष्टा करें (योग्य पात्र की पहचान इसी लेख में पृष्ठ ६९ से ७१ पर प्रकाशित है *।

श्री महापुरुष देव के आदेशानुसार उपरोक्त सेवा कार्य करते रहना आर्थिक निश्चिन्तता का साधन है।

(१४) **आश्वासन (धैर्य)**—किसी भी प्रकार से घबराए हुए भयातुर दुखी मनुष्यों पर श्री भगवत् लीला की भावना करते हुए अपने हृदय को प्रेम, प्रसन्नता एवं समता में रखते हुए उन्हें शान्त करने की सेवा करना।

---

* श्री विश्व सेवा विद्या के उपासक ध्यानयोग के अभ्यासी मानव तन व धन द्वारा सेवा के पात्र हैं और अस्वस्थ अवस्था में विशेष पात्र हैं।

इस सेवा से अपने में धैर्य गुण धारण होता है जो जीवन नौका का पतवार है।

(१५) **शिक्षा**—अपने में जो प्रत्यक्ष लाभदायक अनुभवपूर्ण ज्ञान हो उसे स्वामीपन व स्वार्थ के भावों से सावधान रहते हुए निष्कामभावपूर्वक भगवत्-बुद्धि रखते हुए यथापात्र की सेवा-पूजा के रूप में प्रदान करते रहना। इस सेवा के प्रभाव से गुण और ज्ञान का विकास होता है।

(१६) **मान**—श्री भगवत् प्रेमी देश सेवक सज्जन देवी-पुरुषों का सन्मान करना उत्तम सेवा है। इस सेवासे देश व विश्व की उन्नति होती है।

(१७) **कीर्ति-बड़ाई**—श्री ध्यानमग्न गुणवान् देव-देवाङ्गनाओं के सुख, शान्ति व आनन्द शक्तिदायक सद्-गुण-सदाचारों की यथा पात्र के सन्मुख वाणी लेखनी द्वारा व्याख्या करते-करवाते रहना अति उत्तम सेवा है। इस सेवा से अश्रद्धालु मनुष्य भी श्री आनन्दमय प्रभु की मर्यादा पालन करने में उत्साही होकर श्री भगवत् ध्यानानन्द प्राप्त करने के पात्र बनते हैं ❀।

❀ संयम, सेवा, ध्यान के त्यागी बनावटी भेष-भाषा वाले कामी-क्रोधी ठगधर्मी—दम्भी-पाखण्डियों को तो महाआततायी समझ कर चिकित्सा बुद्धि से यथाशक्ति समाज में निन्दा, अपमान, तिरस्कार देना तथा सरकार द्वारा मृत्यु-दण्ड दिलाना भी विश्व की महती सेवा समझें।

(१८) **प्रतिष्ठा**—श्री सन्तोषी-समतावान समाधिमग्न महापुरुष देव के आनन्द-शान्तियुक्त शक्तिदायक गुण प्रभाव को समझकर अपने घर-परिवार एवं विश्व में प्रतिष्ठा करना तथा जनता में ऐसे श्रद्धा-प्रेममय भावों को जाग्रत करते रहना, जिससे सब कोई श्री महापुरुष देव के अनुगत् गुण और ज्ञान को धारण कर पूर्ण सुख, शान्ति-युक्त आनन्द-शक्ति को प्राप्त करें। यह सर्वोत्तम सेवा श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद प्राप्त करने का साधन है †।

(१९) **तन**—अपना शरीर सदा के लिए निष्काम-भाव से श्री महापुरुष देव की सेवा में अर्पण कर कठ-पुतली की भाँति सर्वथा अनुगत हो जाना। आज्ञापालन में अपनी बुद्धि की प्रधानता न देना। ऐसी सेवा करने

---

† श्री समाधिमग्न समतावान् महापुरुषदेव द्वारा विश्व में अपरिमित लाभ होता है और सेवा समाधि के त्यागी गुण रहित, वाचाल, स्वाङ्गी पण्डित महात्मा द्वारा विश्व में महती हानि होती है। बनावटी धर्मियों की सेवा, शुश्रूषा और प्रतिष्ठा के दण्ड स्वरूप भारत देश दूर देशों की अपेक्षा अत्याधिक दुःखमय, अशान्तिमय, ज्ञान रहित, शक्तिहीन अर्थात् तामसी आचरण युक्त चिन्तित क्रोधित और भयातुर हुआ है।

वाला श्री प्रभु का पूर्ण श्रद्धालु है ❀।

(२०) **सात्त्विक ज्ञान**—आठ वर्ष के बालक-बालिकाओं से लेकर मानव मात्र को अन्तः शरीर के आहार, व्यवहार, रोग, ओषध एवं चिकित्सा का तथा बाहिरी शरीर के आहार-व्यवहार आदि का, अपने अनुभव अनुसार श्री भगवत् बुद्धि करते हुए निष्काम भाव से ज्ञान देना, यह ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का आदेश है +।

❀ स्मृति रहे ! धन, इन्द्रिय भोग और बदले में अपने तन की सेवा तथा यश-मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति के भावों से जो भी सेवा कार्य किया जाता है वह हृदय का स्वार्थ भाव श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के आनन्द-शान्ति युक्त शक्तिदायक पद से वंचित रखता है जैसे कि विश्व के बहु-संख्या में श्री सरकारी कार्य कर्ताओं को वंचित कर रखा है, अतः स्वार्थ भाव ही मानव दिमाग का शत्रु है।

वर्तमान के सरकारी कार्यकर्ताओं को पूछा जाय कि आपने आजीवन देश की सेवा की परन्तु क्या आपको कोई श्री भगवत् आनन्द-शक्ति का भी अनुभव हुआ तो उत्तर मिलेगा नहीं।

ध्यान-आनन्द शक्ति के अनुभवी साधक जनों को श्री महापुरुषो का आदेश है कि स्वार्थी-अंहकारी मन रूपी शत्रु को दमन करने का सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए।

+ श्री विश्वशान्ति ग्रंथ इस ज्ञान से पूर्ण है, अतः इस श्री ग्रंथ को यथा-शक्ति प्राप्त कर जनता भगवान् की सेवा मे वितीर्ण करते रहना अथवा जनता से मूल्य सेवा प्राप्त कर प्रचार करते रहना श्रेष्ठ सेवा है। माता-पिताओं का परम कर्तव्य है कि सन्तानों को जन्म से ही श्री विश्व-शान्ति ग्रंथ के अनुसार सात्त्विक गुणों की शिक्षा देते-दिलाते रहे।

(२१) **ध्यान**—ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के परम-पुरस्काररूप ध्यान-समाधि का दर्शन देना, आदर्श मौन सेवा है। और मनुष्यमात्र का ध्यानयोग में श्रद्धा-प्रेम बढ़ाकर यथाशक्ति ध्यानमग्न करने का प्रयत्न करते रहना महती सेवा है। ध्यान करने और कराने वाला मानव विश्व का सच्चा सेवक बनता है। श्री विश्वपिता आनन्द-मय प्रभु के अनकूल सेवा-स्मरण का फल ध्यान-समाधि है।

हे श्री प्रेमी ! याद रक्खें, जिस श्री प्रेमी का जितने घन्टे ध्यान लगता है उनके आदेशानुसार संग, सेवा, स्मरण व पठन-श्रवण करते रहने से आपका भी उतना ही ध्यान लगना सम्भव है। परन्तु ध्यानरहित गुरुओं के वचनों से मनःशान्ति रूप ध्यान लगना सम्भव नहीं। यदि आपका ध्यान नहीं लगा तो समझ लें कि मेरे द्वारा किए हुए यज्ञ, दान, तप आदि समस्त कर्म-धर्मों का फल बना-वटी सिक्के हैं, इन बनावटी धर्मों का मूल्य मृत्यु के पश्चात् भी प्राप्त नहीं होगा।

(२२) **स्व-स्वरूप-बोध**—अखण्ड आनन्दमय आत्म-स्वरूप में नित्य-स्थित रहते हुए यथापात्र श्री प्रेमियों को आत्म-प्रभाव का उपदेश देने की सेवा करते रहना श्री महापुरुषों का सहज स्वभाव होता है।

(२३) **विशुद्ध आचरण**—दिव्यकर्म श्री महापुरुषों के स्थूल-सूक्ष्म दोनों शरीरों से होने वाले भाव आचरण

सम्पूर्ण मनुष्यों के लिए परम आदर्श तथा प्राणीमात्र के लिए हितकारी होते हैं। श्री समाधिमग्न महापुरुषों का गुण-दायक ज्ञान श्रद्धालु-प्रेमियों को आजीवन सुख, शान्तियुक्त आनन्द-शक्ति देने वाला और जन्म-मृत्यु से छुड़ाने वाला होता है।

(२४) **मन से सेवा**—श्री महापुरुषों के विशुद्ध मन से आत्म-स्वरूप का मनन तथा प्राणीमात्र का हितचिन्तन होता है, जिसके प्रभाव से श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु द्वारा विश्व को अनेकों प्रकार के महत्त्वपूर्ण लाभ प्राप्त होते हैं।

(२५) **बुद्धि से सेवा**—श्री समाधिमग्न महापुरुषों के विशुद्ध हृदय में सदा-सर्वदा सम्पूर्ण विश्व में सुख-शान्ति के प्रसार का मनन-विचार होता है और तदनुसार विश्व में समाज द्वारा क्रमशः सात्त्विक मर्यादा स्थापन करने की आयोजना होती रहती है। इस महती सेवा का प्रभाव अनिर्वचनीय है।

जैसे सूर्य के सन्मुख करोड़ो बत्तियों का प्रकाश तुच्छ भासता है, ऐसे ही श्री समाधिमग्न महापुरुषों के हृदय की सेवा के सन्मुख करोड़ों मनुष्यों द्वारा की हुई तन, धन एवं ज्ञान की सेवा तुच्छ है।

(२६) **परमाणु सेवा**—जिस स्थान पर श्री महापुरुष देव विराजमान रहते हैं वहाँ के निवासियों को स्वाभाविक

ही लाभ होता रहता है, जैसे पुष्प से सुगन्धि, चन्दन के पेड़ के सम्पर्क में रहने वाले सुगन्धी ग्राही पेड़ भी चन्दन की सुगन्धियुक्त हो जाते हैं वैसे ही गुण ग्राही श्रद्धालु मानव सद्गुण-सदाचारी होते रहते हैं।

(२७) **सत्यशास्त्र की रचना**--पूर्णानन्द, पूर्णशान्ति सम्पन्न, समता-संतोषयुक्त आत्मज्ञानी श्री महापुरुषों द्वारा रचा हुआ आदर्श शास्त्र ही प्रत्यक्ष आनन्द-शक्तिदायक होता है। प्राचीनकाल के शुद्ध शास्त्र प्राप्त होने पर भी वक्ता के गुणों के अनुसार ही श्रोताओं को लाभ और हानि होती है। यह श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का विधान है ❀।

अनुभव करें! उपदेश देने वाला वक्ता यदि संतोषी-समतावान है तो आनन्द-शान्ति की प्राप्ति होगी और कथा वाचक कामी-क्रोधी है तो दुःख-अशान्तिदायक चिन्ता-क्रोध की प्राप्ति होगी। उदाहरणार्थ राजसी मनुष्यां के संग के प्रभाव से मनुष्य को अशान्ति सम्पन्न और श्री

❀ विचारशील भगवन्! विश्व मे बहु सख्या मे धार्मिक ग्रन्थ विद्यमान है परन्तु आनन्द शान्तिदायक आठ सिद्धियों से युक्त श्री प्रभु के युवराज पद प्राप्त करने के कारणों का ज्ञान तथा चिन्ता क्रोधदायक आठ असिद्धियो से युक्त श्री न्यायकारी प्रभु की जेल के कारण व निवारण विषयक पूर्णज्ञान स्पष्ट रूप से कही पढा सुना नही। उपरोक्त ज्ञान को स्पष्ट समझने के लिए श्री विश्वशान्ति ग्रंथ आपके कर कमलो में है।

सात्त्विक मानवों के संग के प्रभाव से मनुष्य को आनन्द-सम्पन्न बनाने का ज्ञान देने वाला श्री गीता ग्रन्थ है, जिनके लाखों ही वक्ता और करोड़ों ही श्रोता भारत देश में विद्यमान हैं किन्तु ध्यान जनित आनन्द शान्ति रहित उन धर्म-ध्वजियों द्वारा भगवान् की वाणी श्रवण करने से श्रोताओं को वैसा ही लाभ हो रहा है जैसे कि चोर-डाकुओं द्वारा धन की रक्षा करवाने से होता है।

इस उदाहरण से यही सिद्ध हुआ कि दुःख-अशान्ति की निवृत्ति के लिए हर्ष-शोकादि द्वन्दों से लिपायमान चिन्तित-क्रोधित मनुष्यों की आज्ञा पालन का त्याग और आनन्द शक्ति की प्रप्ति हेतु श्री ध्यान-समाधिमग्न आनन्द शान्ति सम्पन्न महामानव की आज्ञा पालन का ग्रहण ही गीता धर्म है।

सेवा कर्ताओं की शक्ति का ज्ञान

सेवा संख्या १ से १८ तक श्रद्धा-मिश्रित राजसी मनुष्यों द्वारा करवाई जाती है।

सेवा संख्या २१ तक श्रद्धा, प्रेम, उत्साहपूर्वक श्री ध्यानमग्न सात्त्विक देव-देवाङ्गनाएँ करते हैं।

सेवा संख्या २० से २७ तक विशुद्ध प्रेम-भाव से श्री आत्मज्ञानी महापुरुषों द्वारा होती है।

योगपात्र की सेवा प्रत्यक्ष लाभदायक है

(क) अपनी ज्ञान शक्ति अनुसार सेवा संख्या १ से २१ तक श्री समाधिमग्न गुणातीत महापुरुषों के आदेशानुसार करते रहने से क्रमशः सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्दयुक्त श्री भगवत् पद की प्राप्ति होती रहती है।

सावधान ! वह श्री महापुरुष गीता अध्याय २ श्लोक ५५ से ५८, अध्याय १४ श्लोक २२ से २५, अध्याय १८ श्लोक ४२ अथवा श्री आंशिक ज्ञान ग्रंथ के पृष्ठ ३४ से ६६ तक लिखे अनुसार गुण, ज्ञान एवं प्रभावयुक्त होना चाहिये। श्री विशुद्ध प्रेमी महापुरुष किसी भी भेष, भाषा, देश, जाति के हों, श्री आपके आदेशानुसार संयम, सेवा, स्मरण, ध्यान करने वाले मानव को आनन्द शक्तिदायक आठ सिद्धियों की प्राप्ति होगी।

(ख) सत्त्वगुण में स्थित ध्यानमग्न श्री देव-देवाङ्गनाओं के आदेशानुसार सेवा-स्मरण करते रहनें से सुख, शान्तिदायक ध्यान-आनन्द की वृद्धि होती रहेगी।

सावधान ! सच्चे श्री भगवत् प्रेमी देवी-देवों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरण, इन्द्रिय-संयम, श्री सज्जनों की सेवा, स्मरण-ध्यान, सादगीमय जीवन, सहनशीलता, प्रेम, प्रसन्नता,

समता, सन्तोष युक्त होते हैं जो श्री गीता अध्याय १२ श्लोक १३ से १८ तक आदर्श हैं।

वर्तमान भारत की जन-संख्या में ध्यानमग्न श्री प्रभु प्रेमी कोई बिरले ही हैं। पण्डित रावण कुल के सदृश वेदाचारी कहलाने वाले कामी, क्रोधी, लोभी, तामसी पण्डे, पुजारी, संन्यासी तो हैं भारतनाशी !

(ग) विपत्तिकाल में आवश्यकतानुसार सेवा संख्या १ से १४ तक के पात्र, पदार्थों के निर्माणकर्ता राजसी मनुष्य भी हैं।

देखिए ! राजस मनुष्य स्वावलम्बी, उद्योगी, पुरुषार्थी एवं न्यायव्यवहारी होते हैं, विपत्तिकाल में भी सेवा ग्रहण करने में उनका हृदय दुखी एवं लज्जित होता है। स्मृति रहे ! आग्रह पूर्वक व हठपूर्वक सेवा, दान, भिक्षा लेते रहना तो तामसी मनुष्यों के लक्षण हैं।

(घ) सेवा संख्या १ (प्रेममय भगवत् दृष्टि) के पात्र तामस मनुष्य हैं।

तामसी मनुष्यों के भाव-आचरण झूठ-कपट, चोरी, डकैती, वैर, हिंसा, अति निद्रा, आलस्य, प्रमाद एवं दम्भ-पाखण्ड-युक्त धोकेपरायण होते हैं, क्रोध उनका प्रधान लक्षण है। अतः ऐसे दुष्ट मनुष्यों को सरकार द्वारा दण्ड दिलाना व उनसे वैराग्य करना ही श्री न्यायकारी प्रभु का आदेश है।

निर्दयी, मोटे-ताजे अकर्मण्य, क्रूर-क्रोधी (तामसी) मनुष्यों का पालन-पोषण करना चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन दायक पाप है और मानव सेवा के त्यागी ध्यान-समाधि रहित दम्भी-पाखण्डी बनावटी धर्मियों को दान भिक्षा व यश मान देना महापाप है।

जेलों में निवास करने वाले और दान भिक्षा की आजीविका वाले तामसी मनुष्य जितनी संख्या में भारत देश में हैं क्या इतनी संख्या में किसी अन्य देश में हैं ? हमें विचार करना है कि श्री न्यायकारी प्रभु धार्मिक देश को 'दरिद्रधाम' और 'कलहधाम' बनाते हैं अथवा 'आनन्दधाम' 'शान्तिधाम' बनाते हैं ?

जटिल तामसी और दम्भी-पाखण्डी मनुष्य तो जेल (कारागृह) के भी पात्र नही अपितु राक्षस लोग तो मृत्यु दण्ड के ही पात्र हैं। हिंसक मनुष्यों का विनाश हिंसा नहीं अपितु हिंसा वृद्धि के अन्त करने का साधन है।

प्रश्न—क्या तामसी मनुष्यों का स्वभाव नहीं बदल सकता ?

उत्तर—अनुभव रहित उपदेशकों का तथा धन और मद के अहंकारियों का स्वभाव तो नहीं बदल सकता, किन्तु अज्ञानवश विपरीत आचरण करने वालों का स्वभाव भी भगवत्-पद प्राप्त सात्त्विक मानव के अधिक संग-सेवा से बदलना सम्भव है।

प्रश्न—भगवन् ! श्री भगवत्-पद प्राप्त महापुरुषों के साथ अनुचित व्यवहार करने से क्या हानि होती है ?

उत्तर—हे श्री प्रेमी ! जैसे उत्तम व्यवहार का फल श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद दायक ध्यान-समाधियुक्त अखण्ड-आनन्द और मोक्ष की प्राप्ति है, ऐसे ही अनुचित व्यवहार करने का दण्ड जीवित अवस्था में श्री आनन्दमय प्रभु के कारागृह रूप अत्यन्त दुःख-अशान्ति दायक चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन, ईर्षा आदि मानसिक रोगों में उबलते रहना और मृत्यु के बाद नीच योनियों की प्राप्ति होने का विधान है। विस्तार ज्ञान 'ब्रह्महत्या का ज्ञान' तथा 'श्री नानक देव संत की चेतावनी' शीर्षक लेखों में आगे पढ़ें।

प्रश्न—भगवन् ! श्री गीता के आदेशानुसार तामसी परिवार की सेवा-रक्षा न करके उनका वध कर देना धर्म तथा वध न करना पाप बतलाया, इस विषय में हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर—हे श्री प्रेमी ! ध्यानमग्न श्री सात्त्विक मानव की शिक्षा दिलाकर उन्हें सज्जन बनाते रहना चाहिए—यह उत्तम धर्म है अथवा उनको वध न करके राजसी-तामसी परिवार से वैराग्य करना उत्तम है।

हे श्री प्रेमी ! भाव से 'सर्वभूतहितेरताः' होना गुण है, परन्तु आचरण से बनचर, जलचर, नभचर प्राणियों

की तथा आसुरी (राजसी-तामसी) प्रकृति के मनुष्यों की सेवा का त्याग कर दें अन्यथा दिमाग पागल के सदृश तपायमान रहेगा ।

याद रक्खें ! सेवा संख्या २० से नीचा कार्य श्री भगवत्-पद प्राप्त महापुरुषों से करवाने से अपने में तथा विश्व में आसुरी सम्पदा की वृद्धि होकर पतन होता रहता है और अपने से अधिक ध्यानमग्न गुणवानों से शारीरिक सेवा लेते रहने से भी अपने में मानसिक रोगों की वृद्धि होती रहेगी ।

सेवा संख्या १ से २१ तक योग्य पात्रों की अपनी-अपनी शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता अनुसार निष्काम भाव पूर्वक करने से ॐ श्री परम पद दायक श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु से महान् लाभ होता है और योग्य पात्रों की सेवा न करने से कर्तव्य च्युत होने के कारण दण्ड के पात्र होकर लाभ के बदले महति हानि होती है अर्थात् जीवन तमोगुणी होता जाता है । तथा सकाम भाव पूर्वक की हुई सेवा साधारण फलदायक होती है ।

तन, धन व ज्ञान द्वारा श्री महापुरुषों के आदेशानुसार निष्काम भाव पूर्वक सेवा करते रहना श्री आनन्द शक्ति दायक प्रभु पिता जी का आदेश है श्री गीता अ० २/४७ ।

स्मृति रहे ! शारीरिक व सामाजिक कोई भी सेवा कार्य समता पूर्वक करते हुए ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप व आनन्द शान्ति सम्पन्न श्री भगवान के स्वरूप की स्मृति व जड़-चेतनादि में भगवत् बुद्धि करते रहना परम आवश्यक है। अन्यथा पूर्व के मानसिक रोगों से मुक्त होना सम्भव नहीं।

ॐ आनन्दमय

दरिद्रता और कलह

भारतदेश को किन पापात्माओं ने चिन्ता, क्रोध, भययुक्त दरिद्रधाम व कलह-धाम बनाया ?

—उद्योग रहित, सेवा और ध्यान के त्यागी, प्रमाद परायण, आलसी, वाचाल ठगधर्मियों ने तथा क्रोध परायण तामसी ठगधनियों ने भारतदेश को विपरीत ज्ञानयुक्त 'तामसधाम' बनाया है।

आहार का ज्ञान

सर्वसुखदायक प्रेममय श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु ने मनुष्य उपयोगी कौन-कौन से आहार बनाए थे और उन उत्तम पदार्थों का ह्रास क्यों किया इसका संकेतरूप से वर्णन करते हैं।

यावन्मात्र जीव जन्य प्राणी श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की सन्तान हैं। इनमें से पशु, पक्षी, कीट-पतंग आदि तो सीमित अहंता-ममता, सीमित ही कामना-प्रेम तथा सीमित ही ज्ञान-शक्ति में बंधे हैं और मौसम जन्य अथवा इन्द्रिय-विषय जन्य अनुकूल-प्रतिकूल प्रेमी-पदार्थों के सम्बन्ध से सुखी-दुखी होने वाले हैं। परन्तु मनुष्य शरीर का गुण-ज्ञान और आनन्द-शक्ति यावनमात्र अन्य शरीरों से सर्वथा भिन्न है।

मनुष्य का विकास और पतन मानव-संग, सेवा के प्रभाव से गुण-दोषों में परिवर्तन होने से होता है। मनुष्य का वास्तविक गुण, ज्ञान, आनन्द एवं शक्ति महान् व्यापक है जैसे "मैं श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का पुत्र आनन्दमय ही हूँ, यह विश्व ही मेरा है, आनन्दमय प्रभु पिता की आज्ञा और शक्ति से इन सबकी यथायोग्य पात्र के अनुसार न्याय-प्रेम से सुव्यवस्था करना मेरा कर्त्तव्य है।" इन भावों को

धारणकर सुहृदता गुणयुक्त समता में स्थित होकर यथा ज्ञान-शक्ति सेवा करने से श्री आनन्दमय प्रभु अखण्ड आनन्द-शान्ति एवं ज्ञान-शक्ति प्रदान करते रहते हैं। प्रत्येक मानव श्री विश्वपिता के युवराज-पद प्राप्त करने का जन्मसिद्ध अधिकारी है।

श्री प्रेममय प्रभु ने अपने प्रेमियों के लिए कन्द-मूल, फल, दूध, मेवा आदि सर्वोत्तम सात्त्विक पदार्थ तैयार किए हैं, जो निम्नलिखित गुणों को धारण कराने में सहायक हैं ❀।

(१) आयु को बढ़ाने वाले।

(२) बुद्धि को निर्मल, तीक्ष्ण, यथार्थ, सूक्ष्मदर्शिनी करनेवाले।

(३) मानसिक, शारीरिक शक्ति को बढ़ानेवाले।

(४) मानसिक, शारीरिक रोगों को शान्त करनेवाले।

(५) हृदय में सात्त्विक प्रसन्नता और मुखादि शरीर के अंगों पर शुद्ध-भाव-जनित आनन्द को प्रकट करनेवाले।

(६) चित्तवृत्तियों को प्रेमभावमयी बनानेवाले।

परन्तु जैसे-जैसे मनुष्यों ने संयम, सेवा, स्मरण-ध्यान-युक्त सात्त्विक भावों से च्युत होकर पशु-पक्षियों के सदृश

❀ स्मृति रहे! जो मनुष्य भीतरी शरीर के आहार और औषधियो का सेवन नही करता उसके लिए बाहिरी शरीर का सात्त्विक भोजन साधारण लाभ दायक होता है।

भौतिक कामना युक्त अहंता-ममता के भावों को धारण किया वैसे-वैसे ही श्री न्यायकारी आनन्दमय प्रभु ने आहार के उत्तम पदार्थों का ह्रास किया और प्रचुर मात्रा में प्राप्त होने वाले दूध, फल, मेवा आदि के स्थान पर मनुष्यों को अन्न शाक का आहार प्रदान किया तथा जब से मनुष्य कपट विद्या को धारण कर क्रोध और धोखेपरायण तामसी हुए तब से क्रमशः अन्न-शाक की उपज भी कम कर दी जिसके दण्ड-स्वरूप भूख से पीड़ित मनुष्यों ने जलचर, नभचर, बनचर, जीवों को ही भक्षण करना आरम्भ कर दिया।

अन्ततोगत्वा सन् १९१४ के युद्ध से भारतवासी केवल धन के लोभ में उन्मत्त हुए अत्याधिक हिंसामय होकर निर्भयता के साथ श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा भंग कर रहे हैं।

ज्ञान करें! कुछ वर्ष पूर्व तो सब प्रकार के पदार्थों की कमी की बीमारी थी, किन्तु अब धनियों तथा पदाधीशों में पैसे की कमी की बीमारी (चिन्ता) बढ़ी जा रही है। याद रक्खें! हिंसामय धन की समाप्ति का समय भी निकट आ रहा है। यह सब श्री न्यायकारी आनन्दमय प्रभु का ही दण्ड-विधान है। यदि दण्ड, भय अथवा प्रेम से इस हिंसामय स्वभाव में परिवर्तन न किया तो श्री प्रभु

कोप से वर्तमान में प्राप्त होने वाले खाद्य-पदार्थों का भी ह्रास हो जायगा।

वर्तमान समय में भी श्री प्रभु, पुरुषार्थी और न्याय-व्यवहारी होने के कारण, दूर देशों में कृषि सम्बन्धी पदार्थों की उपज भारत देश से अधिक कर रहे हैं।

निम्नलिखित पदार्थ रसपूर्ण-मीठे, चिकने मधुर सुगन्धि-वाले, रक्त-वीर्य की शुद्धि एवं वृद्धि करने तथा गुण, ज्ञान एवं आयु को बढ़ानेवाले उत्तम हैं। परन्तु शरीर की वात, पित्त, कफ आदि प्रकृति, आयु, श्रम और ऋतु के अनुसार अथवा विशेषकर श्री चिकित्सक के आदेशानुसार परिवर्तन करते रहना सात्त्विक है।

(१) गेहूँ, चावल, जौ, मक्की, बाजरा आदि। (स्मृति रहे ! श्रमवीरों के लिए सब प्रकार के अन्न हितकर होने सम्भव हैं)।

(२) मूँग, उड़द, अरहर, चना आदि। (अत्याधिक दालों का सेवन शरीर के लिए उपयोगी नहीं है)।

(३) आलू, शकरकन्दी, अर्बी, बन्डा, गाजर तथा मूली।

(४) भिन्डी, कुष्माण्ड (कुम्हड़ा-कद्दू), लौकी, निनुवा (घिया-तोरी), तोरई, चचीण्डा, टिण्डा, करेला, ककौड़ा, फूलगोभी, बन्दगोभी, गाँठगोभी, मीठी सेम, हरे मटर, हरा चना, सहजन के फूल व फली।

(५) पत्ती का साग—पालक, चौलाई, मरसा, बथुआ,

पोदीना, धनियाँ, सोया, मेथी, सलाद या जहां जो ताजा मिले।

अत्याधिक साग सेवन करना वायु कारक व कफ कारक सिद्ध हुआ है। उपरोक्त विवेचन में कुछ साग-सब्जियों के नामों का उल्लेख न करने का कारण है कि उन्हें वनावटी धर्मियों ने निन्दनीय प्रसिद्ध कर रक्खा है। परन्तु स्वास्थ्य और श्रम के अनुसार उपयोगी अन्न, दाल, सागों का धर्म के नाम पर खण्डन करना श्री सात्विक मानवों का ज्ञान नहीं हैं।

(६) फल—आम, पपीता, अमरूद, खरबूजा, तरबूज, टमाटर, केला, मीठा निम्बु, संतरा, माल्टा मौसमी, सेब, नाशपाती-नाखा, अंगूर, अनार, आंवला और जहाँ जो फल मीठा, सस्ता और ताजा मिले वह सभी उपयोगी है।

(७) सूखे फल—किशमिश, मुनक्का, बादाम, अख-रोट, काजू, चिरौंजी, खजूर, अंजीर आदि।

(८) चिकनाई—मक्खन, घी तथा तिल और नारियल का तेल हितकारी है अतः यथा शक्ति सेवन करना शक्ति-वर्धक है।

(९) इमली-अमचूर की खटाई तथा लाल मिर्च के अतिरिक्त अन्यान्य सभी प्रकार के दीपन-पाचन दायक नमक-मसालों को ज्ञानपूर्वक सेवन करना हितकर है। लोभवश अधिक सेवन करना हानिकारक है।

सर्दी-जुकाम हितकारी, गरम-खुश्क व नशीली चाय को दैनिक सेवन करना अहितकर है*। यदि कफ की प्रकृति हो तो दूध में पीपल, बड़ी इलायची, अदरख देकर सेवन करना हितकर है।

दुर्गन्धयुक्त लहसुन-प्याज तामसी पदार्थ है अतः औषधि के अतिरिक्त इसको दैनिक सेवन नहीं करना चाहिये।

(१०) उत्तेजक नशीले पदार्थों का सेवन करने से शारीरिक शक्ति का क्रमशः ह्रास होता है और भीतरी-बाहिरी दोनों शरीरों में रोगों की वृद्धि होकर बुद्धि मन्द होती है तथा आयु कम होती है। अतः इनको न सेवन करना ही सात्त्विक है। मांसाहार से बुद्धि तामसी होती है।

(११) बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गांजा, भांग, शराब आदि मादक पदार्थ तथा बनस्पति घी बहुत ही हानिकारक हैं। श्री सरकार अफीम के सदृश मादक पदार्थों का उत्पादन बन्द कर दे।

अन्न, शाक, फल, दूध आदि पदार्थ पित्त, वात, कफ की परिस्थितियों के अनुसार ज्ञानपूर्वक सेवन करने से सभी निरोग्यता दायक व बलवर्द्धक हैं।

---

* वृद्धावस्था और रोगावस्था में शारीरिक चिकित्सक देव के आदेशानुसार आहार सेवन करना हितकर होना सम्भव है।

हिंसा के त्याग पूर्वक कृषिजन्य पेड़-पौधों द्वारा प्राप्त होने वाले आहार विषयक ज्ञान को शारीरिक चिकित्सकों के अतिरिक्त धर्म-अधर्म की व्याख्या कर्ताओं से पूछ-ताछ करने की आवश्यकता नहीं है।

मनुष्योपयोगी उत्तम आहार का ज्ञान न होने के कारण से ही वर्तमान-काल में नाना रोग बढ़ रहे हैं। विपरीत आहार से भी मनुष्य विपरीत ज्ञानयुक्त, दुर्गुण-दुराचारी, कुरूप, रोगी होकर अल्पायु में ही मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

भोजन पाते समय यथाशक्ति मौन होकर छोटा-छोटा ग्रास लें और दाँतों से चबा-चबा कर मुख में मलाई के सदृश बन जाए तब निगलने का अभ्यास करें अन्यथा पाचन शक्ति कमजोर होने से शरीर रोगी रहेगा।

मिट्टी, चीनी-मिट्टी, पत्थर, पत्ता, शीशा, स्टेनलेस-स्टील (निर्विकार पवित्र धातु) के पात्र शुद्ध, सात्त्विक और उत्तम हैं। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार के पात्रों में भोजन बनाने, खाने व रखने से ऐसा विष निकलता है जो स्वास्थ्य व दिमाग के लिए हानिकारक है।

भोजन अल्प व्यय में गुणकारक बनाने का जो सात्त्विक ज्ञान हुआ है वह दीर्घकाल तक संयोग करने से प्राप्त होना सम्भव है।

ॐ आनन्दमय

दुःखों की खेती का ज्ञान

(क) दुःखों के चार बीज निम्नलिखित हैं ।

(१) **सीमित अहंता**—मैं श्री आनन्दमय प्रभु का पुत्र आनन्दस्वरूप आनन्दमय ही हूँ । इस व्यापक ज्ञान को धारण न करके अपने को और कुछ सीमित—क्षुद्र मानने वाला श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद स्वरूप आनन्द-शक्ति से वंचित रहता है । इतना ही नहीं, उस अज्ञानी मनुष्य के हृदय में श्री प्रभु ईर्षा रूपी मानसिक अग्नि प्रज्वलित रखते हैं ।

(२) **सीमित ममता**—यह विश्व श्री प्रभु पिता की सम्पत्ति है, मैं श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का प्रेमी पुत्र हूँ अतः सम्पूर्ण विश्व ही मेरा है । इस व्यापक ममता भाव को त्याग कर कुछ प्रेमी-पदार्थ ही मेरे हैं इस सीमित ममता भाव को धारण करने से मनुष्य कर्त्तव्य-च्युत होकर श्री न्यायकारी प्रभु के दंड से चिन्ता, क्रोध, भय एवं रुदन को प्राप्त होता रहता है ।

(३) **सीमित कामना**—इतने धन, जन, भूमि, भवन आदि पदार्थों पर मेरा अधिकार हो जाय । इस स्वार्थ भावयुक्त आचरणों से परहिंसा होती है जो दुःख अशान्ति दायक अपने पतन का साधन है ।

(४) **सीमित प्रेम**—श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के हम सभी पुत्र हैं इस सात्त्विक ज्ञान से विश्व ही हमारा परिवार है परन्तु अज्ञानी मनुष्यों का ज्ञान है कि जितने मनुष्यों पर अपनी ममता है, उनकी सेवा-रक्षा तो प्रेमपूर्वक हो और अन्य-अन्य के साथ घृणा, द्वेष, वैर, ईर्षा आदि हो, यह मानव प्रेम नहीं पशु-पक्षीवत् प्रेम है। इस सीमित प्रेम से सामाजिक रोग बढ़ते हैं। व्यापक प्रेम भाव ही श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का विधान है।

इस सिद्धान्त पर प्रत्येक मानव विचार करे कि सभी मनुष्य प्रेम के उपासक हैं परन्तु दो मनुष्यों में अटूट प्रेम किसका है ? आप किस मानव पर नाराज नहीं होते ? स्मृति रहे ! जिस समय चित्त में नाराजी का प्रादुर्भाव होता है उस समय हृदय का प्रत्येक संकल्प हानि कारक होता है। इस रहस्य के ज्ञाता मानव हृदय को सम, शान्त, प्रसन्न रखते हैं। चित्त की नाराजी पापों की जननी है और चित्त की समता धर्म की माता है।

(ख) **मानसिक महारोगों के चार बीज निम्नलिखित हैं।**

(१) दोष दर्शन (२) चित्त की नाराजी (३) ईर्षा (४) चिन्ता। इन बीमारियों से मानसिक अग्नि प्रज्वलित रहती है। ॐ श्री प्रभु पिता अपने प्रतिकूल चलने वाले मनुष्यों को मानसिक रोगों द्वारा उबालते रहते हैं।

श्री समाधिमग्न समता सम्पन्न वैद्यराज के आदेशानुसार संयम, सेवा, स्मरण-ध्यान करने से उक्त रोग शान्त होने का विधान है।

(ग) **देश-नाशक चार बीच निम्नलिखित हैं।**

(१) **अकर्मण्यता**—ज्ञान-शक्ति रहते हुए कार्य-कर्म न करना मुफ्तखोरी है, ऐसे मनुष्य देश के लिए भार रूप हैं। साधु भेष धारी कामी क्रोधी महात्माओं का जीवन श्री प्रभु ने प्रत्यक्ष में गीता अ० १८/३५,३६ के अनुसार तामसी बना रक्खा है। बनावटी संन्यासियों का ज्ञान श्री गीता अ० ३/६; अ० ६/१; अ० १८/७ में देखें। मानव-सेवा के त्यागी मुफ्तखोर मनुष्य को श्री प्रभु चिन्तित और क्रोधित रखते हैं, तथा इन्द्रियों के संयम-पूर्वक तन से श्री सज्जनों की सेवा और मन से ॐ आनन्दमय प्रभु का स्मरण-ध्यान करने वाले मानव को प्रसन्न रखते हैं।

(२) **प्रमाद**—उन्नतिदायक कर्मों का त्यागकर व्यर्थ कर्मों में समय बिताने वाले प्रमादियों का दर्शन-श्रवण देश के लिए हानिकारक है। रूस के उद्योग वीर क्या करते हैं ?

(३) **परिग्रह**—अहंता-ममता-बुद्धि से संग्रह करना देश को दुखी और अपने को महादुखी बनाने का साधन

है। इस दंड के भुक्त भोगी प्रत्यक्ष में रियासती राजा और जमींदार लोग हैं।

श्री महापुरुष देव के आदेशानुसार आय द्वारा सेवा करते रहना सुख-शान्ति का साधन है।

(४) **अंधश्रद्धा**—बनावटी धर्मों का अनुष्ठान करना और करवाना। मुख्यतः बनावटी धर्मों के कारण से ही भारत देश का अधःपतन हुआ है। बनावटी यज्ञ, दान, तीर्थ, व्रत, देव, भूत, पितरों की पूजा आदि धर्म-कर्म वह हैं, जिनका फल केवल मृत्यु के पश्चात् ही निश्चित हो। अनुभव-रहित उपदेश देना चिन्ता, क्रोध, भयदायक महापाप है।

(घ) महादुःखों के दो बीज निम्नलिखित हैं।

(१) **ब्रह्महत्या**—श्री ध्यान-समाधिमग्न आनन्द-शान्ति दायक गुणवानों में दोष-दर्शन, श्रवण व कथन करना ब्रह्महत्या पाप है। श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के द्रोही बनने का यह सुगम साधन है। विस्तार ज्ञान 'ॐ श्री प्रभु के दण्ड विधान का ज्ञान तथा श्री नानक देव संत की चेतावनी नामक लेखों में पढ़ें।'

(२) मानव-सेवा के त्यागी, ध्यान-समाधि-रहित, वाचाल, राजसी तामसी मनुष्यों से कथा-कीर्तन-उपदेश श्रवण करना और उनकी सेवा-शुश्रूषा करते हुए उन्हें

दान-भिक्षा देना यह भी शीघ्र चिन्ता क्रोध-दायक बड़ा भारी पाप है। उदाहरणार्थ जैसे श्री सीता माता ने कामी, क्रोधी, लोभी, बनावटी पंडित-महात्मा रावण का अतिथि-सत्कार कर महाघोर पश्चाताप किया।

वर्तमान में अधिकांश उपदेशक श्री प्रभु की जेल रूप चिन्ता क्रोध का दर्शन क्यों दे रहे हैं ? क्या पण्डित महात्मा भी चिन्ता करते हैं ? नानुशोचन्ति पण्डिताः २।११। 'ज्ञानी-जन चिन्ता नहीं करते' अर्थात् जो मानव चिन्ता नहीं करते वही श्री प्रभु विधान के ज्ञाता हैं।

(ङ) सर्वनाश का एक बीज निम्नलिखित है।

(१) **कलह**—प्रेम धर्म का फल है और कलह पापों का दण्ड है। कलह की बीमारी से घर, ग्राम, प्रांत, देश एवं विश्व का सर्वनाश होता है। इस समय भारत देश कलह की प्रतिमा बना हुआ है। इस महा संक्रामक रोग के कीटाणु बहुत शीघ्र फैलते हैं। वर्तमान में शिशु भी कलह की बीमारी से वंचित नहीं है। यह माता पिता आदि पारिवारिक लोगों के दर्शन-श्रवण का ही प्रसाद है।

(च) सुख सम्पत्ति की खेती का प्रथम बीज निम्नलिखित है।

(१) **श्री सज्जन संग**—श्री देश के भाग्य विधाता बालक-बालिकाओं को सचरित्रवान व उन्नतशील नागरिक

बनाने के लिए एक अलग प्रान्त बसाकर अर्थात् परिवार से दूर रखकर प्रसन्नचित्त प्रियवक्ता अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा उद्योगयुक्त शिक्षित कराने से देश का शीघ्र उन्नत होना सम्भव है। अन्यथा कामनाओं से तपायमान चिन्तित-क्रोधित अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षित बालक-बालिकाएँ आपके सहित देश को आजीवन उबालते ही रहेंगे। जैसा कराओगे संग ऐसा ही बालक-बालिकाओं का बनेगा मन।

उपसंहार

राजसी मनुष्यों के दर्शन-श्रवण से श्री प्रभु-कामनायुक्त चिन्ता-दायक मन बनाते हैं। तामसी मनुष्यों के दर्शन-श्रवण से श्री प्रभु क्रोध-दायक तामसी मन बनाते हैं। श्री सात्त्विक मानव के संग सेवा से श्री प्रभु सुख-शान्तियुक्त प्रसन्नता-दायक मन बनाते हैं। श्री गुणातीत महापुरुषों के प्रेम-प्रभाव से श्री प्रभु आनन्द शक्तियुक्त समता-दायक मन बनाते हैं। यह श्री विश्ववपिता आनन्दमय प्रभु का विधान है।

राजसी मनुष्यों का मुख्य लक्षण क्या है ?—चिन्ता !
तामसी मनुष्यों का मुख्य लक्षण क्या है ?—क्रोध !

श्री सात्त्विक मानव का मुख्य लक्षण क्या है ?—प्रसन्नता !
श्री महापुरुषों का मुख्य लक्षण क्या है ?—समता !

पद और जेल

स्मृति रहे ! चिन्ता श्री विश्वपिता की जेल है, क्रोध श्री प्रभु का काला पानी है, प्रसन्नता श्री प्रभु पिता का पद है और समता परमपद है ।

चित्त नाराज क्यों होता है ?

चित्त की नाराजी मानसिक रोगों में एक बड़ा रोग है । मानसिक रोगों की वृद्धि करने वाले भौतिक अहंता, ममता, आसक्ति और कामना यह चार प्रमुख दुर्गुण हैं । श्री प्रभु न्याय से अनभिज्ञ अज्ञानियों ने इन दुर्भावों को उन्नति का साधन माना हुआ है ।

इन दुर्गुणों के संकल्पों को हितकर समझ कर जो कर्म मनसा, वाचा, कर्मणा किए जाते हैं उन समस्त कर्मों के दण्ड स्वरूप कर्ता के चित्त में नाराजी की वृद्धि होती

रहती है और चित्त की नाराजी श्री आनन्दमय प्रभु का मुख्य दण्ड विधान है।

चित्त में नाराजी के समय परिणाम हानिकारक तामसी ज्ञान प्रकट होता है और चित्त की समता के समय परिणाम हितकारक सात्त्विक ज्ञान प्रकट होता है। चित्त की समता और प्रसन्नता मानसिक निरोग्यता के मुख्य लक्षण हैं तथा नाराजी और क्रोध मानसिक रोगों के प्रधान लक्षण हैं। मानसिक निरोगी को महात्मा और मानसिक रोगी को पापात्मा कहते हैं।

चित्त में नाराजी शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक प्रतिकूलताओं के समय होती है अतः नाराजी को अत्यंत हानिकारक समझ कर मनन-विचार के साथ प्रसन्न रहने का अभ्यास करें।

प्रश्न—आसक्ति किसका वाचक है ?

उत्तर—स्वार्थ मूलक राजसी प्रेम का नाम आसक्ति है। जिस समय मनोकामना की सिद्धि में व्यवधान आता है उस समय राजसी मनुष्य आपस में नाराज होते हैं और नाराजी का परिणाम द्वेष तथा क्रोध में परिणित होने का विधान है। विस्तार ज्ञान पृ० ८४ पर प्रकाशित है।

ॐ आनन्दमय

चिन्ता और नाराजी

बनो पति-पत्नी, मात-पिता एवं दादा-दादी।
बिन सेवा-ध्यान के होगी, चिन्तायुक्त नाराजी ॥१॥
पूजो कृष्ण, विष्णु, शिव, कालो, दुर्गा इत्यादि।
बिन सेवा-ध्यान के होगी, चिन्तायुक्त नाराजी ॥२॥
जपो गायत्री, ॐ, राम, अल्लाह, गाड आदि।
बिन सेवा-ध्यान के होगी, चिन्तायुक्त नाराजी ॥३॥
पढ़ो वेद-पुराण, कुरान, रामायण, बाईबिल, गीता आदि।
बिन सेवा-ध्यान के होगी, चिन्तायुक्त नाराजी ॥४॥
बनो पंडा-पुजारो, पंडित-संन्यासी अथवा मुल्ला-क़ाज़ी।
बिन सेवा-ध्यान के रहेगी, चिन्तायुक्त नाराजी ॥५॥
करो यज्ञ, दान, तीर्थ, व्रत एवं पूजा आदि।
बिन सेवा-ध्यान के होगी, चिन्तायुक्त नाराजी ॥६॥
बनो पदाधीश, धन के स्वामी, मनको करलो क्षण भर राजी।
बिन सेवा*-ध्यान के होगी, चिन्तायुक्त नाराजी ॥७॥

स्मृति रहे! चिन्तायुक्त नाराजी श्री प्रभु की जेल है और ध्यान आनन्दयुक्त प्रसन्नता श्री प्रभु का पद हैं। ॐ आनन्दमय

---

*सेवा शब्द का ज्ञान पृ० ६० से ७५ तक प्रकाशित है।

गुण-बम का ज्ञान

(१) विश्वपतन के दो बम—स्वार्थ और क्रोध ।

(२) विश्वनाश के दो बम—एटम और हाइड्रोजन ।

(३) विश्वशान्ति के दो बम—श्री योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ।

(४) विश्व उत्थान के दो बम—श्री सज्जन सेवा में रत और समता ।

(५) परमानन्द प्राप्ति के दो बम—समाधिमग्न श्री महापुरुषों की आज्ञा से सेवा और स्मरण-ध्यान ।

(६) कलहनाश के दो बम—व्यक्तिगत संग्रह को सेवा में अर्पण करना और अहंभाव का त्याग करना❀ ।

(७) प्रेम वृद्धि के दो बम—अनुगत सेवा शुश्रूषा ।

(८) द्वेष-वैर बढ़ाने का एक बम—प्रतिकूल आचरण ।

(९) अन्धश्रद्धा के नाश का एक बम—अन्ध श्रद्धा के स्थापक कामी-क्रोधी ठगधर्मियों की निन्दा ।

❀ क्रोधी मनुष्यों के अधिकार में धन-सम्पत्ति देना कैसा ?
—सर्प को दूध-मिश्री सेवन कराने जैसा ।
क्रोधी मनुष्य को गृह स्वामी व शासन कर्ता बनाना कैसा ?
—'गाय-भैंसों' के समीप शेर का निवास कराने जैसा ।

(१०) सर्वनाश का एक बम—श्री ध्यान-समाधिमग्न मानव की निन्दा ।

(११) अज्ञान के नाश और ज्ञान के विकास का एक बम —श्री विश्वशान्ति ग्रंथ । ॐ आनन्दमय

ज्ञान और अज्ञान

समतायुक्त प्रसन्न चित्त में आनन्द-शक्ति दायक सात्त्विक ज्ञान प्रकट होने का विधान है तथा चिन्ता और क्रोधयुक्त नाराज चित्त में दुःख-अशान्तिदायक तामसी ज्ञान प्रकट होने का विधान है ।

स्मृति रहे ! चित्त की समता और प्रसन्नता युक्त स्थिति में सद्गुण-सदाचार का वर्ताव होता है तथा चित्त की नाराजी और क्रोध के समय दुःख-अशान्तिदायक दुर्गुण-दुराचार का वर्ताव होता है ।

अपराधी मनुष्यों को ॐ श्री प्रभु पिता चिन्ता-क्रोध युक्त नाराज रखते हैं ।

ॐ आनन्दमय

देवियों का दुःखमय जीवन

प्राचीन ग्रंथों में श्री समदर्शी महापुरुषों ने देवियों के प्रति 'वीराङ्गना, देवाङ्गना' सम्बोधन देकर उनके दिव्य गुण, ज्ञान, आनन्द, शक्ति का उल्लेख किया, यह सर्वथा सत्य है। परन्तु आधुनिक भारत की देवियों का विपरीत आदर्श देखकर मुझे दुःख होता है।

भारत की देवियों का पतन करने वाले रोगों का ज्ञान तथा उन्नति-दायक ज्ञान मैं अपने अनुभव अनुसार संक्षेप से आपकी सेवा में अर्पण करती हूँ। श्रीमान् पुरुषों के न्याय-दयायुक्त सहयोग से प्रिय देवियों का अतिशीघ्र पुनः उत्थान होना सम्भव है।

हे आनन्द शक्ति के उपासक माता-पिताओ! आप बालक-बालिकाओं के हितैषी हैं और आनन्द-शान्ति के भ्रम में दुःख-अशान्ति के भी भोक्ता हैं फिर भी आप विवाह का परिणाम हितकारक समझते हैं तो कम से कम वर २५ और वधू २० वर्ष से कदापि कम न हो और युवक-युवती को 'स्वयंवर' अर्थात् प्रेमपूर्वक आपसी गुण, ज्ञान और श्रम की एकता से विवाह करने की स्वतंत्रता दी जावे। स्वभाव की एकता होने से अत्याधिक आपसी कलह नहीं होगी। आपसी कलह अशान्तिदायक दुःखों का

विषैला समुद्र है। जिस घर में कलह होती है उस स्थान को मानसिक अग्नि से प्रज्वलित श्मशान गृह समझें।

दहेज-पद्धति बन्द कर दी जाय। वर-वधू परस्पर केवल पुष्पमाला से ही स्वागत करें। विवाह में बराती दो से पाँच तक आवें तथा एक रात्रि से अधिक निवास न करें।

जन्म, मृत्यु और विवाह इन तीनों कार्यों में किसी प्रकार से भी धन व्यय करना व्यर्थ ही नहीं अपितु प्रमाद है अर्थात् अधर्म की वृद्धि करते रहने का साधन है ❀।

सोने चाँदी, हीरे-मोती आदि के गहनों को हथ-कड़ी-बेड़ियाँ एवं जान की जोखिम समझें। धन-राशि को अलमारी में रखना भी अज्ञानता व देश अहित-कारी हिंसा-पाप है।

श्री दयामय प्रभु राज्य अधिकारियों को श्री गीता अ० २/४७ के आदेशानुसार सात्विक ज्ञान प्रदान कर रहे हैं कि अनर्थ-मूलक धन सम्पत्ति पर अर्थात् एक इंच भूमि और एक पैसे पर भी किसी का ममता

❀ बनावटी धर्मियों ने भारत देश में दान-दक्षिणा हेतु लाखों ही प्रकार की मनोकल्पित पूजा प्रतिष्ठा जाली ग्रन्थों द्वारा प्रसिद्ध कर रखी है। उन समस्त चक्रान्तियों का ज्ञान—ध्यान करने वाले बहुत से परिवारों को हुआ है परन्तु संक्षिप्त ग्रन्थ में उन काल्पनिक धर्मों का उल्लेख करना सम्भव नहीं।

बुद्धि से व्यक्तिगत अधिकार न रहे।

वर्तमान के श्रेष्ठ समाज का कथन है कि भारत की देवियाँ अज्ञान विमोहित हैं, जिन्होंने पुरुषों के मनोरंजन के लिए सोने-चाँदी की हथकड़ी-बेड़ियों से अपने शरीर को जकड़ रक्खा है। इन आभूषणों से रेलगाड़ी के कई डिब्बे भरने सम्भव हैं। उनका कहना है कि आभूषण धारण करने वाली देवियों के प्रति कानून धारा बना दी जाय ताकि देवियाँ इस बन्धन से मुक्त हों और देश की दरिद्रता भी दूर हो।

क्या रेशम के कीड़ों को मृत्यु दण्ड देकर उनके घर से निकाले सूत से बने हुए रेशमी वस्त्रों को अपने मनोरंजन के लिए धारण करना-करवाना तामसी आचरण हिंसा पाप नहीं है ?

इस्लामी राज्य में देवियों को दुर्जन लोग ले जाते थे, घर-गाँव वाले पहचान न लें, इस भय से देवियों को परदे में रखते और बुर्का पहनाकर बाहर निकालते। इसी कारण उस समय छोटी आयु में ही विवाह तथा परदा-बुरका की प्रथा प्रचलित हुई थी, किन्तु वर्तमान काल में क्यों?

देवियों को चारदीवारी के अन्दर परदे की रानी बना कर रखना, उनके ज्ञान-शक्ति का विकास न होने देना इत्यादि कारणों से भारत की देवियों का जीवन दुखमय हो रहा है।

क्या देवियों का रूप-रंग देखकर उनके नाक, कान, नेत्र आदि को कोई कतर लेंगे ? यदि अज्ञानतावश कोई हँसी-मजाक करे तो देवियों की व आपकी क्या हानि हुई ?

वर्तमान के विधान में देवियों के साथ छेड़छाड़ करनेवाले दुर्जनों के लिए दण्ड धारा बनाई हुई है। अतः देवियों को अबला, गृहणी, कामनी न बनाकर अपने ही समान सहधर्मणी बनाना श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का न्याय धर्म है।

हे विचारशील दयालु पुरुषो ! आप स्वयं गर्मियों में एक घन्टा अपने मुख पर परदा-बुर्का लगाकर अनुभव करें, आपकी क्या दुर्दशा होती है ? जो कष्ट आपको होगा, वही आपकी प्रिय प्रेमी देवियों को होता है। क्या देवियों को इस प्रकार कष्ट पहुँचाना हिंसा-पाप नहीं ?

हे ज्ञानवान् पिता-माताओ ! छोटी आयु में ही बालिकाओं का विवाह करने के लिए उतावले हो जाना और उनकी इच्छा न होने पर भी बलपूर्वक विवाह कर देना, बालिकाओं के कारण अति कलह-क्लेशयुक्त चिन्तित रहना तथा विवाह न होने तक भयातुर होना सर्वथा अज्ञान है।

आप विचार करें ! अविवाहिता देवियों में से आपके सदृश किसको दुःख-अशाति है और विवाहिताओं में से किसको सुख-शान्ति है ? अपितु विवाह होते ही विभिन्न

कामनाओं से तपायमान होकर चिन्ता, भय, ईर्षा, द्वेष व कलह-क्लेशादि अशान्तिदायक मानसिक तथा शारीरिक रोगों में ग्रसित हो जाती हैं।

देवियों व पुरुषों की आत्मिक शक्ति व ज्ञान कोष में कोई अन्तर नहीं केवल शारीरिक चिन्हों में भेद है। देवियों और पुरुषों के धर्म भी दो नहीं हैं। गुण, ज्ञान, भाव, आचरण और आनन्द शक्ति तो सज्जन-दुर्जन मनुष्यों के संग के प्रभाव से परिवर्तनशील है। वर्तमान में हजारों ही भगवती वीराङ्गना देवियाँ साहिबों के सदृश राज-कार्य-कर्त्ता कैसे हैं ?

स्कूल-कालेजों में एक साथ पढ़ने वाले बालक-बालिकाओं का मानसिक चरित्र शुद्ध रखने का यह सरल मार्ग है कि बाल्यावस्था से ही उन्हें बालकों की तरह पोशाक धारण करवा दी जावे।

सन्तान पैदा करनेवालों को रोगी, दुखी एवं परेशान देखकर उनके साथ प्रेम से हँसी-मजाक करें *।

प्रार्थना—देश में जन संख्या बहुत बढ़ गई है। अतः बीस वर्ष तक सन्तान पैदा न करने का प्रण कर लें। दुःखमूलक देवी-पुरुष सम्भोग भी आनन्द का हेतु नहीं है। अपितु दीपक-पतंगा अथवा मीन-काँटा के सदृश प्रथम सुख भासित होता है, किन्तु परिणाम दुःखों का हेतु है।

* सन्तानों द्वारा दण्ड प्राप्त होने का ज्ञान पृ० १०४ पर प्रकाशित है।

इससे शारीरिक रोग एवं मानसिक महारोग बढ़कर देवी व पुरुष दोनों की दिमागी शक्ति एवं गुण शक्ति का ह्रास होता जाता है और सन्तान आबादी जितनी अधिक बढ़ती है, उतनी ही कलह-कलेश, ईर्षा-द्वेष दायक अनेकों परेशानियों की वृद्धि होती है। बालक श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का पुरस्कार नहीं अपितु बड़ा भारी दंड विधान है। एक-आध दर्जन सन्तान वालों की दशा देखिए! दादा-दादी को दिमाग हीन किसने बनाया? किसके बेटे-बेटियाँ चिन्ता-क्रोध के दाता नहीं हैं?

ज्ञान करें—हाड़ जले ज्यूं लाकड़ी, केश जले ज्यूं घास।
सब जग जलता देख के, करो भोग का त्याग॥
जहाँ योग तहाँ भोग नहीं, जहाँ भोग नहीं योग।
जहाँ भोग तहाँ रोग है, जहाँ रोग तहाँ शोक॥

स्मृति रहे! जिस अज्ञान विमोहित बालिका की युवक बालकों के सम्पर्क में रहने की आदत हो गई है अर्थात् युवक बालकों के साथ हंसी-मजाक करने का स्वभाव हो गया है उसका विवाह कर देना चाहिए। और जिस बालिका का आसक्ति पूर्वक पुरुषों का दर्शन करते रहने का स्वभाव हो उसका विवाह करना चाहिए। जो बालिका पुरुषों के मनोरंजन के लिए शृंगार, सजावट करती हो उसका भी विवाह कर देना चाहिए!

विवाह करने वाले वर और वधु याद रक्खें! कालान्तर

में जीवन क्रमशः दादा-दादियों के जैसा चिन्ता-क्रोधयुक्त दुःखमय-अशान्तिमय होगा* ।' विवाह के पश्चात् जिस समय हृदय से प्रेम और प्रसन्नता रवाना होकर नाराजी और क्रोध की जाग्रती होगी उस समय वह देवी-पुरुष स्वयं एक दूसरे के प्रति मनन-विचार करेंगे कि मैंने रेशम की रस्सी समझ कर सर्प पकड़ लिया ।

विषयी पुरुष देवी के लिए विषदायक सर्प और विषयी बालिका पुरुष के लिए विष दायक सर्पनी सिद्ध होगी (प्रसन्नता-समता आत्मिक अमृत है, चिन्ता-क्रोध आत्मिक विष है) आगे जैसे आपकी इच्छा हो वैसे ही करें ।

हमारी अनुभवपूर्ण प्रार्थना है कि काम के वेग को शान्त करने के लिए ॐ आनन्दमय और क्रोध के वेग को शान्त करने के लिए ॐ शान्तिमय है । यह युगल-जोड़ी महामंत्र मन इन्द्रियों को विजय करने का श्री ब्रह्मवेत्ताओं का ब्रह्मास्त्र है ।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित सात्विक गुणों को धारण करने वाले (समता सम्पन्न समाधिमग्न) श्री देवी स्वरूपा हों अथवा श्री पुरुष स्वरूप हों वह आस्तिक समाज के स्थायी आनन्द-शक्तिदायक उपास्य देव होंगे ।

---

* विवाह और सन्तान विषयक सिद्धान्त का विस्तार ज्ञान श्री मानव भाग्य विधाता नामक २४ पृष्टों के ग्रन्थ में प्रकाशित है ।

अब आप ही विचार करें, सात्त्विक जीवन अपने और समाज के लिए आनन्द दायक है या चिन्ता-क्रोध युक्त राजसी-तामसी जीवन अपने और परिवार के लिए हितकर है ?

रज-वीर्य की रक्षा से लाभ का ज्ञान

ब्रह्मचर्य (देवियों के रज-वीर्य तथा पुरुषों के वीर्य की रक्षा) से शरीर में बल, तेज, उत्साह एवं ओज की वृद्धि होती है, शीत-उष्ण, पीड़ा आदि सहन करने की शक्ति आती है, अधिक परिश्रम करने पर भी थकावट कम आती है, शरीर में फुरती एवं चेतनता रहती है, आलस्य तथा तन्द्रा कम आती है, बीमारियों के आक्रमण को रोकने की शक्ति आती है, मन प्रसन्न रहता है, कार्य करने की क्षमता प्रचुर मात्रा में रहती है, दूसरों के मन पर प्रभाव डालने की शक्ति आती है, इन्द्रियाँ सबल रहती हैं, शरीर अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुदृढ़ एवं सुडौल रहते हैं, आयु बढ़ती है, वृद्धावस्था जल्दी नहीं आती, शरीर स्वस्थ एवं हल्का रहता है, स्मरण शक्ति बढ़ती है, बुद्धि तीव्र होती है, मन बलवान होता है, कायरता नहीं आती, कर्तव्य-कर्म करने में अनुत्साह नहीं होता, बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी धैर्य नहीं छूटता, कठिनाइयों एवं विघ्न-बाधाओं का वीरतापूर्वक सामना करने की शक्ति आती है, धर्म पर

दृढ़ आस्था होती है, अन्तःकरण शुद्ध रहता है, आत्म-सम्मान का भाव बढ़ता है, दूसरों के प्रति सहिष्णुता तथा सहानुभूति बढ़ती है, दूसरों का कष्ट दूर करने तथा श्री सज्जनों की सेवा करने का भाव बढ़ता है, सत्त्वगुण की वृद्धि होती है, रज-वीर्य में अमोघता आती है, प्राणीमात्र में भगवत् भाव की जाग्रती होती है, नास्तिकता तथा निराशा के भाव कम होते हैं, असफलता में भी विषाद नहीं होता, सबके प्रति प्रेम एवं सद्भाव रहता है, श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद प्राप्त करने की योग्यता आती है जो मनुष्य-जीवन का चरम फल है, जिसके लिए यह मानव देह हमें मिला है ! मानसिक अर्थात् सूक्ष्म शरीर का निरोग रहना ही सर्वोत्तम लाभ है, अस्तु !

रज-वीर्य के नाश से हानि का ज्ञान

रज-वीर्य के नाश से मनुष्य नाना प्रकार की बीमारियों का शिकार हो जाता है, शरीर खोखला हो जाता है, थोड़ा सा भी परिश्रम अथवा कष्ट सहन नहीं होता, शीत-उष्ण आदि का प्रभाव शरीर पर बहुत जल्दी होता है, स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है, जरा भी प्रतिकूलता सहन नहीं होती, आत्मविश्वास कम हो जाता है, काम करने में उत्साह नहीं रहता, शरीर में आलस्य छाया रहता है,

चित्त सदा सशङ्कित रहता है, मन में विषाद छाया रहता है, कोई भी नया काम हाथ में लेने में भय मालूम होता है, थोड़े से भी मानसिक परिश्रम से दिमाग में थकान आ जाती है, बुद्धि मन्द हो जाती है, अधिक सोचने की शक्ति नहीं रहती, असमय में ही वृद्धावस्था आ घेरती है और थोड़ी ही अवस्था में मनुष्य काल के गाल में चला जाता है, चित्त स्थिर नहीं हो पाता, मन और इन्द्रियाँ वश में नहो हो पातीं और श्री भगवत् आनन्द शक्ति की प्राप्ति के मार्ग से दूर हट जाता है। वह न इस जीवन में सुखी रहता है न मृत्यु के बाद ही, ऐसी अवस्था में देवियाँ तथा पुरुष बड़ी सावधानी के साथ शारीरिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्तिदायक रज-वीर्य की रक्षा में प्रयत्नशील रहने की पूर्ण चेष्टा करें। रज-वीर्य की रक्षा ही जीवन है और रज-वीर्य का नाश ही मृत्यु है, इस बात को सदा स्मरण रक्खें कि मानसिक बीमारियाँ रज-वीर्य के त्याग से बहुत बढ़ती हैं। श्री गीता अध्याय ५/२२; अ० १८/३८ की चेतावनी दायक अमर वाणी भी पढ़ें।

पुरुषों से भी अधिक देवियों की हानि का मुख्य कारण है कि प्रायः २७० दिन तो गर्भाधान में बालक का निर्माण उनके रज से होता है और अज्ञान विमोहित माताएँ प्रायः ७३० दिन तक बालक को दूध पिलाती रहती हैं। दूध माता के खून से तैयार होता है, इन दिनों

में खून की कमी होने से वीर्य तैयार नहीं हो पाता इस विवेचन से देवियों की हजार गुना अधिक हानि होती है।

प्रश्न—भगवन्! देवियों और पुरुषों का एक साथ रह कर ब्रह्मचर्य का पालन करना क्या सम्भव है?

उत्तर—हे श्री प्रेमी! श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित सैकड़ों ही परिवार आपकी सेवा में आदर्श हैं। परन्तु ध्यान आनन्द-शान्ति से अनभिज्ञ देवी समाज और पुरुष समाज का पृथक-पृथक रहन-सहन होना विशेष हितकर है।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित सात नियमों के अनुसार सात्त्विक संग, सेवा और स्मरण-ध्यान करते रहने से श्री प्रभु आपकी इन्द्रियों को आपके आधीन बना देंगे। मनःशान्तिदायक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र को चलते-फिरते उठते-बैठते तथा प्रत्येक कार्य करते समय मन से मनन व वाणी से उच्चारण करने से आपकी विजय होगी अन्यथा श्री दिमागी चिकित्सकों के प्रभाव से अनभिज्ञ मानव वर्तमान में शारीरिक चिकित्सकों की शरण ग्रहण कर केवल सन्तान जन्य विपत्तियों से वंचित हो रहे हैं।

सन्तानों के दण्ड का ज्ञान

प्रश्न—भगवन्! सन्तान धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष

की दाता है या हरता है ? मुझे तो बालकों ने बहुत दुखी व परेशान कर रक्खा है, बालक श्री आनन्दमय प्रभु का पुरस्कार है अथवा दण्ड-विधान है ?

उत्तर—(१) हे श्री प्रेमी ! बालक गर्भाधान से ही रज-वीर्य शोषण करता है । रज-वीर्य ही मानव की शारीरिक और बौद्धिक शक्ति को तथा आनन्द-शान्ति-दायक गुण-धन को बढ़ाने वाला है, जिसको चूसने के लिए बालक मीठा शत्रु है ।

(२) माता के खून से ही श्री प्रभु दूध तैयार करते हैं जिस दूध को माताएँ अज्ञान के कारण प्रायः दो वर्ष तक शोषण कराती रहती हैं । माता का शरीर खून की कमी के कारण अनेक रोगों से ग्रसित हो जाता है ।

(३) बच्चों को पालन करने वाली माता की हालत जड़ कटे पेड़ के सदृश हो जाती है ।

(४) रोगी सन्तानों और माता की चिकित्सा के कारण धन बरबाद होता है और कल्पित देव, भूत, पितरों को पुजाने वाले बनावटी धर्मी लोग दान-दक्षिणा के बहाने आजीवन लूटते रहते हैं ।

(५) बालकों के कारण चिन्ता, भय, क्रोध और रुदन आदि मानसिक रोग (दिमागी अग्नि) बढ़ जाते हैं जो मानव भाग्य को भस्म करने वाले हैं ।

(६) बच्चों की माता सेवा-कार्य ठीक नहीं कर

सकती जिसके कारण अनेकों विपत्तियाँ और आपसी कलह होती है।

(७) बेटे-बेटियाँ जन्म से आयु पर्यन्त माता-पिता का कहना नहीं मानते क्योंकि माता-पिता को अज्ञानी मानना ही उनके हृदय का ज्ञान है।

(८) माता-पिता के शरीरों पर ही टट्टी-पेशाब और वमन करते रहते हैं जो कि बड़ा भारी शत्रु भी नहीं करता।

(९) बेटा जन्म से लेकर अलग होने तक अपनी आज्ञा मनाता रहता है क्योंकि वह गवर्नर अथवा पुलिस साहिब है। अतः कामी-क्रोधी सन्तान तो आपको आजीवन उबालते ही रहेंगे। अब आप ही ज्ञान करें बालक तैयार करना श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का आदेश है या अज्ञानी मनुष्यों का आदेश है ?

माता-पिता का समाधान

भगवन्! हमने तन, मन, धन बरबाद करके बेटों का पालन किया, अब सेवा नहीं करते, कलह से परेशान रखते हैं। अज्ञानी और स्वार्थियों के दबाव में आकर सेवा करने वाली बेटी को तो दूसरों के घर भेज दिया, बेटा अलग हो गया, बहू ताने मारती रहती है।

बेटे के सन्तान होने से पोते-नाती पुनः हम लोगों

(दादा-दादी) पर टट्टी-पेशाब करने को तैयार हो गये हैं। हे प्रभु जी ! हमारे ही राजसी-तामसी कर्मों के फल-स्वरूप अशान्ति दायक दुखों का दण्ड हमें मिल रहा है।

हे श्री आनन्दमय प्रभो ! विवाह करके सन्तान पैदा करना तो अपने हाथों कुल्हाड़ी से अपने पैर काटना है। अब मुझे यह ज्ञान हुआ है कि सन्तान श्री विश्वपिता का पुरस्कार नहीं, अपितु बड़ा भारी दण्ड-विधान है जैसे —

(१) माता के रज-वीर्य के शोषक कौन हैं ? .... बालक !

(२) माता के शरीर को दुर्बल बनाने वाले कौन हैं ? .... सन्तान !

(३) धन के शोषक कौन हैं ? .... सन्तान !

(४) धन-भवनादि की चिन्ता देने वाले कौन हैं ? ... . बालक !

(५) दिमाग को तपायमान करने वाले कौन हैं ? .... बालक !

(६) मानसिक रोगों की वृद्धि करने वाले कौन हैं ? .... सन्तान !

(७) क्रोधाग्नि प्रज्वलित करने वाले शत्रु कौन हैं ? ... ... बालक !

(८) बुद्धि का नाश अर्थात् हृदय को पागल करने वाले कौन हैं ? ... ... बालक !

(९) आपसी व नागरिक कलह कराने वाले कौन हैं ? ... ... बालक !

(१०) रुदन के दाता कौन हैं ? ... ... बालक !

(११) दुःख-अशान्तिदायक विषय-भोगों के जाल में फँसाने वाला कौन है ? ... मूर्खों का ज्ञान !

(१२) आनन्द-शान्तिदायक गुणवानों की सेवा में बाधक कौन हैं ? ... ... बालक !

(१३) आनन्द-शक्तिदायक ध्यान-समाधि के शत्रु कौन हैं ? ... ... बालक !

(१४) आनन्द-शक्तिदायक आठ सिद्धियों के दाता श्री महापुरुषों से वियोग कराने वाले कौन हैं ... ... सन्तान !

(१५) शारीरिक तथा बौद्धिक शक्ति-दायक रज-वीर्यका शत्रु कौन है ? ... मूर्खों का आदर्श और अपना अज्ञान !

हे श्री प्रेमी ! योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय जपते रहो। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का ज्ञान बालकों को सुनाते रहो। श्री भगवत् मर्यादा पालन करने वाला बालक महाभाग्यवान हो जायगा और श्रीराम, श्रीकृष्ण, अर्जुन, द्रोपदी, सीता आदि के सदृश गुणवान्-ज्ञानवान् बन जायगा अन्यथा क्रोधी बालक-बालिकाएँ तो

आपके तथा देश के लिए मन्थरा, कैकेयी, सूपनखा, कंस एवं दुर्योधन ही होंगे।

श्री राज-कार्य-कर्ता मानव विचार करें! नाना मतों की प्रजा संख्या में बहुत होने पर भी कौओं के सदृश शक्ति-सम्पन्न होती है और उद्योग परायण न्याय-व्यवहारी देश भक्ता एकमत की साधारण जनता भी शेरों के सदृश शक्तिशाली होती है। जैसे वर्तमानकाल में रूस देश है।

हे भारत के वीर-वीराङ्गनाओं (छात्र-छात्राओं)! हमारा देश बनावटी धर्मियों के आदेशानुसार अधिक सन्तान तैयार करने के फलस्वरूप श्री विश्वपिता के दण्ड से नरकलोक अर्थात् दुःखमय, अशान्तिमय, कलहमय, कर्तव्य विमूढ़ एवं शक्तिहीन बन गया है। अतः यदि आप आदर्श श्री विश्वशान्ति आश्रम के ज्ञानवानों के आदेशानुसार इन्द्रिय-संयमी, उद्योगी, स्वावलम्बी, पुरुषार्थी एवं ध्यानमग्न होकर महाभाग्यवान् बन जायँ तो पुनः आप लोगों के सत्य-व्यवहार युक्त तप-तेज के प्रभाव से एक भारत ही नहीं अपितु विश्व ही स्वर्गलोक* अर्थात् मानव की वास्तविक श्री देव शक्ति सम्पन्न, सुखमय, शान्तिमय, आनन्दमय, प्रेममय, ज्ञानमय हो जायगा, अन्यथा प्रलय काल के सदृश बमवर्षा होने की ऋतु आ रही

---

* स्वर्गलोक व नरकलोक आकाश में नहीं है।

है और पुनः दूर देश वालों का शासन होना भी हमारे लिए दुःख एवं लज्जा की बात होगी।

हे श्री प्रेमियों! अज्ञानतापूर्वक ममता बुद्धि से एकत्र की हुई व्यक्तिगत जमीन-जायदाद देशगत् हो रही है। अन्याय से उपार्जित नोट (धन) रद्दी होंगे। इंगलिश भाषा लन्दन जाने वाली है। उर्दू भाषा पाकिस्तान में गई और संस्कृत भाषा के आधार पर दम्भ-पाखण्डयुक्त महाघोर ठगी होने के कारण श्रद्धा नहीं रही। अतः हे श्री प्रेमियों! श्री ध्यान-समाधिमग्न सज्जनों के आदेशानुसार मन-इन्द्रियों का संयम, सेवा, स्मरण-ध्यान युक्त उद्योग परायण होकर गुण-धन को संग्रह करते रहना ही नित्य आनन्द दायक है। जिसे प्राप्त करने के लिए सर्वगुण सम्पन्न और पूर्ण आनन्द-शान्तिदायक श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ आप की सेवा में विद्यमान है। आप परिवार सहित पठन करें अन्यथा आपके भीतरी बाहरी दोनों शरीर और अज्ञानी पारिवारिक लोग आपको शत्रु के सदृश नाना प्रकार के महाघोर संकटों से दुखी-अशान्त और दीन करते रहेंगे।

श्री सज्जनों की सेवा, इन्द्रियों का संयम, स्मरण-ध्यान, प्रेम, प्रसन्नता व समता-सन्तोष आदि गुण धारण करने का नाम धर्म है। इसके विपरीत बनावटी धर्मियों की स्वार्थ कल्पित रचनाओं का नाम अंध-श्रद्धा है, जिसको पाखण्ड-धर्म भी कहते हैं। श्री आनन्दमय प्रभु की मर्यादा

भंग करना चिन्ता-क्रोध दायक पाप है। चिन्तित-क्रोधित मनुष्यों के हृदय में श्री दण्डदायक प्रभु विपरीत ज्ञान देते रहते हैं। जिससे सुख के भ्रम में उनका जीवन दुःखमय, अशान्तिमय होता जाता है और श्री आनन्दमय प्रभु ध्यान-मग्न प्रेमियों के हृदय में शुद्ध ज्ञान प्रदान करते हैं, जिससे उनका जीवन आनन्दमय हो जाता है।

हे दया, न्याय, प्रेमादि गुणों के ज्ञाता समदर्शी श्रीमान् पुरुषो! भारत की देवियों को समान अधिकार एवं स्वतन्त्रता देने से हिंसा-पाप की कमी और कई महत्त्वपूर्ण लाभ होंगे। अतः देवी समाज को भी आप निश्चिन्तता, निर्भयता एवं प्रेम-प्रसन्नतापूर्वक स्वतन्त्र रक्खें।

ज्ञान करें! यदि आपकी बहन-बेटियाँ राज्यपाल, प्रधान मन्त्रिणी, राष्ट्रपति, जिलाध्यक्षा, एस० पी०, सिविल-सर्जन, हाकिम, वकील, बैरिस्टर, इन्जीनियर, लोकसभाओं की सदस्या, अध्यापिका, कृषि आदि विभिन्न कार्यों की निरीक्षिका, कोषाध्यक्षिका, उपदेशिका, लेखिका तथा अन्यान्य देश सेवा कार्यों की पदाधिकारिणी हो जायँ तो आपको कितनी प्रसन्नता होगी? किन्तु विवाह होने पर वे स्वयं दुखी-अशान्त होंगी और वर्तमान के रूढ़ीवाद के अनुसार तीन पीढ़ियों तक उनकी सन्तानें आपको शोषण करती रहेंगी। बेटे-बेटियों का विवाह करने से चिन्ता की शान्ति होने का विधान नहीं अपितु चिन्ता-क्रोध के अत्या-

धिक विकास होने का विधान है। मेरी उन वृद्ध दादा-दादी व पिता-माताओं से प्रार्थना है कि वे अपनी प्यारी बालिकाओं का जीवन अपने सदृश दुःखमय अशान्तिमय न बनावें।

हे प्रिय प्रेमी देवियो! आप पराये घर में जाकर अपने अमूल्य जीवन (भीतरी-बाहिरी दोनों शरीरों) को दुःख, चिंता, भययुक्त रोगमय ही बनाओगी। मेरा अनुभव है कि जिस घर में आपका पालन-पोषण हुआ है, वहीं रहकर प्रेम-प्रसन्नतापूर्वक ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के स्मरण-ध्यानयुक्त अर्थदायक उद्योग-धन्धा करती हुई, अपने जीवन को ज्ञान-शक्ति सम्पन्न करके सुख शान्तियुक्त आनन्दमय बनाओ। विश्वास करो और प्रयत्नशील हो जाओ! पुरुषों में और आपमें शक्ति समान है। श्री विश्वशान्ति आश्रम की आदर्श सेवा स्वरूप ध्यानमग्न वीरांगना-देवांगनाओं का संग करें, जिससे आपके आन्तरिक आनन्द-शक्ति एवं ज्ञान का विकास होगा।

क्या आपके पुरुषार्थ से अपने जीवन निर्वाह के लिए कुछ छटांक भोजन व कुछ गज वस्त्रों की कमी रहेगी? श्री सात्त्विक मानव तो विश्व भाग्य विधाता होने का विधान है!

देवियों को ताड़ना देते रहना, त्याग कर देना, कई

विवाह कर लेना, आजीवन सब प्रकार से सेवा करने वाली देवियों को भी सम्पत्ति में अधिकार न देना, पुरुष के साथ आग में जला देना (सती), धार्मिक कर्मों से भी वंचित रखना तथा ब्रह्मचारिणी देवियों को विधवा, अभागिन, पापिन आदि कहकर उन्हें चिन्तित रखना इत्यादि पक्षपात, अन्याय, अधर्म अथवा महाघोर हिंसा पाप है। इस हिंसात्मक व्यवहार के दण्ड स्वरूप श्री न्यायकारी प्रभु जी ने भारत देशवासियों को सब देशों से अधिक चिन्ता-क्रोध रूपी जेल में निवास करा रक्खा है। किसी भी निमित्त से हृदय में चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन की जाग्रति करते रहना ही श्री आनन्दमय प्रभु का दण्ड है।

दूर देशों की वीराङ्गना भगवती समाज पुरुषों के सदृश ही गुण, ज्ञान, श्रम, शक्ति और सम्पत्ति की अधिकारिणी है।

शिलाँग व बर्मा देश में देवियों का अधिकार भारत देश से विपरीत है। वहाँ पर सम्पत्ति (आय-व्यय) की अधिकारिणी भगवती समाज है और पुरुष समाज पशुवत् गृह सेवक हैं।

देवियों को चिन्तित एवं बुद्धिहीन रखने से बालक-बालिकाओं का विकास होना कैसे सम्भव है? संक्रामक मानसिक रोगी (चिन्तित-क्रोधित) माताओं के दर्शन-श्रवण से तो बालक-बालिकाएँ चिन्तित-क्रोधित ही बनेंगे।

विचारशील भगवन्! अन्तिम प्रार्थना है कि मैंने अपने तथा कई माता-बहिनों के आनन्द-शान्तियुक्त सुखी जीवन को देखकर अपने अनुभवयुक्त विचार देश की सेवा में प्रकट किए हैं। आगे आप जैसा आनन्द-शान्तिदायक न्याय-धर्म समझें वैसा ही करें।

श्री ध्यानमग्न अनुभवी गुणवान ज्ञानवानों के साथ कुतर्क वितण्डावाद करना तामसी आचरण है। इस महा-पाप के समान दूसरा बड़ा भारी पाप श्री प्रभु के विधान में नहीं है। इस महापाप का नाम ही ब्रह्महत्या है, दण्ड धारा श्री गीता अ० १८/३२, ३५, ३८ पढ़ें। ॐ आनन्द

बौद्धिक रोगोंका नुस्खा

छात्र-छात्राओं के काम-क्रोध, ईर्षा-द्वेष आदि बौद्धिक रोगों की शान्ति का एक मात्र नुस्खा क्या है?

—श्री प्रभु के विधान-दर्शक योग-सिद्ध, गुणसिद्ध व शब्द शक्ति सम्पन्न "श्री विश्वशान्ति" ग्रन्थ और "श्री मानव भाग्य विधाता" ग्रन्थ (पृ० २४)।

ॐ श्री प्रभु के दण्ड विधान का ज्ञान

ज्ञान करें ! व्यक्ति-व्यक्ति के पास अपने नाम से अलग-अलग सम्पत्ति रहना उसी प्रकार हानिकारक है जैसे बालक के हाथ में चाकू अथवा मीठा विष ! इसके दुष्परिणाम के ज्ञाता शासक विश्वास पात्रों को कोषाधीश नियुक्त कर देते थे। वे कोषाधीश (सेवक) ही प्राप्त पदार्थों को न्यायपूर्वक दया और प्रेमभाव से यथा योग्य अधिकारी पात्रों की सेवा में वितरण करते थे जिससे न कोई भूखा-नंगा रहता और न कोई ईर्षा, कलह, कपट व बेईमानी करता और न ही सम्पत्ति विषयक मुकदमा तथा मारपीट होती; चोरी-डकैती, छीना-झपटी का तो प्रश्न ही न था। सम्पूर्ण जनता निर्भय और निश्चिन्त होकर श्री ग्राम पिता की आज्ञा से अपनी-अपनी ज्ञान-शक्ति अनुसार विभिन्न प्रकार के उद्योग कार्यों को प्रेम-प्रसन्नतापूर्वक करती थी; 'मैं मेरे, तू तेरे' के भावों से रहित होकर श्री भगवान् को याद रखते हुए आनन्दमय-शान्तिमय जीवन बना लेते थे। इसका नाम था 'भारतीय संस्कृति'— सात्त्विक मर्यादा अर्थात् वास्तविक सत्य-व्यवहार (सच्चा वर्ण-धर्म)।

धन संग्रही तामसी राजाओं के ज्ञान से व्यक्तिगत

संग्रह की तामसी मर्यादा स्थापित हुई, तब से दस प्रकार की बीमारियों से भारत देश का क्रमशः अधःपतन हुआ है जैसे (१) स्वार्थ बुद्धि से हिंसायुक्त व्यवहार (२) सम्पत्ति संग्रह का लोभ (३) अनावश्यक भोग विलास (४) अत्याधिक सन्तानों की पैदायश (५) ईर्षा-द्वेष (६) अकर्मण्यता (७) प्रमाद (८) अभिमान ❀ (९) कलह (१०) दरिद्रता।

स्मृति रहे! देश सेवार्थ या विश्व सेवार्थ भाव से सम्पत्ति संग्रह की मर्यादा ही उपरोक्त रोगों की औषधि है अन्यथा भारत देश का उन्नतशील होना सम्भव नहीं।

अज्ञान विमोहित समाज हिंसात्मक और ठग-व्यवहारी होने के कारण निम्नलिखित प्रकार से दण्डनीय होता है :—

(१) वर्षा, वायु, शीत, गर्मी का समय पर न होना, न्यूनाधिक एवं बे समय पर होना।

(२) बाढ़, ओले, चूहे, टिड्डीदल आदि कीटों से फसल का नष्ट होना।

(३) भूकम्प, अग्निकांड आदि से अनेक तरह की हानि।

(४) प्लेग, हैजा, तपेदिक, टाईफाइड, इन्फ्लून्जा, दमा-

❀ गुण अनभिज्ञ जनता अधिक धन संग्रही तामसी मनुष्यों को ही देश का राजा व राज-कार्य-कर्ता, उपदेशक, पण्डित, महात्मा, जगत्गुरु, मुख्य अध्यापक, सभापति आदि देश सेवा के पदों पर नियुक्त करना हितकारी समझती है। परन्तु अहं के उपासक तामसी मनुष्य अत्याधिक नाराज होते हैं और क्रोध करते हैं। क्रोधी मनुष्यों की आशा, कर्म और ज्ञान सफल न होने का विधान है गी० अ० ९।१२।

श्वास, खांसी आदि अनेक बीमारियों का आक्रमण।

(५) शेर, भेड़िया, कुत्ता, सर्प, बिच्छू, मच्छर, मक्खी आदि नाना विषैले कीट-कीटाणुओं के आक्रमण द्वारा दण्ड।

(६) रुई, अन्न आदि की फसल कम होना (भारत देश के काश्तकार भी अशिक्षित)।

(७) दूध-घी, साग, फल, मेवा आदि सात्त्विक पदार्थों का ह्रास।

(८) जड़ी, बूटी आदि औषध-ज्ञान का नाश।

(९) दुर्गन्ध दायक तथा नशीले और विषैले कृषि जन्य तामसी पदार्थों का विकास ❀।

(१०) गाय, भैंस, भेड़, बकरी जैसे उपयोगी पशुओं का वध।

(११) देश के अधिकांश स्थानों का जल नमकीन, फीका, रस तथा हाजमा-शक्ति रहित, दुर्गन्धयुक्त एवं रोगों के कीटाणुओं से दोषी और तेलिया होता जाता है।

(१२) नदियों का जल सूख जाना, कुएँ गहरे हो जाना,

❀ ठगी परायण क्रोधी मनुष्यों को श्री प्रभु जी तामसी पेड़-पौदों की खेती करने का विशेष ज्ञान प्रदान करते हैं और तामसी देश के पहाड़ों एवं वनचर भूमियों में भी श्री प्रभु अहितकारी पेड़-पौदों की पैदायश करते रहते है।

जमीन में बालू, नमक, कंकर-पत्थर एवं हानिकारक पौदों की पैदावार, भूमि का रस रहित ऊसर होना (इत्यादि श्री प्रभु का न्याय पूर्ण दण्ड विशेषतया राजस्थान में देखें)।

(१३) परस्पर कलह-क्लेश—दो व्यक्तियों का भी आपस में प्रेम नहीं दिखाई देता । प्रतिकूलता से द्वेष बढ़ाकर मनुष्य सामाजिक अथवा मानसिक रोगों में ग्रसित होते रहते हैं।

(१४) मारपीट, झगड़ा, मुकदमेबाजी एवं संग्राम की वृद्धि होती रहती है।

(१५) राक्षसी विद्या—अनेक भयानक अस्त्र-शस्त्र जैसे नाइट्रोजन, हाईड्रोजन, एटम, राकेट बम, गोले, गैस आदि तमोगुणी शक्तियों के ज्ञान की वृद्धि होती रहती है।

(१६) स्वास्थ्य और दिमाग के लिए हानिकारक कोयलों की गैस, डीजल आयल की गैस, पेट्रोल की गैस, बीड़ी-सिग्रेट आदि विषैले पदार्थों की गैस की वृद्धि होना।

(१७) आसुरी विद्या—अनेक प्रकार के ऐश-आराम, शौकीनी-सजावट विषयक ज्ञान की वृद्धि (इन विलासिताओं में उन्मत्त रहने वाले भारत के राजा-रानी और जमींदार लोग कितने दुखी-अशान्त हैं।)

(१८) अन्न, धन, वस्त्र, भवन, औषध आदि पदार्थों का कष्ट ❀।

(१९) जेल, जुर्माना, तथा धन सम्पत्ति पर सरकार का अधिकार और फाँसी इत्यादि से दण्ड।

(२०) हृदय में दुःख-अशान्ति दायक चिन्ता, भय, क्रोध, ईर्षा, द्वेष आदि मानसिक रोगों से महादण्ड।

(२१) मन-इन्द्रियों की चंचलता से भयनाक परेशानियाँ अर्थात् मानसिक द्वन्द्वों से व्याकुलता।

(२२) आयु कम होना। मनुष्यों के साथ-साथ उपयोगी पशु और पक्षी एवं पेड़-पौदों की आयु भी श्री प्रभु कम करते जाते हैं।

(२३) टुंडा, लूला, लंगड़ा, काना, बहरा, अन्धा, गूंगा तथा नाक, कान आदि अंगहीन हो जाना।

(२४) आवश्यक नींद का न आना।

(२५) भयानक रोग, डाक्टरों द्वारा भयंकर आपरेशन और कड़ी दवाइयों का प्रयोग।

(२६) श्री दण्डदायक प्रभु का जिन पर अधिक कोप होता है उनको अधिक सन्तान देते हैं। सन्तान द्वारा

❀ मकान बनाने या खेती करने के लिए जमीन की कमी, आहार-व्यवहार के लिए शुद्ध जल की कमी, शीतल-मन्द शुद्ध वायु की कमी, जलाने के लिए काठ की कमी, भ्रमण करने के लिए शुद्ध आकाश की कमी।

क्या-क्या और कितना तथा किस प्रकार से दण्ड मिलता है, इस विषय का पूर्ण ज्ञान लिखने से तो एक पुस्तक ही छप जायगी। कुछ सांकेतिक ज्ञान पृ० १०४ से १०८ पृष्ठ तक प्रकाशित है।

ज्ञान करें और प्रत्यक्ष देखें ! न्याय-व्यवहारी अमेरिका तथा उद्योगी चीन देश और शिशुवत् प्रजापालक रूस एवं बनावटी धर्मी, कपट-व्यवहारी व ध्यान-समाधि मग्न गुणवान आत्माओं का द्रोही भारत देश; इन चार देशों में कौनसा देश अधिक सुखी-दुखी है। इस ज्ञान पर मनन-विचार करने से उपरोक्त चौबीस सूत्रों में प्रकाशित श्री प्रभु न्यायकारिता पर विश्वास होना सम्भव है।

रजोगुण प्रधान दूर देशी लोग उद्योगी व न्याय व्यवहारी होने के कारण भोजन वस्त्र आदि पदार्थों के लिए चिन्तित नहीं और स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी उत्तम ज्ञान होने के कारण भारत देश से अधिक स्वस्थ हैं तथा सन्तानों की उत्पत्ति अत्याधिक न करने के परिणाम स्वरूप आपसी कलह (घरेलू झगड़ों) से वंचित रहते हैं।

सेवा प्रेम में दक्ष रूस देश वर्तमान समय में शारीरिक, आर्थिक व सामाजिक उन्नतियों में कुशल है। यदि उन लोगों को ध्यान-समाधि विषयक ज्ञान हो जाय तो वह लोग श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद

को अतिशीघ्र प्राप्त करने के पात्र हैं। विस्तार ज्ञान "श्री विश्वपिता के न्याय-प्रेम का ज्ञान" नामक लेख में प्रकाशित है।

भीतरी-बाहिरी रोगों का कारण

उपरोक्त श्री प्रभु के दण्ड विधान में वर्णित मानसिक रोग तो प्रधानतया पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हो जाते हैं। तदनुसार प्राप्त धन-सम्पत्ति का दुरुपयोग तथा समाज के साथ अयुक्त व्यवहार करने के दंडस्वरूप बीज-वृक्ष-न्याय से बढ़ते रहते हैं। और बाहिरी शरीर के रोग विशेषकर अयुक्त आहार व अयुक्त श्रम और छूत के कारण होते हैं।

स्मृति रहे! महात्मा व पापात्मा, साधक और असाधक कोई भी मनुष्य श्री गीता अ० ६ श्लोक १७ के आदेशानुसार युक्त आहार-विहार न करके श्लोक १६ के अनुसार अयुक्त करेगा वह क्रमशः कालान्तर में रोगी होना सम्भव है। अतः युक्त आहार-विहार और युक्त श्रम का ज्ञान प्राप्त करने की परमावश्यकता है। अन्यथा ओषधियाँ तो कुछ समय के लिए ही हितकर होनी सम्भव हैं।

दूर देशों की तुलना में भारत देश के मानव अज्ञान के कारण अत्याधिक रोगी हैं।

भारतवासियों को श्री प्रभु चेतावनी

राजा रंक हुए। जमींदारों ने विलाप किया। हिन्दू-इस्लामी आपसी कलह से सर्वनाश को प्राप्त हुए तथा पददलित इस्लामी पुनः सम्राट् हुए (पाकिस्तान)! बर्मा देश के दुःखों को भूला नहीं जाता! वर्षा की न्यूनता और पदार्थों का ऐसा अभाव कभी देखा सुना था? प्रलय काल के सदृश बम, गोले, गैसों की तैयारी है! व्यापार चौपट हुआ! नोट (धन) व इंगलिश भाषा लन्दन जा रहे हैं। मकान मालिक पुनः रुदन करेंगे! व्यापारी माल संग्रह नहीं कर पायेंगे। सोना-चाँदी तुच्छता को प्राप्त होगा! दान-दक्षिणा, भोजन-भिक्षा की प्रथा लुप्त हो जावेगी! उद्योग रहित शिक्षा एवं गुणरहित विभिन्न भाषाओं के शब्द-ज्ञान सात्त्विक बुद्धि को नाशकर चंचलतायुक्त दिमागी-अशान्ति बढ़ाने वाले समझे जाएँगे। धनी-निर्धन समान होंगे! हरिजन-शूद्र और नारी सभी उच्च पदों के समान अधिकारी होंगे! श्री सरकार के विधान में अकर्मण्य, मुफतखोर, आलसी और प्रमादी मनुष्य भी देश के शत्रु अर्थात् अपराधी माने जावेंगे। ऐसे मनुष्यों को जेलों में रखकर उपवास कराने की मर्यादा होनी सम्भव है तथा देश द्रोही, तामसी मनुष्यों को अधिक संख्या में जेल में न रखकर विषपान कराने की मर्यादा होनी सम्भव है।

भारत देश में आपसी कलह देखकर दो बिल्लियों में बन्दर की पंचायत के सदृश पुनः दूर देश वालों के शासन की सम्भावना है। उपरोक्त सम्पूर्ण घटनायें श्री प्रभु की सूचनाएँ हैं।

मनन-विचार करें! हैजे की बीमारी फैलने की सम्भावना होती है तो उसके परिणाम के ज्ञाता लोग ज्ञानी डाक्टरों के कथनानुसार इन्जेक्शन ले लेते हैं और जलाशयों आदि में औषधि का प्रयोग करते रहते हैं। किन्तु आलसी बुद्धि के लोग तो आग लगने पर ही कुआँ खोदते हैं।

जो श्रद्धालु प्रेमीजन ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् को स्मरण करते हुये आदर्श ग्रंथ श्री विश्वशान्ति के अनुसार श्री विश्वपिता की मर्यादा पालन करेंगे। वे सदा आनन्द-मंगल से रहेंगे और स्थाई सुख-शान्ति युक्त आनन्द-शक्तिदायक गुण-धन को संग्रह कर पाएँगे।

जो देशभक्त व्यवहारिक पदार्थ और खाद्य पदार्थ उत्पन्न कर न्यायपूर्वक व्यवहार करेंगे वह ही सुख से रहेंगे।

अब वह सात्त्विक समय भी निकट आ रहा है जब श्री प्रभु की सम्पत्ति रूप तन, धन, जन और दिमागी ज्ञान पर व्यक्तिगत अधिकार नहीं रहेगा।

प्रत्येक मानव को आनन्दमय जीवन बनाने के लिए गुण ज्ञान युक्त स्वावलम्बी, उद्योगी एवं पुरुषार्थी बनने की शिक्षा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ से ग्रहण करनी चाहिए।

श्री देश सेवार्थ प्रार्थना

श्री विश्वशान्ति आश्रम के सेवकों की शुभ अभिलाषा है कि हमारे आदर्शयुक्त श्री भवगत् आनन्द-शक्ति-दायक गुण-धन रूपी परम लाभ से कोई भी मानव वंचित न रहे। अन्यथा कामनाओं से तपायमान चिंतित-क्रोधित बालक समाज आपके सहित देश का शत्रु बनता जा रहा है। अतः बालक-बालिकाओं को आत्मिक अमृत पान कराकर उनके राजसी मनोरंजनों को शान्त कर, उन्हें आनन्द-शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए श्री विश्वशान्ति ज्ञान ग्रन्थ आपकी सेवा में अर्पण है। ॐ आनन्दमय

भाग्य और पुरुषार्थ

दुःख-अशान्ति दायक चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन व ईर्षा-द्वेषादि मानसिक रोग संग दोष के अतिरिक्त पूर्व जन्म का भाग्य नहीं।

आनन्द-शक्तिप्रद ध्यान-समाधि, प्रेम, प्रसन्नता, समता, सन्तोष आदि मानसिक निरोग्यता दायक गुण पुरुषार्थ साध्य हैं।

ब्रह्म-हत्या का ज्ञान

(श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के द्रोही बनने का ज्ञान)

प्राचीनकाल में भारत ब्रह्मविद्या के प्रभाव से श्री भगवत् आनन्द-शक्ति युक्त सर्वश्रेष्ठ गुण और ज्ञान का केन्द्र माना जाता था, किन्तु वर्तमान में सर्वथा विपरीत लक्षण युक्त है। इसका मुख्य कारण है भारत में दम्भी-पाखण्डियों को तो पण्डित-महात्मा और सच्चे महात्मा को दम्भी-पाखण्डी, सद्गुण-सदाचारी, ध्यान-समाधिमग्न श्री देव-देवांगनाओं को मूढ़ पापात्मा और दुर्गुण-दुराचारी, वाचाली को ज्ञानी-धर्मात्मा माना जा रहा है।

मानव सेवा के त्यागी ध्यान-समाधि रहित सब से कनिष्ठ महा आततायी ठगधर्मी तो पूजे जाते हैं और पूजने योग्यों की निन्दा, अपमान, तिरस्कार किया जा रहा है, इसका नाम है ब्रह्म-हत्या। जन्मना श्रेष्ठ-कनिष्ठ जाति और गुण रहित बनावटी भेष-भाषा की प्रधानता से ही वर्णाश्रम की प्रतिष्ठा करने के अपराधों का यह प्रसाद है जो आज भारतवासी उत्तम, मध्यम, कनिष्ट अर्थात सात्त्विक, राजसी व तामसी गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों की परीक्षा के ज्ञान से अनभिज्ञ हो रहे हैं।

वकील, डाक्टर, अध्यापक या साधारण सिपाही पद प्राप्त कर लेने पर वह सर्वमान्य हो जाता है अर्थात्

लोग उसको जिस पदवी का है ऐसा ही मानकर यथायोग्य व्यवहार द्वारा लाभान्वित होते हैं, किन्तु श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के सच्चे युवराज, वकील, मानसिक वैद्य-राज, आनन्दविद्या के अध्यापक, सिपाही अर्थात् समाधि-मग्न तत्त्वज्ञानी महापुरुषों के साथ तथा ध्यानमग्न आदर्श विश्वसेवकों के प्रति विभिन्न भावों से विचार तथा तामसी व्यवहार भी किया जाता है। इत्यादि कारणों से भारत-वासी हंस-बुद्धि रहित भेड़-चालयुक्त हो गए हैं। मानव की हंस-बुद्धि वही है जो राजसी-तामसी मनुष्यों का परित्याग कर श्री सात्विक समाज को ग्रहण करती है।

मानव परीक्षा के सम्बन्ध में सत्य-असत्य के ज्ञान का ह्रास होने के कारण भारत में ठगधर्मियों की चक्रान्ति युक्त दम्भ-पाखण्डमय धर्म की मर्यादा स्थापित हो रही है, जिसके भँवरजाल में फँसे हुए भारतवासी सब प्रकार से पतित होकर चिन्तित-क्रोधित भयातुर होते जा रहे हैं।

मानव सेवा के त्यागी ध्यान-समाधि रहित तामसी मनुष्यों को संन्यासी मानना, संस्कृत भाषा रटन मात्र से विद्वान मानना, प्राचीन संतों के गुणों की व्याख्या करने मात्र से गुणवान मानना, काम व लोभ वृत्ति से प्रतिमाओं को सुशोभित करते रहने से पुजारी मानना मृतक, पितरों की मुक्ति करते रहने से तीर्थ पुरोहित मानना इत्यादि क्या श्री गीता ज्ञान की मर्यादा है ?

सुख शान्ति युक्त आनन्द शक्ति दायक गुणों के ज्ञाता विद्वानों का कथन है कि श्री सज्जनों की सेवा, इन्द्रियों का संयम और ध्यान-समाधि के त्यागी पण्डित-महात्मा, वेदाचारी रावण के गुण-ज्ञान युक्त तामसी हैं। अतः काम, क्रोध, लोभ परायण पण्डे-पुजारी एवं साधु-संन्यासी तो हैं भारत नाशी।

याद रक्खें! धर्म का रास्ता दिखाने वाला यदि स्वयं चिन्ता, क्रोध, भय और रुदन करने वाला है तो उनके धार्मिक ग्रन्थों के ज्ञान से आनन्द, शान्ति तथा मुक्ति वैसे ही प्राप्त होने का विधान है जैसे एक सरकार द्रोही के ज्ञान को धारण करने से राजपद के स्थान पर जेल की प्राप्ति होने का विधान है। अतः अन्ध-श्रद्धा का त्याग न करना भी तामसी ज्ञान है। धर्म के नाम पर अन्ध-श्रद्धा-युक्त वचनों पर विश्वास करने से श्री सीता माता ने दण्ड भुगतने के लिए लङ्का में निवास किया था।

ब्रह्म-हत्या का प्रभाव

जब चोर चोरी करने जाता है तो चाँद के प्रकाश से अपने कार्य में बाधा आती देखकर सोचता है कि सूर्य-चाँद को नष्ट कर दूँ। यदि वह सूर्य-चाँद को नष्ट कर दे तो उसे स्वयं गर्मी, प्रकाश, शीत-वर्षा के बिना महाकष्ट होगा और उसके साथ-साथ प्राणी मात्र को भी समान

कष्ट होगा। ऐसे ही अपनी अज्ञानता से सद्गुण-सदाचारी ध्यान-समाधिमग्न श्री देव-देवांगनाओं को कष्ट पहुँचाने तथा उनके शरीर को नष्ट कर देने वाला स्वयं परमानन्द से वंचित रहकर जीवित अवस्था में ही महापाप रूप ब्रह्म-हत्या की भयानक ज्वाला से सब प्रकार के संकटों से पीड़ित होकर महाघोर दुःखमय, अशान्तिमय हो जायगा और मृत्यु के बाद दुःख-दायक नीच योनियों में भ्रमण करता हुआ जन्म-जन्मान्तर में महादुखी होगा, (श्री गीता अध्याय १८/३५, अ० १६/१९,२० की चेतावनी पढ़ें) और उसके साथ-साथ सम्पूर्ण जीव भी दुखी-अशान्त हो जायँगे।

क्योंकि श्री ध्यान-समाधिमग्न सात्त्विक मानवों के आदर्श गुणों के दर्शन, भाषण, स्मरण एवं अनुकरण से ही सब प्रकार से सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान युक्त आनन्द शक्ति की प्राप्ति होने का विधान है।

याद रक्खें ! ब्रह्म-हत्या पाँच प्रकार से होती है।

(१) श्री महापुरुषों के उपदेश, आदेश और आज्ञा की अवहेलना करना ब्रह्महत्या है। सावधान ! ब्रह्मज्ञानी सत्य महापुरुष कहने के पात्र वे ही मानव हैं जिनके लक्षण श्री गीता अध्याय १२/१३ से १९; २/५५ से ५९; १४/२२ से २५; १८/४२ के अनुसार हों।

(२) श्री ध्यानमग्न सात्त्विक देव-देवांगनाओं के

आचरणों का मन, वाणी, शरीर से अनुकरण न करना ब्रह्महत्या है ❀ ।

(३) श्री विश्व-हितैषी सद्गुण-सदाचारी श्री सात्त्विक मानव की निन्दा, अपमान, तिरस्कार करना एवं उनके दिव्य गुणों में दोष देखना तथा कानों से प्रेम-पूर्वक श्रवण करना ब्रह्महत्या है ।

(४) श्री दैवी-सम्पदावान् मानव के शरीर को मन, बुद्धि, वाणी एवं शरीर द्वारा कष्ट पहुँचाने का प्रयत्न करना ब्रह्महत्या है ।

(५) श्री न्यायकारी दयालु पुरुषों के शरीर को मनसा, वाचा, कर्मणा शान्त कर देना तथा शान्त होने पर हर्षित-प्रसन्न होना ब्रह्महत्या है । जैसे श्री न्यायवक्ता दयालु गाँधी जी के साथ तामसी आचरण हुआ ।

उपरोक्त ब्रह्महत्या रूप श्री प्रभु के द्रोही बनने के

❀ शंका समाधान—यदि आप श्री भगवत् अनुकूल चलने वाले सुख-शान्ति युक्त आनन्द-शक्ति दायक श्री सात्त्विक मानवों के आदर्श गुण-ज्ञान में अश्रद्धा करते हैं तो अवश्य ही ॐ आनन्दमय प्रभु के प्रतिकूल चलने वाले कामनाओं से तपायमान चिन्तित-क्रोधित राजसी-तामसी मनुष्यों के गुण-ज्ञान को धारण करने में आपकी श्रद्धा है; किन्तु राजसी कर्मों का फल दुःख-अशान्ति होने का विधान है । श्री गीता अ० २ श्लोक ६२, ६३; अ० १४ श्लोक १२, १६; अ० १६ श्लोक ७ से २१ तथा अ० १८ श्लोक ३८, ३९ में देखें ।

ाँच सूत्र पढ़ने में सुगम होते हुए भी इनका ज्ञान इतना ूढ़ है कि बारम्बार पठन-मनन करते रहने से ही समझ में आना सम्भव है।

याद रक्खें ! करोड़ों राजसी मनुष्यों का वध करने से भी अधिक पाप और विश्व में महती हानि एक श्री ध्यानमग्न सत्त्वगुणी मानव के वध करने से होती है तथा एक हजार सत्त्वगुणी का वध करने से भी अधिक हानि एक श्री प्रभु के युवराज पद दायक समाधिमग्न गुणातीत महापुरुष का वध करने से होती है। श्री प्रभु शक्ति के सन्मुख बम शक्तियाँ भी तुच्छ हैं।

इस भयानक महाघोर ब्रह्महत्या के दण्ड का विस्तार ज्ञान पृष्ठ ११५ से १२४ तक तथा पृष्ठ १३१ से १३४ तक पढ़ें।

विश्वास करें ! कीट, पतंग, सर्प, पक्षी, सियार, सुअर, कुत्ता, गधा आदि लाखों योनियों में भ्रमण करते-करते अमूल्य मनुष्य शरीर मिला है। अतः अब मनसा, वाचा, कर्मणा सावधानी से चलें। श्री विश्वपिता सबके हृदय में साक्षी के सदृश स्थित हुए हमारे कर्तव्य-अकर्तव्यों को हर समय याद दिला रहे हैं। ॐ श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु जी सर्वज्ञ और दुर्जनों के लिए न्याय-कारी हैं।

ॐ आनन्दमय

श्री नानक देव संत की चेतावनी

(श्री सुखमनी साहब से)

१—सन्त को दूषण लगाने से आयु कम होती है।

२—सन्त को दूषण लगाने से सब सुख दूर हो जाता है।

३—सन्त को दूषण लगाने से बुद्धि मलिन हो जाती है।

४—सन्त को दूषण लगाने से जीव शोभा से रहित हो जाता है।

५—सन्त के फिटकारे हुए की कोई रक्षा नहीं कर सकता।

६—सन्त को दूषण लगाने से जीव स्वस्थान् से भ्रष्ट हो जाता है।

७—सन्त को दूषण लगाने से मुख फिर जाता है।

८—सन्त को दूषण लगाने से काक सम बोलता है।

९—सन्त को दूषण लगाने से सर्प योनि पाता है।

१०—सन्त को दूषण लगाने से कीड़े आदि टेढ़ी योनि पाता है।

११—सन्त को दूषण लगाने से तृष्णा रूप अग्नि में जलता है।

१२—सन्त को दूषण लगाने वाले को हर एक जीव कपटी प्रतीत होता है।

१३—साधु को दूषण लगाने से सब प्रताप नष्ट हो जाता है।

१४—साधु को दूषण लगाने से जीव महा नीच से नीच हो जाता है।

१५—सन्त दोषी का कोई ठिकाना नहीं है।

१६—सन्त निन्दक अत्याचारी है।

१७—सन्त निन्दक क्षण मात्र भी कहीं ठहरने नहीं पाता।

१८—सन्त निन्दक महा हत्यारा है।

१९—सन्त निन्दक परमेश्वर का मारा हुआ है।

२०—सन्त निंदक तेज प्रताप से विहीन होता है।

२१—सन्त निंदक दुखी और दीन होता है।

२२—सन्त निंदक को सब रोग लगते हैं।

२३—सन्त निंदक को सदा (प्रभु से) वियोग रहता है।

२४—सन्त निंदा दोषों में सबसे बड़ा दोष है।

२५—सन्त दोषी सदा अपवित्र है।

२६—सन्त दोषी किसी का मित्र नहीं बनता।

२७—सन्त दोषी को (परमात्मा का) दण्ड लगता है।

२८—सन्त दोषी को सब त्यागते हैं।

२९—सन्त दोषी महा अहङ्कारी है।

३०—सन्त दोषी सदा विकारों में रहता है।

३१—सन्त दोषी जन्मता और मरता है।

३२—सन्त को दूषण लगाने से जीव सुख-विहीन रहता है।

३३—सन्त दोषी अर्ध बीच से टूटता है।

३४—सन्त दोषी का कोई कार्य पूर्ण नहीं होता।

३५—सन्त दोषी उद्यान में रास्ता भूले हुए की तरह भटकता है, और कुमार्ग में पड़ा रहता है।

३६—सन्त दोषी अन्दर से खाली, भाव सब गुण रहित होता है। जैसे श्वास बिन मृतक शरीर होता है।

३७—सन्त दोषी का कुछ मूल नहीं होता।

३८—सो अपने किये का फल ही भोगता है, भाव मन्द कर्मों के मन्द फल को आप भोगता है।

३९—सन्त दोषी का और कोई रक्षक नहीं है।

४०—सन्त दोषी इस प्रकार विलाप करता है, जैसे जल विहीन मछली तड़पती है।

४१—सन्त दोषी सर्वदा भूखा है तृप्त नहीं होता, जैसे अग्नि काष्ट से तृप्त नहीं होती।

४२—सन्त का दोषी इकेला ही रह जाता है। जैसे तिलों के खेत में बुआढ़ दुखी रहता है।

४३—सन्त दोषी धर्म रहित होता है।

४४—सन्त दोषी सर्वदा मिथ्या बचन बोलता है।

४५—सन्त का दोषी भ्रष्ट-मुख हो जाता है।

४६—सन्त का दोषी सदा सहकता है अर्थात् संत-दोषी

न मरता है, न जीता है, भाव अति दुखी होता है।

४७—सन्त दोषी की आशा पूर्ण नहीं होती।

४८—सन्त दोषी संसार से निराश ही उठ कर जाता है।

४९—सन्त को दूषण लगाने वाला कोई स्थिर नहीं होता।

याद रक्खें! श्री सन्त के दोखी (निन्दक) का श्री ध्यान-समाधिमग्न सन्तोषी-समतावान श्री संत के ही शरणागत होने से अर्थात् आजीवन श्री महापुरुषों के अनुकूल सेवा, स्मरण, गुणगायन करते रहने से ही प्रायश्चित होने का विधान है। अन्यथा श्री प्रभु के दण्ड से चिन्ता, क्रोध, भय और रुदन की वृद्धि होती रहेगी।

हे श्री भगवत् आनन्द-शक्ति अभिलाषी वीर-वीराङ्गनाओ! वर्तमान में कामी, क्रोधी लोभी, रावण, कालनेमी के सदृश पण्डित, महात्मा, पण्डे, पुजारी और साधु-संन्यासी कहलाने वालों में दुराचारी लोग बहुत हो गये हैं। अतः जो मनुष्य श्री सज्जनों की सेवा और ध्यान-समाधि के त्यागी तथा सहनशीलता, समता, सन्तोष आदि गुणों से रहित श्री भगवत् आनन्द शक्ति से वंचित हैं और गुरु-उपदेशक बने हुए हैं ऐसे बुद्धि के डाकू, अकर्मण्य, मुफ्तखोर लोग तो अवश्य ही जनता से निन्दा-तिरस्कार और सरकार द्वारा मृत्यु दण्ड के ही पात्र हैं। श्री प्रभु दण्ड का विस्तार ज्ञान पृ० ११५ से १३० तक पढ़ें।

ॐ आनन्दमय

संन्यासी और पण्डित शब्द का ज्ञान

श्री भगवत् आनन्द शक्ति दायक मानसिक वैद्यराज, सद्गुण-सदाचार के अध्यापक (भौतिक अहंता, ममता, आसक्ति, स्वार्थ एवं परमार्थ भाव के भी त्यागी) विशुद्ध-प्रेमी, ब्रह्मदर्शी, आत्मज्ञानी, शाश्वत् शान्तियुक्त अखण्ड आनन्द में मग्न श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद प्राप्त समाधिमग्न समतावान् महापुरुषों को ही श्री सद्ग्रंथों में 'संन्यासी' और 'पण्डित' शब्द से सम्बोधित किया है।

राज्य कार्यकर्ता महापुरुष श्री कृष्ण भगवान् स्वयं संन्यासी व पण्डित पद को प्राप्त थे और गीता में स्थान-स्थान पर श्री महापुरुष भगवान् ने मानव मात्र के लिए अपने ही समान गुण, ज्ञान व आनन्द शक्ति सम्पन्न बनने की विधि बताई है।

श्री गीता प्रमाणित संन्यासी के लक्षण निम्नलिखित हैं :--

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न कांक्षति।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ ५|३ ॥

भावार्थ—जो मानव इन्द्रियों के विषय भोग प्राप्त करने की कामना नहीं करता और ममता बुद्धि से धन-जन प्राप्त करने की तथा अहंता बुद्धि से मान, बड़ाई प्रतिष्ठा की कामना नहीं करता व विश्वसेवार्थ प्राप्त होने

पर द्वेष नहीं करता एवं प्राप्त धन, जन, यश, मान, प्रतिष्ठा आदि के नष्ट होने पर भी द्वेष नहीं करता जो हर्ष-शोक आदि द्वन्द्वों से लिपायमान नहीं है जो राजसी-तामसी मनुष्यों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों के बन्धनों से मुक्त है जो समाधि-जन्य आत्मानन्द में मग्न है। ऐसा महात्मा श्री देवी स्वरूप हो या पुरुष स्वरूप हो वही सच्चा संन्यासी कहलाने का पात्र है। इसके विपरीत लक्षणों वाले स्वाङ्गी, वाचाल, राजसी-तामसी मनुष्यों को साधु-संन्यासी न समझो।

उपरोक्त लक्षणों का विस्तार ज्ञान श्री गीता अ० १४ श्लोक २० से २५ तक गुणातीत के नाम से प्रमाणित है। अतः 'संन्यासी' शब्द गुणातीत महापुरुष का ही वाचक है।

गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः। श्री गी० २।११
पण्डिताः समदर्शिनः ५।१८।

भावार्थ—समदर्शी पण्डित धन, जनादि जो नाश हो गए हैं उनके लिए तथा जो विद्यमान हैं उनके लिए चिन्ता-शोक नहीं करते अर्थात् श्री ज्ञानवान् पण्डित अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही अवस्थाओं में निश्चिन्त और निर्भय रहते हैं। श्री प्रभु विधान से अनभिज्ञ मूर्ख लोग ही चिन्ता-शोक करते हैं। यह साधु-असाधु पण्डित-मूर्ख व नास्तिक-आस्तिक तथा धर्मात्मा-पापात्मा की पक्की पहचान है ❀।

❀ विस्तार ज्ञान श्री "ब्राह्मण पद" नामक लेखमें पृ० १४५ से प्रकाशित है।

प्राचीन काल में समदर्शी पण्डितों द्वारा शिक्षा प्राप्त कर श्री महात्मा राम और श्री कृष्ण स्वयं किस प्रकार के संन्यासी-पण्डित बने तथा उन्होंने अपने प्रिय भक्तों को कैसे पण्डित-संन्यासी बनाया इसके श्री गीता और रामायण ग्रन्थ साक्षी हैं।

वर्तमान के बनावटी संन्यासियों के लक्षण निम्नलिखित श्लोकों में प्रमाणित हैं :—

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ३|६ ॥
नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ १८|७ ॥
न निरग्निर्न चाक्रियः ॥ ६|१ ॥

इन श्लोकों के लक्षणयुक्त बनावटी साधु-संन्यासियों का जीवन श्री प्रभु के दण्ड विधान से गीता अ० १८/३५ के अनुसार तामसी हुआ है।

इन लाखों संन्यासियों के जीवन को उनके भक्तों द्वारा ही तिरस्कार कराकर श्री न्यायकारी प्रभु ने चिन्ता, क्रोध, भययुक्त दुःखमय-अशान्तिमय बना दिया है।

अब कानून के द्वारा व्यक्तिगत रूप से धन सम्पत्ति का अभाव कर मनुष्यमात्र को ज्ञान-शक्ति अनुसार सेवा कार्य करना होगा। यह सब ॐ श्री प्रभु जी के विधान से ही हो रहा है।

वर्तमान में भारत देश की जनसंख्या में संन्यासी और पण्डित पद प्राप्त केवल दो ही भगवत् स्वरूप विश्व की सेवा में विद्यमान हैं, और श्री विश्वशान्ति आश्रम की आदर्श शिक्षा द्वारा विश्व के भाग्य को उदय करने वाले ध्यान-समाधि के ज्ञाता और दाता श्री देव-देवाङ्गनाएँ तैयार हो रहे हैं।

श्री महापुरुषों के संग, सेवा, स्मरण एवं आज्ञा पालन से मनुष्य सम्पूर्ण अशान्तिदायक दुःखों से छूटकर आनन्द-शान्तिदायक श्री भगवत् युवराज पद को प्राप्त होता है। इस परमपद के अतिरिक्त आनन्द-शक्ति प्राप्त करने योग्य दूसरा बड़ा पद श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के विधान में नहीं है। ॐ आनन्दमय

असल और नकल

श्री विशुद्ध दया-प्रेमयुक्त ध्यान-समाधि के ज्ञाता और दाता समता सम्पन्न महामानव असल पण्डित व संन्यासी हैं।

निष्काम सेवायुक्त ध्यान-समाधि के त्यागी छद्मवेशधारी वाचाल मनुष्य नकल पण्डित व संन्यासी हैं **(पृ० १४५ से पढ़ें।)**

वर्ण धर्म का ज्ञान

अनादिकाल से संग, सेवा और स्मरण प्रेम के प्रभाव से मानव-जाति में चार प्रकार के भाव प्रकट होते आये हैं। जिनमें विशुद्ध-प्रेमभाव और परमार्थ भाव तो हमारे रचयिता श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा के अनुकूल हैं एवं स्वार्थभाव तथा धोकाभाव प्रतिकूल हैं। इन चारों भावों को लेकर ही मनुष्यों को क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र नामों से ज्ञानवानों ने सम्बोधित किया है।

श्री गीता शास्त्र में उक्त चार श्रेणियों के मानवों के भावों का विस्तार पूर्वक वर्णन करते हुए उन्हें सात्त्विक, राजसी, तामसी और गुणातीत नाम से भी सम्बोधित किया है।

श्री गीता प्रमाणित चार श्रेणियों के भाव निम्न-लिखित हैं:—

(१) तमः (धोकाभाव—शूद्र ❀)।

(२) रजः (स्वार्थभाव—वैश्य)।

❀ संयम, सेवा व ध्यान-समाधि रहित दम्भी-पाखण्डी बनावटी धर्मियों को और क्रोधी तामसी मनुष्यों को धोखा देना पाप नहीं। जैसे सूपनखा, बालि आदि तामसी मनुष्यों को धोखा देना श्री राम का आदर्श है।

(३) सत्त्वम् (परमार्थभाव —क्षत्रिय)।

(४) गुणातीतः (विशुद्ध प्रेमभाव—ब्राह्मण)।

इन तामसी-राजसी भावयुक्त आसुरी-सम्पदावान मनुष्यों को कनिष्ठ श्रेणी में तथा श्री सात्त्विक और गुणातीत दैवी-सम्पदावान मानव को श्रेष्ठ श्रेणी में समझा गया है।

प्रश्न—मानव की पहचान क्या है ?

उत्तर—(१) तमोगुणी (राक्षस) मनुष्य चिन्ता-क्रोध युक्त अशान्तिमय होते हैं, इनको 'शूद्र' समझें। इन महामूर्खों के लक्षण गीता अ० १४/८,१३; अ० १८/२२, २५, २८, ३२, ३५, ३९ में तामसी शब्दों से प्रमाणित हैं।

(२) रजोगुणी (असुर) मनुष्य हर्ष-शोकादि द्वन्द्वों से लिपायमान चंचल रहते हैं। इन संशययुक्त भ्रमितचित्त राजसी मनुष्यों को 'वैश्य' समझें। इन अज्ञानियों के लक्षण गीता अ० १४/७, १२; अ० १८/२१, २४, २७, ३१, ३४, ३८; में राजसी शब्दों से प्रमाणित हैं।

(३) सतोगुणी (श्री देवमानव) प्रेम-प्रसन्नतायुक्त श्री ध्यानमग्न ज्ञानवानों को असल 'क्षत्रिय' समझें। आपका आदर्श गुण गीता अ० १४/६, ११; अ० १८/-२०, २३, २६, ३०, ३३, ३६, ३७ और ४३ में सात्त्विक शब्दों से प्रमाणित है।

(४) गुणातीत (श्री महादेव) सुहृदता-समतायुक्त

श्री समाधिमग्न, आनन्दमय-शान्तिमय को असल 'ब्राह्मण' समझें। श्री आपका आदर्श जीवन गीता अ० २/५४ से ५८; १४/२१ से २५ एवं १८/४२ के लक्षणयुक्त प्रमाणित है। इस प्रकरण का विस्तार ज्ञान इसी श्री ग्रन्थ में "श्री ब्राह्मण पद" नामक लेख में पृ० १४५ से प्रकाशित है।

उपसंहार

वर्तमान की धार्मिक समाज के साधु-संन्यासी, पण्डित, पंडे, पुजारी, पुरोहित, ज्योतिषी एवं गुरु, उपदेशक व कथावाचकों में प्रायः राजसी-तामसी प्रकृति के ही लोग हैं। जिनके धार्मिक आदेश और आदर्शों के प्रभाव से भारत देश चिन्ता-क्रोध युक्त तमोगुण प्रधान हुआ है। भारत देश के 'दुःखधाम' और 'कलहधाम' होने का मुख्य कारण यही है।

अनुभवरहित कथा-वाचकों तथा गुण-रहित उपदेशकों को ही दम्भी-पाखण्डी कहा है। महापापात्मा दम्भी-पाखण्डियों के संग, सेवा और उनके बनाए हुए धर्माचरणों से मनुष्य चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन युक्त दुःखमय-अशान्तिमय बन जाता है; जैसे वर्तमान में धर्म परायण व प्रचुर मात्रा में दान-भिक्षा देने वाले राजा रंक हुए; पाकिस्तान के धनियों व जमींदारों ने विलाप किया; मकान मालिक रुदन कर रहे हैं; जीवन-बीमा की कम्पनियाँ

समाप्त हुई तथा झूठ, कपट आदि हिंसा से संग्रह की हुई शेष धन सम्पत्ति व जमीन-जायदाद भी देशगत् हो रही है इत्यादि प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्ञान करें और सावधान रहें !

(१) जिस मनुष्य का जीवन क्रोधाग्नि से तपायमान दुःखमय-अशान्तिमय है, वही असल 'शूद्र' है।

(२) जिस मनुष्य का जीवन कामनाओं से तपायमान हर्ष-शोक युक्त दुखी-अशान्त है, वही असल 'वैश्य' है।

(३) जिस श्री मानव का जीवन संयम, सेवा, स्मरण-ध्यानयोग परायण सुखी-शान्त है, वही असल 'क्षत्रिय' है।

(४) जिस श्री आनन्द-शक्ति के दाता महामानव का जीवन सुहृदता समता युक्त समाधिमग्न आनन्दमय-शान्तिमय है, वही असल 'ब्राह्मण' है।

श्री समाधिमग्न सन्तोषी-समतावान शूद्र व नारी, सभी हों पूजन के अधिकारी एवं सूपनखा, रावण जैसे तामसी पंडित-महात्मा भी हों ताड़न के अधिकारी।

सात्त्विक और राजसी-तामसी मर्यादा का ज्ञान

सात्त्विक ज्ञान की मर्यादा अनुसार सद्गुण-सदाचार युक्त श्री प्रभु आनन्द शक्ति सम्पन्न मानव को श्रेष्ठ मानने का विधान है।

राजसी ज्ञान की मर्यादा अनुसार दूर देशी लोग भौतिक ज्ञान-शक्ति अनुसार मानव को श्रेष्ठ मानते हैं।

तामसी ज्ञान की मर्यादा अनुसार जन्म से वैश्य धन का स्वामी तथा जन्म से क्षत्री शासन के अधिपति और जन्म से ब्राह्मण पूजन के अधिकारी एवं जन्म से शूद्र और नारी ताड़न के अधिकारी मानने की प्रथा अति हिंसात्मक है।

ज्ञान करें! अब श्री न्यायकारी प्रभु जी ने राज्य-अधिकारियों को भारत देश की तामसी मर्यादाओं का अन्त करने की ज्ञान-शक्ति प्रदान की है।

सर्वज्ञ न्यायकारी श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु का अटल विधान है कि मनुष्य जैसे भाव वाले व्यक्ति का संग, सेवा, स्मरण-प्रेम व आज्ञापालन करेगा, वह भी उसी के सदृश बनता जायगा। अतः जीवन में सुख, शान्ति व आनन्द शक्ति के अभिलाषी श्रद्धालु मानवों का परम कर्त्तव्य है कि वे प्रेम-प्रसन्नतायुक्त (श्री ध्यानमग्न) व श्री समता-संतोषयुक्त (समाधिमग्न) श्री महापुरुषों के ही आदर्शयुक्त आदेशों को धारण करें। चिन्तित-क्रोधित व हर्ष-शोकादि से लिपायमान संक्रामक मानसिक रोगी मनुष्यों के आदर्शों का सर्वथा त्याग कर दें अन्यथा आपका तथा आपकी सन्तानों का जीवन दुःखमय-अशान्तिमय ही बनता जायगा। आगे जैसी आपकी श्रद्धा

हो, वैसा ही करें। अनुभवी महानुभावों के साथ कुतर्क-वितण्डावाद करना तो तामसी आचरण अर्थात् महान 'ब्रह्महत्या' पाप है, और अनुभव रहित उपदेश देना भी महापाप है।

अपने हृदय में वैर, द्वेष और क्रोध की ज्वाला प्रज्वलित हो रही है तो समझ लें कि हृदयस्थ सर्वज्ञ अन्तर्यामी श्री न्यायकारी प्रभु का मुझ पर यह महान कोप-दण्ड है और यदि कामना ईर्षा दायक राजसी संकल्प-विकल्प मथन कर रहे हैं तो समझ लें कि मुझ पर श्री प्रभु पिता कुपित हैं।

ॐ आनन्दमय

विद्वान और मूर्ख

ब्राह्मण, क्षत्रिय शब्द आध्यात्मिक आनन्द-शक्ति के उपासक विद्वानों की उपाधि है। वैश्य, शूद्र शब्द भौतिक आनन्द-शक्ति के उपासक अविद्वानों की उपाधि है। इसके विपरीत जन्मना जाति-वर्ण काल्पनिक धर्म हैं (पृ० ११५ से १४५ तक पढ़ें)।

श्री ब्राह्मण-पद का ज्ञान

(ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः)

जो श्रद्धालु मानव ध्यान-समाधिदायक सन्तोषी-समतावान तत्त्वदर्शी महापुरुषों की शरण ग्रहण कर उनके आदेशानुसार श्री गीता अ० १३।७ से ११ और अ० १८।५० से ५५ तक में वर्णित कर्मयोग (सेवायोग), ध्यानयोग, समाधियोग (ज्ञानयोग) द्वारा उक्त सात्त्विक गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों का अनुष्ठान करता है वह महामानव ब्रह्म साक्षात्कार व आत्मबोधयुक्त अपने गुणातीत आनन्दमय-शान्तिमय स्वरूप का अनुभव कर स्वयं आनन्द-स्वरूप बन जाता है ।

श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद प्राप्त महापुरुषों को ब्राह्मण नाम से सम्बोधित किया है- (ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः) । वही महामानव 'ब्राह्मण' कहलाने का पात्र है जिसके संग, सेवा, स्मरण व आज्ञापालन से दुःख-अशान्तिमूलक चिन्ता-क्रोध आदि समस्त मानसिक रोगों की प्रतिदिन निवृत्ति होने का तथा भगवत् ध्यान-आनन्द शक्तियुक्त सुख-शान्ति की वृद्धि होने का अनुभव हो ।

श्री 'ब्राह्मण पद' प्राप्त महामानव के लक्षण अर्थात् गुण, ज्ञान, भाव, आचरण श्री गीता अ० १८।४२ में प्रमाणित हैं।

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।

शमः—शमः शब्द समता का वाचक है। द्वन्द्वों में समचित रहने का नाम समता है। सेवायोग, ध्यानयोग, समाधियोग का अभ्यास करते-करते जब बिना कष्ट के श्री प्रभु शक्ति के बल पर आनन्द-शान्तिपूर्वक नेत्र बन्द, पलक शान्त, शरीर-इन्द्रिय बिना हिले-डुले, मन विक्षेप व निद्रा-आलस्य रहित छः-आठ घन्टा लगातार स्थिर आसन से आत्मस्मरण परायण समाधिमग्न बैठ सके तथा दिन-रात के चौबीस घन्टों में से सोलह घंटे सुखपूर्वक ध्यानावस्थित रहने की शक्ति प्राप्त हो जाय।

व्यवहार-काल में मन, बुद्धि तथा इन्द्रियों के साथ नानात्व अनुकूल-प्रतिकूल संघर्षण होते रहने पर भी कामना-क्रोध, राग-द्वेष, हर्ष-शोकादि द्वन्द्वों से रहित निर्विकार रहे और हृदय में विलक्षण आनन्द व परम शान्ति सदा-सर्वदा बनी रहे।

अपने आनन्दमय आत्म स्वरूप का अनन्त, अपार, असीम अर्थात् समष्टि चेतन ब्रह्म में अभेद भावयुक्त ज्ञान हो जाय तब समझना चाहिए कि 'शमः' गुण की अनुभव

सिद्धि प्राप्त हुई है।

समता सिद्धि के पश्चात् आनन्द-शान्ति व मुक्ति-दायक ज्ञान और शक्ति प्राप्त करने की कामना पूर्ण होने का विधान है।

स्मृति रहे! समता सिद्धि के पूर्व यदि साधक श्री महापुरुषों के ध्येय के अनुसार साधनों का त्याग कर दे तो हृदय में नाराजी-दायक संकल्प-विकल्पों की वृद्धि हो कर पुनः इच्छा-द्वेषयुक्त चिन्ता-क्रोध की जाग्रति होनी सम्भव है।

दमः—दमः शब्द इन्द्रियों को दमन करने का वाचक है। श्री महापुरुष देव के अनुगत इन्द्रियों के संयमयुक्त निष्काम भावपूर्वक सेवा और श्री नाम रूप के स्मरण-ध्यान का अभ्यास दीर्घकाल तक करते रहने से कान, उपस्थ (ब्रह्मचर्य), नेत्र, त्वचा, रसना, नासिका और वाणी, इन सात इन्द्रियों पर विजय प्राप्त होने का विधान है।

इन्द्रियाँ पूर्णरूप से निग्रहीत और विषयों के रसास्वाद से रहित हो जायँ अर्थात् विश्व के समस्त दर्शन-श्रवण जनित भोग्य पदार्थों की तृष्णा और आसक्ति का अत्यन्त अभाव हो जाय एवं सम्पूर्ण इन्द्रियों से जगत के नाना अनुकूल-प्रतिकूल प्राणी-पदार्थ तथा भोग सामग्रियों के संयोग-वियोग होने पर भी हृदय में इच्छा-द्वेष, हर्ष-

शोकादि विकार न हों।

अन्तःकरण के भाव सर्वथा कामशून्य सन्तोषमय हो जायँ, इन्द्रियाँ हर समय सात्त्विक आहार-व्यवहार में ही प्रवृत्त रहें, तब समझना चाहिए कि 'दमः' गुण की अनुभव-सिद्धि प्राप्त हुई है।

स्मृति रहे! स्वेच्छाचारी इन्द्रियाँ दिमाग की शत्रु हैं और स्वाधीन इन्द्रियाँ दिमाग की मित्र हैं। यह ॐ श्री प्रभु जी का विधान है।

तपः—तपः गुण सेवा का वाचक है। श्री गुरु भगवान के आदेशानुसार निष्काम भावपूर्वक श्री ध्यानमग्न सज्जनों की सेवा में रत रहना और यथा ज्ञान-शक्ति राजसी मनुष्यों को सज्जन बनाने में प्रयत्नशील रहना तपः गुण का मुख्य अंग है।

यथा ज्ञान-शक्ति न्याय-व्यवहार पूर्वक धनादि पदार्थों की आय करना और उक्त पदार्थों को श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की सम्पत्ति समझना तथा निष्काम भाव पूर्वक भगवत् बुद्धि से सुयोग्य पात्रों की सेवा में व्यय करते रहना, तू-तेरा और मैं-मेरा के भावों से रहित होकर अपने हृदय को दया, प्रेम, न्याय आदि गुणों से युक्त बना लेना। अपने शारीरिक आहार-विहार में अनावश्यक व्यय न करना।

समय परिस्थिति के अनुसार कोई भी ऊँच-नीच

सेवा-कार्य प्राप्त होने पर यथा-शक्ति उत्साहपूर्वक प्रवृत्त हो जाना तथा लाभ-हानि में राग-द्वेष, हर्ष-शोकादि विकारों से रहित होकर, प्रेम-प्रसन्नतापूर्वक सेवा-कार्य में संलग्न रहने का स्वभाव बना लेना।

स्मृति रहे! अहं भाव के त्याग पूर्वक प्रत्येक सेवा-कार्य करते हुए चराचर अर्थात् जड़-चेतन में श्री भगवत् भाव की जाग्रति रहे, तथा श्री महात्मा व श्री परमात्मा-देव के नाम का जप, स्वरूप की स्मृति हर समय बनी रहे, तब समझना चाहिये कि सात्त्विक 'तपः' (सेवा) गुण की सिद्धि प्राप्त हुई है।

विशेष स्मृति रहे!

केवल ध्यान-काल में जो श्री प्रभु जी आनन्द-शान्ति-युक्त शक्ति का अनुभव कराते हैं वह पूर्ण व स्थायी नहीं है। साधारण ध्यान तो विशेष कर अपनी और अन्य दार्शनिकों की श्रद्धा-प्रेम की वृद्धि कराने वाला है। परन्तु दैनिक ध्यानयोग के अभ्यास के साथ-साथ निष्काम-सेवा द्वारा जो आनन्द-शान्ति का विकास होता है वह शीघ्र ही पूर्ण व स्थायी आनन्द-शक्ति की सिद्धि कराने वाला है।

निष्काम-सेवा के आनन्द की सिद्धि उस समय प्रारम्भ होती है जब कि साधक समस्त राजसी-तामसी नामक मानसिक रोगों के संकल्पों को हृदय से त्यागता हुआ केवल सात्त्विक संकल्पों को ही धारण करता हुआ

सब प्रकार के करने योग्य शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक सेवा कार्य करता है। निष्काम-सेवा का तत्त्व श्रद्धा-प्रेम की कमी के कारण ही गहन प्रतीत होता है परन्तु यथा ज्ञान-शक्ति महापुरुषों के अनुकूल संग, सेवा और जप-ध्यान, स्वाध्याय का अभ्यास करते-करते समझ में आता रहता है।

शौचम्—शौचम् गुण भीतरी-बाहिरी पवित्रता का वाचक है। अज्ञानियों के ज्ञान द्वारा प्राप्त दुःख-अशान्ति-दायक भौतिक अहंता, ममता, आसक्ति, कामना की सिद्धि हेतु दम्भ, धोखा, झूट, कपट, चोरी, ईर्षा, द्वेषादि पापमय दुर्गुण-दुराचारों को धारण कर उनके परिणाम स्वरूप चिन्ता, क्रोध, भय, रुदनादि मानसिक रोगों द्वारा दण्ड भोगते रहना यह भीतरी अपवित्रता है। इन समस्त मानसिक रोगों से हृदय का परिशुद्ध हो जाना अर्थात् हर्ष-शोकादि पापमय कलुषित भावों से रहित होकर हृदय का पूर्णरूप निर्मल हो जाना, प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति' अ० १८/५४ यह भीतरी पवित्रता की सिद्धि है।

शरीर, वस्त्र, स्थान और पदार्थों में आडम्बर रहित स्वच्छता एवं सात्त्विक आहार यह बाहिरी शरीर की पवित्रता है।

सम्पर्क में रहने वाले व आगन्तुक प्रेमियों में भगवत् बुद्धियुक्त निष्काम भावपूर्वक प्रेम-प्रसन्नता के साथ सत्य,

हित, प्रिय वचनों द्वारा सात्त्विक व्यवहार हो यह सामाजिक पवित्रता है।

श्री सरकार की मर्यादायुक्त अर्थात् न्याय-व्यवहार पूर्वक यथा ज्ञान-शक्ति शारीरिक व दिमागी श्रम द्वारा आर्थिक आय करते हुए श्री महापुरुषों की मर्यादानुसार सत्य-व्यवहार में व्यय करते रहना यह धनादि पदार्थों की पवित्रता है।

उपरोक्त शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक गुण, ज्ञान, भाव, आचरण श्रद्धा-प्रेम पूर्वक स्वभाव सिद्ध धारण हो जाएँ तब समझें कि 'शौचम्' गुण की सिद्धि प्राप्त हुई है।

क्षान्तिः—क्षान्ति क्षमा का वाचक है। अन्य के अपराधों को अपराध ही न मानना क्षमा का प्रथम अर्थ है और अपने अज्ञान द्वारा किए हुए अपराधों के लिए उक्त मानव से क्षमा प्रार्थना करना, क्षमा का दूसरा अर्थ है।

हमने यथा ज्ञान-शक्ति किसी का हित किया परन्तु वह नाराज हो गया उस समय अपनी ओर से क्षमा-प्रार्थना करनी अपने लिए हितकर है।

अपराध किसी और ने किया और क्षमा प्रार्थना हमने की यह सदाचार विशेष सात्त्विक है। स्मृति रहे! गुण-धन ही दिव्य भूषण है परन्तु आकाशी मौसम और तामसी प्राणियों के सन्मुख पाषाणवत् रहना भी वर्जित है।

गुणों के प्रयोग की व्याख्या पूर्ण रूप से ग्रन्थों में प्रकाशित होनी सम्भव नहीं। ध्यानयोग अभ्यासी मानव के हृदय में तो यथा समय सात्त्विक समाधान होना सम्भव है परन्तु साधारण श्रेणी के साधक श्री गुणवानों के आदेशानुसार गुण-धन का संचय करें।

सर्वत्र भगवत् दर्शन का अभ्यास करने वाले निष्काम-सेवा परायण श्री ध्यानमग्न सत्त्वगुणी मानव क्रोध को सहन करने में समर्थ होते हैं किन्तु गुणातीत श्री ब्राह्मण देव का हृदय तो सर्वथा परिशुद्ध होने के कारण दुर्जनों के साथ नानात्व होते हुए भी उनके हृदय में अपराध करने वालों के प्रति वैर-द्वेष के भाव नहीं होते क्योंकि तामसीजन श्री सात्त्विक मानव के साथ दुरव्यवहार कर उनका विकास और अपना पतन करते हैं। यह परम्परा का इतिहास है।

स्मृति रहे! श्री सात्त्विक मानवों की निन्दा-अपमानादि करने वाले एवं निरअपराधी राजसी मनुष्यों को कष्ट पहुँचाने वाले ब्रह्महत्यारों को श्री न्यायकारी विश्व-पिता आनन्दमय प्रभु जी द्वारा प्रत्यक्ष में शारीरिक, आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक पांचों प्रकार से दण्ड प्राप्त होने का विधान है। तथा जन्मान्तर में नाना योनियों द्वारा महाघोर दण्ड मिलता है।

यदि अपराधी हृदय से उक्त मानवों के प्रति उचित

क्षमा प्रार्थना कर ले तो उनके अपराधों का प्रायश्चित होने का विधान है अर्थात् श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु जी द्वारा दण्ड प्राप्त नहीं होता।

जन्मभर के समस्त पापों से मुक्त होने का विधान है—श्री महापुरुषों की शरणागति! अर्थात् इस श्लोक में वर्णित श्री ब्राह्मण-पद प्राप्त महापुरुषदेव की द्वादश भक्ति करने से अतिशय दुराचारी (महाक्रोधी) मनुष्य भी समस्त पापों से मुक्त होकर समता सम्पन्न होने का अधिकारी हो जाता है। श्री महापुरुषों की शरण ग्रहण किए बिना सर्वज्ञ श्री प्रभु जी के न्याय विधानों द्वारा चिन्ता, क्रोध, भय, रुदनप्रद 'मानसिक वाणों' के दण्ड से कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता।

स्मृति रहे! श्री महापुरुषों में क्षमा व समता की पराकाष्ठा होते हुए भी जगतका अनिष्ट करने वाले दम्भी-पाखण्डी (ठगधर्मियों) को और ताड़का, सूपनखा, बाली, रावण और दुर्योधन जैसे दुर्जनों को न्यायधीश-बुद्धि से अथवा डाक्टर-बुद्धि से दण्ड देना व दिलाना निषेध नहीं अपितु आवश्यक समझते हैं।

श्री गीता ग्रन्थ का आदेश है कि यथा ज्ञान-शक्ति आततायी तामसी प्राणियों का विनाश न करना पाप है और वध करना 'धर्मयज्ञ' है, विनाशाय च दुष्कृताम् ४।८

अर्थात् दूषित कर्म करने वालों का विनाश करना न्याय धर्म है ❀ ।

उपरोक्त विधि अनुसार गुण-ज्ञान को लक्ष्य में रखते हुए अपराधियों के अपराधों को न मानने का स्वभाव-सिद्ध अनुभव होता रहे तब समझें कि 'क्षमा' गुण तत्त्व का ज्ञान हुआ है ।

आर्जवम्—मन, इन्द्रियाँ व शरीर की सरलता का नाम आर्जवम् है । मन में किसी प्रकार के दाँव-पेच, अकड़, दुराग्रह, कुटिलता, वक्रता, चंचलता आदि दोषों का सर्वथा अभाव हो जाना, यह मानसिक सरलता है ।

जैसा मन का भाव हो, वैसा ही वाणी द्वारा प्रकट करना तथा इन्द्रियों में चपलता का न होना, यह इन्द्रियों की सरलता है। शरीर में भी किसी प्रकार की ऐंठ का न होना तथा अभिमान रहित कोमल, सरल व्यवहार हो, यह शरीर की सरलता है ।

उपरोक्त लक्षणयुक्त मनसा, वाचा, कर्मणा स्वभाव-सिद्ध सात्त्विक व्यवहार हो तब समझें की 'आर्जवम्' गुण सिद्धि का ज्ञान हुआ है ।

❀ हिंसक मनुष्यों का वध व अन्य हिंसक प्राणियों का विनाश करना हिंसा नहीं अपितु हिंसा रूप रोग की चिकित्सा करना है । अर्थात् हिंसा के अन्त करने का साधन है ।

स्मृति रहे ! वर्तमान की राज्य मर्यादा के विरुद्ध किसी प्राणी को स्वयं दण्ड नहीं देना है ।

ज्ञानम्—ज्ञानम् शब्द ॐ श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के विधान को और सर्वव्यापी सर्वज्ञ स्वरूप को प्रत्यक्षवत् जानने का वाचक है। श्री प्रभु के विधान की और स्वरूप की व्याख्या निम्नलिखित है।

(क) तामसी मनुष्यों के ज्ञान के लक्षण व परिणाम—अति निद्रा, आलस्य, प्रमाद, झूट, कपट, धोखा, बेईमानी, चोरी, डकैती, अभक्ष्य भक्षण आदि हिंसामय कर्मों के दण्ड स्वरूप तामसी मनुष्यों का जीवन चिन्ता, क्रोध, भय, रुदन-युक्त महादुःखमय अशान्तिमय होने के विधान का प्रत्यक्षवत् ज्ञान हो।

(ख) राजसी मनुष्यों के ज्ञान के लक्षण व परिणाम—आनन्द-शक्ति की अभिलाषा से भौतिक अहंता, सीमित ममता व कामना-आसक्ति युक्त स्त्री, पति, कुटुम्ब एवं सन्तानों के मोहजाल में फँसकर उनकी रक्षा-वृद्धि हेतु, धन, भवन, जमीन आदि पदार्थों का संग्रह करते रहना तथा इन्द्रियों के भोग भोगने में तथा ऐश आराम में ही आनन्द मान लेना इत्यादि राजसी कर्मों के परिणाम में क्रमशः शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक सामाजिक पांचों प्रकार की चिन्ताओं से पीड़ित होकर राजसी मनुष्यों का जीवन दुःखी-अशान्त होने के विधान का प्रत्यक्षवत् ज्ञान हो।

(ग) श्री सात्त्विक मानव के ज्ञान के लक्षण व परिणाम—उपरोक्त राजसी-तामसी मनुष्यों के गुण, ज्ञान,

भाव, आचरणों से सर्वथा वैराग्य कर श्री ब्राह्मण-पद प्राप्त महापुरुषों का संग, सेवा, शुश्रूषा, स्मरण-ध्यान, अनुकरण और आज्ञापालन करने के फल-स्वरूप साधक का जीवन श्री प्रभु शक्तिदायक गुण-धन सम्पन्न आनन्दमय-शान्तिमय होने के विधान का प्रत्यक्षवत् ज्ञान हो।

तामसी, राजसी, सात्त्विक विधान के अतिरिक्त स्थूल, सूक्ष्म, कारण और महाकारण शरीर की उत्पत्ति, स्थिति, विनाश का ज्ञान हो।

स्मृति रहे! जैसे-जैसे साधक अपने हृदय में सात्त्विक गुण धारण करता है वैसे-वैसे ही सुख-शान्तियुक्त आनन्द-शक्ति का विकास होता है, यह असल ब्राह्मण-देव की प्रेम-भक्ति का प्रसाद है।

श्री ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के लक्षण और उन्हें प्राप्त आनन्द-शक्ति के प्रभाव का विस्तार ज्ञान गीता अ० ३/१७; ५/१६ से २६; ६/१८ से २२ व २७ से ३२ में प्रकाशित है।

(घ) समस्त चराचर प्राणियों में अद्वितीय, अविनाशी, निर्विकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान, ज्ञानस्वरूप श्री आनन्दमय प्रभु को समभाव से व्याप्त देखने और स्वयं अपने को अविनाशी श्री आनन्दमय प्रभु से अभिन्न समझने का ज्ञान हो।

ध्यान-समाधि द्वारा ब्रह्मसाक्षात्कार युक्त परमात्मा-आत्मा (जीव-ब्रह्म) की एकता का संशय रहित अनुभव

ज्ञान अपने हृदय से ही हो जाय तब समझें कि 'ज्ञानम्' सिद्धि की प्राप्ति हुई है ❀।

विज्ञानम्—विज्ञानम् शब्द आत्मज्ञान का वाचक है। आत्मा नित्य, चेतन, निर्विकार और अविनाशी है इससे भिन्न स्थूल और सूक्ष्म (दृश्य-अदृश्य) जो कुछ भी प्रतीत होता है, वह नाशवान, जड़, विकारी और परिवर्तनशील एवं अनात्मा है। आत्मा के साथ इनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। अपने आत्म-स्वरूप को देह और संसार से सर्वथा असंग, निर्विकार, नित्य और अनन्त, अपार, असीम समझ कर जन्म से अब तब किये हुए शुभाशुभ कर्म-बन्धन से सदा के लिए मुक्त एवं अखण्ड आनन्द में मग्न हो जाना।

इस प्रकार आत्म-तत्त्व को भली-भाँति समझ लेना और चित्त में नित्य-निरन्तर अमृतमय आत्म-तत्त्व का ही चिन्तन होते रहना, ऐसा अनुभव स्वभाव सिद्ध हो जाए अर्थात् आत्मा का संशयरहित अपरोक्ष ज्ञान हो जाय तब समझना चाहिए कि 'विज्ञानम्' पद की सिद्धि प्राप्त हुई है।

❀ स्मृति रहे ! स्थूल शरीर को स्वस्थ रखने की विद्या इस अध्यात्म विद्या से भिन्न है। अतः शरीर सम्बन्धी ज्ञान का श्रवण-पठन करते रहना तथा रोगावस्था में उचित चिकित्सा कराते रहना भी आवश्यक है।

आस्तिक्यम्—भावार्थ से आस्तिक-भाव श्रद्धा का वाचक है । जो इस श्लोक में वर्णित श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की सम्पत्ति रूप गुण-धन को संग्रह करता है वह ज्ञानवान मानव आस्तिक है और जो भौतिक अहंता-ममता दायक कामनाओं से तपायमान चिन्ता-क्रोधयुक्त भयातुर रहता है वह अज्ञानी मनुष्य नास्तिक है ।

ब्रह्मकर्म—भावार्थ से ब्रह्मकर्म ब्रह्म के आदर्श गुणों का द्योतक है। ॐ श्री प्रभु जी स्वयं न्याय, दया और प्रेम पूर्वक जीवमात्र के हित के लिए सतत प्रवृत्त रहते हैं । उसी भाव से सर्वभूत प्राणियों के हित में यथा शक्ति रत्त रहने का मानव मात्र के प्रति आदेश है । श्री समता सम्पन्न समदर्शी ब्राह्मणदेव के मन, बुद्धि, इन्द्रियों द्वारा जो कुछ स्वभाविक कर्म होता है वह केवल समष्टि चेतन ब्रह्म की प्रेरणा से व श्री ब्रह्म के ही आदर्श गुणों से युक्त विशुद्ध प्रेम भाव से होता है । उन दिव्य कर्मों से सम्पूर्ण जीवों का परमहित होने का विधान है ।

राजसी-तामसी प्रकृति के देवियां-पुरुष आन्तरिक आनन्द-शक्तिदायक ज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण अपनी सन्तानों को अपने ही सदृश कनिष्ट भाव-आचरणों की शिक्षा देकर उनका जीवन भी चिन्ता-क्रोधयुक्त दुःखी-अशान्त बना देते हैं । ऐसे दुःखी-अशान्त मनुष्यों को दुस्तर मायाजाल से मुक्त कर श्री भगवत् आनन्द-पद परायण

करते रहना ब्रह्मवेत्ताओं की स्वभाविक चेष्टा होती है। यह भी 'ब्रह्मकर्म' का भावार्थ है। ब्रह्म का साक्षात्कार होने से ही 'ब्रह्मकर्म' के तत्त्व रहस्य का ज्ञान होता है।

तामसी, राजसी, सात्त्विक और गुणातीत इन चार प्रकार के मानवों द्वारा चार ही प्रकार के भावों से भावित विभिन्न कर्म होते हैं जैसे—

तामसी मनुष्यों के कर्म धोखे-भाव पूर्वक होते हैं और राजसी मनुष्यों के कर्म स्वार्थ-भाव पूर्वक होते हैं, श्री सात्त्विक मानव के कर्म श्री भगवत्-बुद्धियुक्त परमार्थ भावपूर्वक होते हैं और श्री गुणातीत महापुरुषों के कर्म विशुद्ध-प्रेमभाव (आत्मभाव) युक्त होते हैं।

स्मृति रहे ! श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के विधान में तामसी मनुष्य डाकू की गणना में है, राजसी मनुष्य चोर की गणना में हैं, सात्त्विक मानव पदाधीश हैं और श्री गुणातीत महापुरुष श्री प्रभु पिता के युवराज हैं।

याद रक्खें ! तामसी मनुष्यों को ॐ श्री दण्डदायक प्रभु जी क्रोधाग्नि से उबालते हैं। राजसी मनुष्यों के हृदय में श्री न्यायकारी प्रभु जी चिन्ताग्नि प्रज्वलित रखते हैं। श्री सात्त्विक मानव को ॐश्री दयामय प्रभु जी ध्यान-जनित आनन्द-शान्ति प्रदान करते हुए सदा-सर्वदा प्रसन्न रखते हैं। श्री गुणातीत महापुरुष ॐ श्री प्रेममय प्रभु जी का आनन्द-शक्ति सम्पन्न 'समता' स्वरूप है।

स्वभावजम्—स्वभावजम् शब्द स्वभाविक गुणयुक्त क्रिया का वाचक है। उपरोक्त दस सूत्रों की जो व्याख्या की है उन सात्त्विक गुण, ज्ञान, भाव आचरणों के धारण करने का सहज स्वभाव हो जाय।

भीतरी-बाहिरी दोनों शरीरों से होने वाले सम्पूर्ण कर्म सीमित अहंता, ममता, आसक्ति, कामनाओं के संकल्पों के त्याग पूर्वक 'मैं-कर्ता' और 'मैं-भोक्ता' के अभिमान से रहित व्यापक अहंता व व्यापक ममता भाव से ज्ञान पूर्ण हों।

विश्व से धन, जन, मान-बड़ाई, सेवा, पूजा, प्रतिष्ठा के प्राप्त होने व न होने पर तथा नष्ट होने पर अथवा प्रतिकूल प्राप्त होने पर न ग्रहण और न त्याग की इच्छा हो। प्रत्येक परिस्थित में लोभ, भय, राग, द्वेष, हर्ष, शोकादि द्वन्द्वों से रहित हृदय को सम, शान्त व प्रसन्न रखते हुए कुशलता पूर्वक प्राप्त ज्ञान-शक्ति द्वारा 'सर्वभूतहिते रताः' अथवा 'सुहृदम् सर्वभूतानाम्' गुणयुक्त स्वभाविक सेवा हो इत्यादि 'स्वभावजम्' गुण स्थिति के लक्षण हैं।

एव—एव शब्द निश्चय का बोधक है। श्री महापुरुष भगवान् का कथन है कि यह विलक्षण स्थिति पुरुषार्थ के बल पर अवश्य होती है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। इस 'ब्राह्मण पद' को प्राप्त करने के अधिकारी पुरुषार्थशील बालक-बालिका अथवा देवियाँ-पुरुष सभी मानव हैं।

विश्व की मानव समाज में जो श्री भगवती देवियाँ व श्रीमान पुरुष उपरोक्त दस सूत्रों में वर्णित गुण, ज्ञान, भाव, आचरण युक्त हैं वह 'ब्राह्मण पद' प्राप्त हैं। शास्त्रों में इस परमपद प्राप्त महापुरुषों को संत, ब्राह्मण, संन्यासी, महात्मा, पण्डित, भगवान्, ब्रह्मवेत्ता, मर्यादा-पुरुषोत्तम, महाराज, मानसिक वैद्यराज, स्वामी जी आदि नामों से सम्बोधित किया है।

स्मृति रहे ! आत्म तत्त्वज्ञ समदर्शी श्री ब्राह्मण देव अपने में जन्म से श्रेष्ठ ब्राह्मण और शास्त्र रटन से पण्डित होने का अभिमान नहीं रखता।

सावधान ! उपरोक्त लक्षण जब तक पूर्णतया अपने हृदय में धारण न हों तब तक साधक श्री गुरु भगवान के अनुगत संग, सेवा व जप-ध्यान करने की अवहेलना अथवा त्याग न करे अन्यथा पुनः अहंता-ममता प्रद इच्छा-द्वेष की जाग्रति होनी सम्भव है।

अन्तिम स्थिति होने पर ध्यान-समाधि करने की कामना-आसक्ति नहीं रहती किन्तु लोक दर्शनार्थ यथा समय ध्यान-समाधि (मौन-सेवा) का प्रदर्शन होता रहता है।

स्मृति रहे ! कामनाओं से तपायमान चिन्तित मनुष्यों का संग, सेवा आज्ञापालन करने वाला चिन्तित तथा क्रोधी मनुष्यों का संग, सेवा, आज्ञापालन करने वाला क्रोधी होने का विधान है और पुनः प्रसन्नचित्त श्री

ध्यानमग्न मानव के संग, सेवा, आज्ञापालन से चित्त ध्यानमग्न होने का विधान है। इसी प्रकार चिन्तित और क्रोधित मनुष्यों से वैराग्य कर श्री समता सम्पन्न महापुरुषों के आदेशानुसार संग, सेवा और स्मरण-ध्यान करने के अभ्यास से आनन्द-शक्ति सम्पन्न होने का विधान है।

श्री भगवत् पद दायक सद्गुण सम्पन्न सदाचारी बनने के बालक-बालिकाएँ विशेष पात्र हैं।

श्री गीता अ० १८।४२ के आदर्श युक्त गुण-ज्ञान के त्यागी कामी-क्रोधी पण्डित-संन्यासियों की प्रतिष्ठा के कारण श्री भगवत्-आनन्द-शक्तिदायक सर्वश्रेष्ठ 'मानसिक-चिकित्सा' की शिक्षा लुप्त हुई है और तामसी मनुष्यों को यश-मान, प्रतिष्ठा व भिक्षा-दान देते रहने के दण्ड स्वरूप भारत देश के मानव तामसी बुद्धि युक्त दुर्गुण-दुराचारों को धारण कर चिन्तित-क्रोधित व भयातुर हैं।

जो मनुष्य दो-चार घन्टा भी नेत्र बन्द करके मानसिक शान्तिपूर्वक जप-ध्यान करने में असमर्थ हैं उनके मुखार्विन्दों से श्रवण किया हुआ धार्मिक ज्ञान व मंत्र जाली सिक्का मात्र है। उन स्वाङ्गी वाचाल मनुष्यों को पण्डित-महात्मा और ज्ञानी भक्त न समझ कर श्री प्रभु के जेल निवासी राजसी-तामसी मनुष्य समझें।

ध्यान-समाधि रहित मनुष्यों से प्रेम करना चिन्ता-

क्रोध की अग्नि में उबलते रहने का साधन है यह ॐ श्री आनन्दमय प्रभु जी का अनादि सिद्ध न्याय विधान है।

श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित संयम-सेवा परायण भजनानन्दी चौबीस घन्टों में एक घन्टे से लेकर बारह घन्टे तक श्री ध्यान-समाधिमग्न रहने वाले सैकड़ों ही श्री भगवती देवियां व श्रीमान पुरुष और कम आयु के बालक-बालिकाएँ आपकी सेवामें विद्यमान हैं। श्री ध्यानमग्न विश्व सेवक ही अधःपतित भारत का पुनः भाग्य उदय करने में समर्थ हैं। आनन्द-शान्ति दायक श्री ध्यानमग्न मानव से वैराग्य करना अपने पतन का साधन है।

दिमागी शान्ति प्रद ध्यान-आनन्द की अभिलाषा से आप श्री ध्यानमग्न मानव द्वारा बतलाई हुई विधि अनुसार केवल चार ही दिन ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र का जप और उनके मुखारविन्द से ज्ञान श्रवण करें आपको प्रतिदिन आनन्द-शान्तिदायक श्री प्रभु शक्ति का अनुभव होगा। श्री ग्रन्थ नियमावली आंशिक ज्ञान के पृ० ६ पर प्रकाशित है। उक्त सात नियमों के अनुसार साधन करने से आपका ध्यान शीघ्र लगेगा।

श्री ब्राह्मणपद अभिलाषी मानव इस गुण-प्रद दिव्य ज्ञान का प्रतिमाह मनन-विचार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

ॐ आनन्दमय

श्री विश्व पिता के न्याय और प्रेम का ज्ञान

विश्व के सात्त्विक, राजस और तामस गुणों से युक्त छः प्रकार के मानवों के लक्षण निम्नलिखित हैं।

(१) श्री सात्त्विक मानव के लक्षण

सादगीयुक्त इन्द्रिय-संयमी, सेवामय (दुर्जनों के दण्ड में वीर व दक्ष एवं श्री सज्जनों की सेवा में रत व सज्जन बनाने में प्रयत्नशील) तथा स्मरण-ध्यान समाधि के ज्ञाता, सात्त्विक-आहारी, उद्योगी, पुरुषार्थी व स्वावलम्बी, विश्व-हितार्थ संग्रही, सत्य-व्यवहारी, कार्य-कर्मों में कुशल, आत्म-प्रभावयुक्त, विशुद्ध प्रेमी व सर्वगुण सम्पन्न श्री भगवत् बुद्धियुक्त आनन्द-शक्ति के ज्ञाता और दाता इत्यादि श्री सात्त्विक मानव के मुख्य लक्षण हैं।

(२) बनावटी सात्त्विक मनुष्यों के लक्षण

आनन्द-शक्तिदायक सुहृदता-समता आदि गुण-धन के त्यागी, निष्काम-सेवा और ध्यान-समाधि से रहित, जाली ग्रन्थों के रचयिता, ईर्षायुक्त कामनाओं से तपायमान, यश, मान, प्रतिष्ठायुक्त धन-जन के लोभी, इन्द्रिय भोगी, अकर्मण्य, मुफ्तखोर, स्वांगी, वाचाल, बुद्धि बल के डाकू,

चिन्ता, भय, क्रोधयुक्त महाअहंकारी इत्यादि महाघोर तामसी मनुष्यों के अर्थात् ठगधर्मियों के मुख्य लक्षण हैं।

जहाँ यह महाहिंसात्मक ठगधर्मी लोग बनावटी धर्मों का अनुष्ठान स्वयं करते और जनता से करवाते हैं। वह देश इस अन्ध-श्रद्धा के परिणाम स्वरूप 'महाकलहधाम' एवं 'दुःखधाम' अशान्तिमय बन जाता है। इन ठगधर्मियों का उल्लेख गीता अ० २/४२,४३,४४ तथा १६/१३ से २० में है जो बहुत संख्या में भारत देश में विद्यमान हैं ❀।

(३) बनावटी धर्मियों के तामसी शिष्यों के लक्षण

मधुर वाणीयुक्त वाक-बल के डाकू, धन-शोषक, व्यक्तिगत संग्रही, इन्द्रिय-भोग आनन्द में मग्न, पशुवत् सन्तानों के महालोभी, पाखण्ड-धर्मी, अहंता, ममता, आसक्ति, कामना आदि समस्त दुर्गुण-दुराचारों में ग्रसित अर्थात् मानसिक रोगों के किटाणु इत्यादि नकल-धर्मपरायण तामसी मनुष्यों के लक्षण हैं। जिनका वर्णन श्री गीता अ० १६/१० से २० तथा अ० १८/३५ में किया है। तामसी श्रेणी के मनुष्य भी भारत देश में विद्यमान हैं (अहरन की चोरी करें, दें सूई का दान)†।

❀ ॐ श्री न्यायकारी प्रभु जी अब सरकार द्वारा भारत के ठगधर्मियों की अहंता और ममता का दमन कर देश सेवा में वितरण करवा रहे हैं।

†बनावटी धर्मियों का सम्पर्क करने वालों को श्री दण्ड-दायक प्रभु चिन्ता, क्रोध, भय और रुदन युक्त गीता अ० १८ श्लो० ३२,

(४) तामसी काश्तकार और मज़दूरों के लक्षण

बनावटी धर्मियों की तामसी मर्यादा अनुसार धर्म के नाम पर दबाए हुए अशिक्षित, दिमागहीन पशुवत् मनुष्य। दूर देशों की तुलना में भारत देश के काश्तकार तथा मज़दूर और नारी समाज को देखो कि कौन से अधिक सुखी और ज्ञानवान हैं? यही तो हिंसा पाप है। भारत देश के दुःखधाम और शक्तिहीन होने का यह भी मूल कारण है।

(५) राजसी मनुष्यों के लक्षण

उद्योगी, पुरुषार्थी, धोखेरहित, न्याय-व्यवहारी, व्यक्तिगत्संग्रही, इन्द्रियभोगी, दिमागी-चंचलतायुक्त, आर्थिक संकटों से रहित, मध्यम श्रेणी के मनुष्य अमेरिका आदि देशों में विद्यमान हैं।

३५, ३९ के सदृश दुःखमय-अशान्तिमय बना देते हैं।

तामसी मनुष्यों को पदाधिकारी, अध्यापक, सभापति, उपदेशक तथा गुरु बना लेना तो अपने गले में पत्थर बाँधकर विषैले समुद्र में छलांग मार जाने के सदृश है अतः चिन्तित-क्रोधित तामसी मनुष्यों को कालानाग व शेर समझकर उनके दर्शन का भी त्याग करने की चेष्टा करें अन्यथा आपका जीवन चिन्ता, क्रोध, भय, हृदन व ईर्षा-द्वेषयुक्त दुःखमय-अशान्तिमय होता जायगा।

तामसी मनुष्यों को ही धूर्त और राक्षस कहते हैं। राज-कार्यकर्ता महापुरुष श्री राम और कृष्ण भगवान ने तामसी मनुष्यों के प्रति क्या किया?

(६) सत्त्व मिश्रित राजसी मानवों के लक्षण

देश सेवक, कार्य-कर्मों में कुशल, आहार-व्यवहार के पदार्थों का निर्माण करने में पुरुषार्थी, निश्चिन्त, देशार्थ-संग्रही, पाखण्ड-धर्मों के त्यागी, आपसी प्रेम-प्रसन्नता में मग्न, संग्रामी शक्तियों के प्रयोग में शूरवीर, देशद्रोही दुर्जनों को दण्ड देने में निर्भीक, विश्व में अनुभवयुक्त ज्ञान का प्रचार करने में चतुर व गम्भीर, न्याय-व्यवहारी एवं सब प्रकार से सुखी, सत्त्वगुण मिश्रित राजसी मानव रूस देश में विद्यमान हैं ❀।

प्रार्थना

आस्तिक भगवन् ! विश्व में आनन्द-शक्ति और दुःख-अशान्ति का निरीक्षण करते हुए उपरोक्त छः प्रकार की संस्कृतियों के गुण-ज्ञान को बारम्बार पढ़ने की प्रार्थना है। इस लेख के मनन-विचार से आपको यह ज्ञान और विश्वास होगा कि श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु सर्वव्यापी, सर्वज्ञ और दुर्जनों के लिए न्यायकारी व श्री सज्जनों के लिए प्रेमी हैं। तथा यह भी विश्वास होगा कि इस जन्म के ही किये हुये कर्मों के अनुसार मनुष्य श्री भगवत् दण्ड

❀ रूस देश के गुण-ज्ञान का अनुकरण करने वाला चीन देश भी उन्नतशील हो रहा है।

रूस देश के मानव सत्त्वगुण मिश्रित होने के कारण श्री महा-पुरुषों द्वारा आत्मिक आनन्द-शक्तिदायक ध्यान-समाधि प्राप्त करने के विशेष पात्र हैं।

व पुरस्कार के भुक्त-भोगी हो रहे हैं।

आप समाज की संस्कृति के परिवर्तन में तो परतन्त्र हैं, किन्तु व्यक्तिगत् रूप से कनिष्ठ समुदाय का त्याग कर श्री सात्विक संग-सेवा तथा श्रेष्ठ अनुकरण करने में स्वतन्त्र हैं। आपकी सेवा में प्रार्थना है कि श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ की सात्विक संस्कृति मानव मात्र की भाग्य विधाता है, अतः अपने परिवार को आनन्द-सम्पन्न व गुण-ज्ञान सम्पन्न बनावें। ॐ आनन्दमय

भारत की मर्यादा

भारतदेश की मानव समाज का मोल-भाव करनेमें, कपट और ठगी करनेमें, ठगीसे बचनेमें, कपटयुक्त पदार्थोंको पुनः शुद्ध करनेमें, रुपया-पैसा गिननेमें तथा धन-सम्पत्ति विषयक मुकदमे आदिमें समयका कितना दुरपयोग हो रहा है? श्री सरकारके आदेशानुसार यथा ज्ञानशक्ति सेवा-कार्य करना और नियमानुसार भोजन-वस्त्रादि स्वीकार करना यह कैसी सात्विक मर्यादा है?

सेवक की सविनय प्रार्थना

मानव भाग्य की सीढ़ी क्या है ?

संयम, सेवा, स्मरण, सादगी और सत्यपुरुषों का संग ।
इन पाँचों से शीघ्र हो, मोह निशा का भंग ॥

(१) संयम—सात इन्द्रियों के अनावश्यक विषयों से वैराग्य । इन्द्रियों के अनावश्यक विषयों का त्याग करने से शरीर की निरोगता, मनःशान्ति, सामाजिक कलह का त्याग एवं अर्थ का दुरुपयोग न होना आदि उत्तम लाभ होते हैं ।

(२) सेवा—यथा ज्ञान-शक्ति न्याय-व्यवहार पूर्वक उपार्जन करते हुए ध्यानमग्न विश्व सेवकों की सेवा में एवं श्री विश्वशान्ति ज्ञान-ग्रन्थ प्रचार में अपने तन, धन, जन को निष्काम भाव से लगाते रहना ही श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के अनुकूल सात्त्विक सेवा है ।

न्याय-व्यवहार पूर्वक आय करना और सत्य-व्यवहार में व्यय करना सात्त्विक मानव का कर्तव्य है ❀ ।

सात्त्विक सेवा के प्रभाव से मानव श्री प्रभु कृपा का पात्र बनता है । जीवन में अपने लिए अर्थ की

❀ ठगी भाव से आय करना और स्वार्थ भाव से व्यय करना तामसी मनुष्यों का कर्म है ।

निश्चिन्तता रहती है और अपनी सेवा करने वाले श्री सज्जन मानवों का सम्पर्क रहता है इत्यादि सुख और शान्ति दायक लाभ हैं।

(३) स्मरण-ध्यान—मन वाणी से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करते हुए आनन्द-शान्ति की प्रतिमा श्री भगवान् के विग्रह को मन-बुद्धि से हर समय याद करते रहना और यथा शक्ति दैनिक प्रातः-सांय सुखपूर्वक आसन से बैठकर नेत्र बन्द करके ध्यान करना व मानसिक सामग्रियों द्वारा श्री भगवान के स्वरूप की मानसिक पूजा करते रहना। प्रति-दिन विलक्षण आनन्द-शक्ति का अनुभव होगा ❀।

ध्यानयोग के अभ्यास से हृदयस्थ मल-विक्षेपों की शुद्धि होगी अर्थात् राजसी-तामसी संकल्प-विकल्पों का त्याग होकर प्रति दिन श्री भगवत् आनन्द शान्तियुक्त सात्विक गुण और उत्तम ज्ञान की वृद्धि होगी जो कि मानव शरीर प्राप्त होने का परम फल है।

(४) सादगी—आहार-व्यवहार, वस्त्र आदि में यथा साध्य कम व्यय करना। सादगी प्रिय मानव सामाजिक सेवा के पात्र हैं और अल्प व्यय सुखी जीवन का

❀ शीघ्र आनन्द-शान्तियुक्त शक्तिदायक श्री भगवान के स्वरूप का ज्ञान श्री आंशिक ग्रंथ में 'मन की एकाग्रता' नामक लेख में प्रकाशित है।

साधन है * ।

(५) सत्यपुरुषों का संग—श्री समाधिमग्न समता-सम्पन्न महापुरुष देव का संग, सेवा, स्मरण-ध्यान और आज्ञापालन करते हुए श्री आपके आदर्श गुणों का अनुकरण करना ।

श्री भगवत् ध्यान आनन्द से अनभिज्ञ भोग आनन्द में मग्न चिन्तित-क्रोधित मनुष्यों के संग, सेवा का त्याग करते हुए, उन राजसी-तामसी मनुष्यों के दुर्गुण-दुराचारों के अनुकरणका त्याग करना ।

उपरोक्त पाँच सूत्र आनन्दविद्या (ब्रह्मविद्या) की पढ़ाई अर्थात् अपने सर्वोच्च व स्थायी भाग्य को उदय करने का पाठ है । दूसरे अर्थों में अपने जीवन को सुखमय, शान्तिमय, आनन्दमय, ज्ञानमय बनाने का और सर्वगुण सम्पन्न गुणातीत ब्रह्मज्ञानी व आत्मज्ञानी बनाने का साधन है । तीसरे अर्थों में यह कहा जाता है कि आप श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराजपद को प्राप्त हो जाएंगे । चौथे

* आपकी सेवा में मैं एक एम० बी० बी० एस० डाक्टर हूँ । आनन्द-शक्तिदायक श्री गुरु भगवान् के आदेशानुसार सरकारी चिकित्सालय में रोगी भगवान् की सेवा करता हूँ । इन वर्षों में अपने शरीर पर प्रायः ५०) रुपया मासिक भोजन-वस्त्रादि में व्यय होता है । मेरा शरीर पुष्ट व निरोग रहता है तथा सात्त्विक समाज आदर दृष्टि से सम्मान करता है ।

अर्थों में यह कहा जाता है कि श्री प्रभु के युवराजपद प्राप्ति के इच्छुक प्रेमीजन आपकी सेवा, पूजा और स्मरण भक्ति कर आपके समान युवराजपद को प्राप्त होंगे ❀।

यह सब हमारे परमदयालु परमहितैषी श्री आनन्दमय प्रभु की अनुपम कृपा है जो हमें इस प्रकार

❀ भगवन् स्मृति रहे ! श्री गुरु भगवान का आदेश हुआ कि जो-जो श्रद्धालु प्रेमी ध्यानमग्न हुए हैं वह सब हमारी बतलाई विधि के अनुसार श्री मंत्र व गुण-ज्ञान का उच्चारण करें। श्री आनन्दमय प्रभु की कृपा से आपके आज्ञाकारी प्रेमियों को भी आपके सदृश अमृतमय ध्यान-जनित आनन्द-शक्ति की प्राप्ति होगी।

उपरोक्त आदेशानुसार इस महती सेवा-कार्य की सफलता श्री प्रेमियों को प्रायः दस वर्ष से प्राप्त होरही है। परन्तु श्री प्रभु प्रसाद के सदाव्रती प्रेमियों में से कई एक प्रेमी इस पद से च्युत हो कर चिन्तायुक्त नाराजमुद्रा का दर्शन दे रहे हैं अर्थात् ध्यान योग का अभ्यास करने और कराने वाले साधकों का जीवन पुनः तामसी हुआ है। क्योंकि उन्होंने श्री महापुरुष भगवान के स्थान पर अपने ही स्वरूप चित्र की प्रतिष्ठा की है। इस अपराध के कारण अब वह प्रेमी स्वयं ध्यान-आनन्ददायक शक्ति से वंचित हो गए हैं, यह स्वार्थी मन की महाशत्रुता है। अतः स्वार्थी मन से सतत् सावधान रहने की प्रार्थना है।

सात्त्विक जीवन बनाने का अवसर दिया है। अन्यथा हे श्री प्रेमी! आपके सम्पूर्ण धर्म-कर्म बनावटी, नोटों व जाली सिक्के के सदृश हानिकारक सिद्ध होंगे। क्या जलहीन मछली के लिए कोई भी कर्म लाभदायक हो सकता है? आप मानव भाग्य के ज्ञाता महापुरुष श्री कृष्ण भगवान् की चेतावनी गीता अध्याय ९।१२ तथा अध्याय १६ श्लोक ७ से २१ तक पढ़ें। उन मनुष्यों की बुद्धि कैसी है व जीवन कैसा सुखी है, इस ज्ञान के लिए अध्याय १८/२१ से ३९ तक राजसी-तामसी नामक श्लोकों को पढ़ें।

स्मृति रहे! यदि राजसी-तामसी श्लोकों के गुण-ज्ञान, भाव, आचरणों का त्याग नहीं करेंगे तो आपके सहित आपके सम्पर्क में रहने वाले बालकों का जीवन श्री न्यायकारी प्रभु क्रमशः दुःखमय-अशान्तिमय बनाते जाएँगे। समस्त वृद्ध-वृद्धाओं का दर्शन करें श्री प्रभु की न्यायकारिता का ज्ञान होगा।

मनुष्य के शरीर में ॐ आनन्दमय विश्वपिता का अंश (जीव) अज्ञान से अणुमात्र भासित हो रहा है किन्तु वास्तव में महान् ही है, हमें आवश्यकता है बीज को वृक्ष रूप में परिणत करने वाले माली की। क्या इन्द्रिय-भोग आनन्द में मग्न रहने वाले क्रोधी व धन-संग्रह के लोभी अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षित भारत की

सन्तानें भाग्यवान् होंगी ? जैसे शेर की सन्तान बन्दरी के दूध से शेर की शक्ति को नहीं प्राप्त कर सकती वैसे ही चिन्तित-क्रोधित अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा हमारी सन्तानें कदापि भाग्यवान नहीं बन सकतीं।

जब तक भारत देश में पण्डित, महात्मा, पण्डे-पुजारी व साधु-संन्यासी एवं पुरोहित-गुरु कहलाने वाले धर्म के स्थापक (उपदेशक) लोग तथा बालक-बालिकाओं को पढ़ाने वाले अध्यापक-अध्यापिकाएँ और जिलाधीश, राज्यपाल, मंत्री-मंडल के सदस्य इत्यादि देश के मुख्य कार्यकर्ताओं का चित्त नाराजी रूपी अग्नि से उबलता रहेगा तब तक भारत देश तामसी बुद्धियुक्त, शक्तिहीन दुःखधाम, दरिद्रधाम एवं कलहयुक्त अशान्तिधाम बना रहेगा।

जब तक हमारे देश की सन्तानों को क्रोधी और रुदन करने वाले माता-पिता आदि पारिवारिक लोगों का दर्शन मिलता रहेगा तब तक देश के उत्थान का कोई रास्ता नहीं। अतः बालकों का एक अलग प्रान्त बसाकर अर्थात् पारिवारिक लोगों से दूर रखकर उद्योग परायण प्रसन्नचित्त, शान्तचित्त अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षित कराने से देश का शीघ्र ही उन्नतशील होना सम्भव है अन्यथा क्रोधी बालक-बालिकाएँ परिवार सहित देश को उबालने वाले दुर्योधन और सूपनखा ही होंगे। याद रक्खें!

आपकी कामी-क्रोधी सन्तानें तो आपको पिता धृतराष्ट्र एवं माता गान्धारी के सदृश आजीवन दुखी-अशान्त रक्खेंगी।

चिन्तित-क्रोधित व भयातुर रहना पूर्व जन्म का भाग्य नहीं। जन्म के पश्चात् मृत्यु पर्यन्त स्वेच्छा, परेच्छा और श्री आनन्दमय प्रभु के न्याय विधान से जैसा संग होता है ऐसा ही गुण, ज्ञान और शक्ति का विकास होता है। संग के अनुसार श्रद्धा होती है, श्रद्धा से कामना-आसक्ति की वृद्धि होती है; कामना-आसक्ति से पुरुषार्थ होता है तदनुसार सात्त्विक, राजसी व तामसी गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों में परिवर्तन होता रहता है।

श्री सात्त्विक मानव के संग से मनुष्य का सच्चा भाग्य उदय होता है और क्रोधी, लोभी, इन्द्रिय-भोगी, चंचल-राजसी-तामसी मनुष्यों के संग से पतित होकर मनुष्य निर्भागी बनता है।

मनुष्य जब कामनाओं से तपायमान होकर श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा भंग करने लगता है तब श्री न्यायकारी विश्वपिता जीवित अवस्था में ही हमारे अन्तःकरण में चिन्ता, क्रोध, भय, ईर्षा और वैर-द्वेष आदि मानसिक रोगों* द्वारा महादण्ड प्रदान करते हुए मनुष्य

---

* १२५ मानसिक रोगों के लक्षणों का ज्ञान और १२५ ही मानसिक निरोग्यता के लक्षणों का ज्ञान श्री विश्वशान्ति भाग (१) के आंशिक ज्ञान ग्रन्थ में प्रकाशित है।

जीवन को कलह-क्लेशमय बनाते रहते हैं। यही श्री प्रभु की जेल है।

स्मृति रहे ! श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की जेल और युवराज पद के दाता दोनों ही कार्यालय हमारे हृदय में ही विद्यमान हैं।

मानसिक बिमारियों के किटाणु प्रलय काल के सदृश व्याप्त हो रहे हैं। समता-सन्तोषयुक्त आनन्द-शांति की प्रतिमा नवीन सन्तान उत्पन्न होते ही उन कीटाणुओं के आक्रमण से दुःखी, अशान्त, कर्तव्य-विमूढ़ और अधोगामी अर्थात् चिन्तित-क्रोधित (तामसी) होती जा रही है। मनुष्यों की दीन दशा के अनुसार पशु एवं बनस्पति की गति का भी अनुमान कर लेना चाहिए।

जिस देश व प्रान्त के मनुष्य तामसी स्वभाव के हो जाते हैं वहाँ के पशु और पेड़-पौदे भी श्री प्रभु न्याय से दुर्बल होते हैं। भारत देश की तुलना में रजोगुण प्रधान न्याय-व्यवहारी दूर देशों के पशु और पेड़-पौदे अधिक हितकारी हैं। पचास-साठ वर्ष पूर्व भारत देश के भी पशु और पेड़-पौदे कितने हितकारी थे।

विश्व के रचयिता और शासक श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु हैं। उनकी कानून-मर्यादा को ही धर्म कहते हैं। श्री आनन्दमय प्रभु पिताकी ही सन्तान होनेसे सब मनुष्यों की एक ही आनन्दमय जाति है, इस न्याय से सम्पूर्ण

मनुष्यों का एक ही धर्म है। श्री विश्वपिता की मर्यादा को पालन करने वाले समाधिमग्न महापुरुष देव ही श्री विश्व-पिता के युवराज हैं जिनके अनुकूल सेवा, स्मरण-ध्यान आदि सदाचारों के आश्रय से प्रेम-प्रसन्नता समता-सन्तोष आदि गुणों को धारण करने से व्यक्ति एवं समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था श्री भगवत् आनन्द-शक्तियुक्त सुख-शान्ति दायक सात्विक होने का विधान है।

परम आनन्द और परम शक्तिदायक इस लुप्त हुई राजविद्या अर्थात् गुणविद्या की शिक्षा एवं परीक्षा का प्रबन्ध करने से हमारे युवक-युवतियां ब्रह्मविद्या के अध्या-पक-अध्यापिकाएँ बन कर एक भारत ही नहीं विश्व का भाग्य उदय करेंगे। ज्ञान-विज्ञान से युक्त भारत की दक्षता का अनुभव करते हुए दूर देशों के राष्ट्र भी आत्म समर्पण कर भारत देश की प्रेम आधीनता स्वीकार करेंगे।

यह सात्विक विजय ॐ आनन्दमय प्रभु के आश्रय से प्रेम और ज्ञान के बल पर होगी, न कि अस्त्र-शस्त्र और अभिमान के बल पर रक्त की नदियाँ बहाकर। हम श्री विश्वपिता की सन्तान हैं, इस सात्विक ज्ञान से विश्व के सभी मनुष्य हमारे बन्धु-भ्राता व आत्म प्रेमी हैं।

ज्ञान करें! राजसी गुण-ज्ञान को धारण करने वाले दूर देशी लोग भी अन्न-वस्त्रादि आवश्यक पदार्थों से सम्पन्न होकर भूख से पीड़ित तामसी भारत देश को दान

और कर्ज़ दे रहे हैं।

इस महाभयानक परिस्थिति में भी यदि आप मनुष्य प्रभाव के ज्ञाता, ब्रह्मवेत्ता, मर्यादापुरुषोत्तम श्री महापुरुष देव के आदर्श गुणों से युक्त श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के अनुसार अपने जीवन को सात्विक नहीं बनाएँगे तो क्रमशः आपके सहित आपका परिवार व हमारा देश तामसी गुण-ज्ञान को धारण कर नष्ट-भ्रष्ट ही होता जाएगा।

सुख-शान्ति-स्थापक सुधारक लोग बिना नींव के मकान तैयार करते हैं जो बार-बार गिर जाता है। यह नींव श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा है जिसको श्री समाधिमग्न-समतावान महापुरुष ही जानते हैं। ध्यान-जनित आत्मिक आनन्द-शान्ति से अनभिज्ञ अन्ध-श्रद्धालु लोग, तो दम्भी-पाखण्डियों द्वारा रचे हुए बनावटी धर्मों को ही श्री भगवत् मर्यादा माने हुए हैं।

मेरा अनुभवपूर्ण विश्वास है कि विश्वशान्ति स्थापक मर्यादा पुरुषोत्तम श्री महापुरुष देव के आनन्द-सम्पन्न हृदय कमल से प्रकट हुए दिमागी ज्ञान-शक्ति व आनन्द-शान्तियुक्त ध्यान-समाधि एवं मोक्षदायक, वैदिक, सनातन, ब्रह्मवाची महावाक्य ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र को हर समय हर कार्य करते हुए जपने से मानसिक रोग शान्त होंगे तथा सेवा-संयम प्रधान इस दिव्य ग्रन्थ के ज्ञान को धारण करने से सम्पूर्ण विश्व में शान्ति स्थापित हो

जायगी। श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के अनुकूल कर्तव्य परायण मानव ही सुख-शान्तियुक्त आनन्द-शक्ति सम्पन्न होते हैं।

सात्त्विक देश में श्री प्रभु यथा समय वायु, शीत, गरमी, वर्षा प्रदान करते रहेंगे जिससे पुनः अन्न, दूध, घी, फल, सब्जी, वस्त्र, ओषध आदि पदार्थों की कमी नहीं रहेगी अन्यथा महाघोर दशा होने वाली है!

श्री परम पूजनीय महापुरुष देव सुख, शान्ति, गुण, ज्ञान, ध्यान, आनन्द व आत्म प्रभावयुक्त श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराजपद के दाता हैं। ब्रह्मविद्या के पारदर्शी, अन्तः शरीरों के आहार-व्यवहार एवं मनुष्य के सच्चे भाग्य को उदय करने के ज्ञाता हैं तथा मानसिक रोगों के वैद्यराज, श्री भगवत् पदाधीश एवं विश्वशान्ति स्थापक मर्यादा-पुरुषोत्तम विदेह महापुरुष हैं।

श्री आपका जीवन बाल्यावस्था से ही श्री प्रभु परायण संयम, सेवा, सादगी, स्मरण-ध्यानयुक्त रहा। प्रायः बीस वर्ष तो श्रद्धा-प्रेम पूर्वक असल-नकल-मिश्रित धर्मों का ही अनुष्ठान करते रहे, क्रमशः श्री आपके शुभ कामना-मय निर्मल हृदय में श्री गीतोक्त धर्म निष्काम सेवा परायण दैवी सम्पदा में श्रद्धा एवं स्वार्थ मूलक आसुरी सम्पदा में उपेक्षा का ज्ञान हुआ, तब से सात्त्विक गुण, ज्ञान, भाव, आचरण एवं प्रेमी-पदार्थों को ग्रहण तथा

राजसी तामसी गुण, ज्ञान, भाव, आचरण और प्राणी-पदार्थों से वैराग्य करते हुए ॐ श्री समाधिमग्न गुरु भगवान् की आज्ञा से सेवा-स्मरण कर अर्थात् कर्मयोग, ध्यानयोग, समाधि-ज्ञानयोग द्वारा परम सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। मुझे बारह वर्ष से श्री आपका समागम प्राप्त है। मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम का सेवक हूँ। सरकारी चिकित्सालय में रोगी भगवान् की चिकित्सा रूप पूजा करना मेरा स्वभाविक ज्ञान है।

श्री महापुरुष देव की सात्त्विक मर्यादा पालन करने से मनुष्य मात्र का भाग्य उदय होता है।

जैसे दूध में घी, तिल में तेल, काठ में अग्नि, बीज में वृक्ष आदि विद्यमान होते हुए भी अदृश्य हैं ऐसे ही मनुष्य के अन्दर आनन्द-शक्तिदायक आठ सिद्धियाँ अदृश्य हैं।

श्री परम आदरणीय महापुरुष देव के दर्शन-भाषण से प्रत्येक मनुष्य प्रभावित हुये बिना नहीं रह सकता। श्री आपका एक-एक वचन आनन्ददायक अमूल्य रत्न है। ध्यानानन्द प्राप्ति की अभिलाषा से जो श्री श्रद्धालु प्रेमी लोग विधिपूर्वक श्री महापुरुष देव के सम्मुख बैठते हैं वे संख्या में चाहे कितने ही हों, ध्यानानन्द में मग्न हो जाते हैं। आप कुछ ही दिन के संग से सत्य मार्ग का अनुभव कर चकित हो जायँगे।

अत्यन्त गिरे हुए आधुनिक समाज को उठाने के लिये श्री तत्त्वदर्शी ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष देव का ज्ञान अनिवार्य है। यह विशुद्ध ज्ञान देश में व्याप्त होते ही विश्व में सुख, शान्ति और जाग्रति उत्पन्न कर देगा।

जिन के स्मरण मात्र से ही हृदय पवित्र हो जाता है उन श्री महापुरुष देव का उपदेशामृत रेडियो द्वारा विश्व के व्यक्ति-व्यक्ति में व्याप्त होकर अज्ञान जनित राग-द्वेष प्रद मानसिक रोगों के कारण शुष्क हुए मनुष्यों के हृदयों को प्रेम रस से सराबोर कर विश्व-बन्धुत्व की भावना जाग्रति कर देगा। श्री महाज्ञानी महापुरुष देव थोड़े समय में ही देश को इतनी ऊँची स्थिति पर पहुँचा सकते हैं कि सब से बुद्धिमान माने जाने वाले पुरुषों के स्वप्न में भी ऐसा संकल्प न होता होगा। श्री दिव्यविभूति के महान प्रभाव को मैं कैसे समझाऊं, आप स्वयं ही अनुभव करें।

अन्तिम प्रार्थना

श्री जप-ध्यान अभ्यासी व गुणग्राही साधकजन श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (१) के आंशिक ज्ञान को पृ० ६ के नियमानुसार प्रतिदिन पढ़ें और इस ग्रन्थ को प्रत्येक माह में अधिक नहीं तो एक बार आद्योपान्त श्रवण-पठन करें। आपके हृदय में आनन्द-शक्तिदायक ज्ञान सूर्य प्रकाशित होगा और आपका ध्यान लगता रहेगा। ॐ आनन्दमय

श्री गीता दर्शन

मनुष्य कर्तव्य-अकर्तव्य क्या है ? धर्म-अधर्म क्या है ? धर्मात्माओं व पापात्माओं के लक्षण क्या हैं ? अर्थात् श्री भगवत् पदाधीश सात्त्विक 'देव मानव' की पहचान क्या है और श्री प्रभु के जेल निवासी राजसी 'असुर मनुष्य' की पहचान क्या है तथा श्री प्रभु के कालापानी निवासी तामसी 'राक्षस मनुष्य' की पहचान क्या है ? किन-किन गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों को धारण करने से मनुष्य दुःख-अशान्तिदायक चिन्ता, क्रोध, भय, रुदनयुक्त निर्भागी बनता है और किन-किन गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों को धारण करने से मनुष्य आनन्द-शक्ति दायक प्रेम-प्रसन्नता व समता-सन्तोषयुक्त परम भाग्यवान बनता है इत्यादि जानने योग्य विषयों का पूर्ण ज्ञान श्री सर्व-शास्त्रमयी गीता में विद्यमान है जिसके मुख्य-मुख्य श्लोकों का विवरण निम्नलिखित है ।

श्री गीता के मुख्य श्लोकों का विवरण

अध्याय २ के मुख्य श्लोक

धारण करने योग्य—श्लोक ७, ११, १४-१५, २२, २३ से २५; ३८, ४०, ४१ ।

भाग्यवान् बनने की विधि—श्री सेवायोग (दुर्जनों

का नाश और श्री सज्जनों का विकास)—श्लोक ४७ से ५१ (कर्मयोग)।

महाभाग्यवान् के लक्षण—श्लोक ५४ से ५८, ६४-६५, ६८ से ७२।

श्री सज्जनों की सेवा और ध्यान-समाधि के त्यागी शास्त्र वक्ताओं के निर्भागी बनने की विधि—श्लोक ४२ से ४४।

धन-सन्तानादि द्वारा निर्भागी बनने की विधि—श्लोक ६२, ६३।

अध्याय ३ के मुख्य श्लोक

शिक्षाप्रद श्लोक—१७-१८; १८ से २१; २५, ३० से ३२; ३४, ३६ से ४३।

अध्याय ४ के मुख्य श्लोक

मनुष्य कर्तव्य का ज्ञान—श्लोक १६ से २३।

सात्त्विक यज्ञों का ज्ञान—श्लोक २५ से ३३।

श्री महापुरुषों की शरणागति की विधि एवं ज्ञान का माहात्म्य—श्लोक ३४ से ४२।

अध्याय ५ के मुख्य श्लोक

महत्त्वपूर्ण ज्ञान एवं ध्यान का फल—श्लोक ३, १० से १२; १७ से २६; २७ से २८।

अध्याय ६ के मुख्य श्लोक

असल संन्यासी और वर्तमान के बनावटी संन्यासियों

के लक्षण—श्लोक १ ।

मन रूपी शत्रु को जीतने का आदेश—श्लोक ५-६ ।

मन रूपी मित्र को शान्त करने का फल—७ से ९ ।

श्री ध्यानयोग की विधि एवं परमानन्द की प्राप्ति का माहात्म्य—श्लोक ११ से ३२, ४०, ४७ ।

अध्याय ७ के मुख्य श्लोक

मनन करने योग्य—श्लोक १, ३, १४ से १८, २०, २७ से ३० ।

अध्याय ८ के मुख्य श्लोक

श्री महापुरुषों की प्रेम भक्ति का प्रभाव—श्लोक ५ से ८; १४-१५ ।

अध्याय ९ के मुख्य श्लोक

राजविद्या का महत्व एवं अध्ययन करने का ज्ञान श्लोक २-३, १२ से १४; २२, २७-२८; २९ से ३४ ।

अध्याय १० के मुख्य श्लोक

श्री महापुरुष भगवान् की प्रेम-भक्ति करने की विधि एवं फल का ज्ञान—श्लोक ४-५, ८ से ११ ।

अध्याय ११ के मुख्य श्लोक

श्री महापुरुष-पद प्राप्त करने की विधि एवं वरदान अर्थात् महापुरुष श्री कृष्ण भगवान् के ही समान बनने का ज्ञान—श्लोक ५४-५५ ।

अध्याय १२ के मुख्य श्लोक

श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा पालन करने की विधि—श्लोक १ से ५; ६ से ८; और श्री विश्वपिता के युवराज के लक्षण श्लोक १३ से २०।

अध्याय १३ के मुख्य श्लोक

श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज-पद प्राप्त करने की विधि—श्लोक ७ से ११।

यह सर्वोत्तम उपासना करने योग्य गुण-ज्ञान है। इस गुण-ज्ञान का त्याग करने वाले मनुष्य श्री प्रभु की जेल रूप चिन्ता-क्रोध की अग्नि में उबलते रहेंगे। कामी-क्रोधी पण्डे-पुजारियों व पण्डित-संन्यासियों का बतलाया हुआ धर्म-कर्म मुक्तिदायक नहीं अपितु जाली सिक्का है!

श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के स्वरूप एवं प्रभाव का ज्ञान—श्लोक १२ से १७।

जीवात्मा के पुनर्जन्म का ज्ञान—श्लोक ११ से २१।

आत्मज्ञान की विधि—श्लोक २४-२५।

आत्म-प्रभाव का ज्ञान—श्लोक २२-२३; २६ से ३४।

अध्याय १४ के मुख्य श्लोक

अज्ञान विमोहित राजसी और तामसी मनुष्यों के संग-सेवायुक्त आज्ञापालन से दुःख-अशान्ति की प्राप्ति होने का ज्ञान तथा श्री सात्त्विक मानवों के संग-सेवा परायण आज्ञापालन से आनन्द-शान्तियुक्त श्री कृष्ण

भगवान के सदृश परमपद की प्राप्ति होने का ज्ञान—श्लोक १-२;५ से १८; १९-२० ।

श्री महाभाग्यवान् गुणातीत महापुरुषों के लक्षण और श्री महापुरुषों की प्रेम भक्ति से गुणातीत बनने की विधि श्लोक २१ से २७ ।

इस चौदहवें अध्याय में राजसी-तामसी मनुष्यों के संग से दुःख-अशान्ति और श्री सात्त्विक मानव के प्रेम से आनन्द-शान्ति की प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण ज्ञान है ।

अध्याय १५ के मुख्य श्लोक

आनन्दमय और दुखमय जीवन का ज्ञान—श्लोक ३ से ५; ७ से ११; १९-२० ।

ॐ श्री प्रभु पिता के परमपद प्राप्ति का और सम्पूर्ण धार्मिक ग्रन्थों का सार अर्थात् वेद-वेदान्त का राजा ज्ञान इस अध्याय का पाँचवाँ श्लोक है ।

अध्याय १६ के मुख्य श्लोक

श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा पालन करने वाले देव मानवों की पहचान व ॐ श्री आनन्दमय प्रभु का श्री देव-देवाङ्गनाओं के प्रति वरदान—श्लोक १ से ३, ५ ।

बनावटी धर्मात्माओं अर्थात् ठगधर्मियों के प्रति एवं अहंता-ममतायुक्त भोग-बुद्धि से धन-जन आदि पदार्थों का संग्रह करने वाले ठगधनियोंको और अन्य असुर मनुष्योंको

श्री दण्डदायक प्रभुकी चेतावनी एवं शाप तथा उन राजसी-तामसी मनुष्यों की पहचान—श्लोक ४-५; ७ से २१ ।

अध्याय १७ के मुख्य श्लोक

आहार-व्यवहार आदि से श्रेष्ठ व कनिष्ट मनुष्यों को पहचानने का ज्ञान—श्लोक ७ से १०; १४ से १७; २० से २२; २८ ।

अध्याय १८ के मुख्य श्लोक

सेवा कर्मोंके त्यागी साधु-संन्यासीको तामसी और कर्म-फलके त्यागीको सात्त्विक बतलानेका ज्ञान—श्लोक १ से १२ ।

श्रेष्ठ (सात्त्विक), कनिष्ट (राजसी), महाकनिष्ट (तामसी) अर्थात् महात्मा और पापात्मा एवं महापापात्मा की पक्की परीक्षा का ज्ञान—श्लोक १८ से ३८ ।

श्री समाधियोग अर्थात् ज्ञानयोग की विधि एवं वरदान—श्लोक ५० से ५५ ।

स्मृति रहे ! यह मर्यादा पुरुषोत्तम महापुरुष भगवान का धर्म रूप वरदान है । इस अमृतमय व परमपद-दायक गुण-धर्मका त्याग कर जो धर्म के नाम से धार्मिक कर्म किए जाते हैं वह अधर्म की वृद्धि करने वाला बनावटी धर्म है । अर्थात् उपरोक्त गुण उपासना के अतिरिक्त समस्त धर्म-कर्म अज्ञानी मनुष्यों द्वारा रचा हुआ चिन्ता-क्रोधदायक है ।

श्री महापुरुष भगवान् की शरणागति का ज्ञान—

५६ से ५८; ६४ से ६६; ६७ से ६८;७२-७३ ।

श्री गीता सार

श्री विश्वपूज्य महापुरुष कृष्ण भगवानके सिद्धान्त से श्री सात्विक मानव के संग सेवायुक्त उनके गुण-ज्ञान को धारण करने के प्रभाव से मानव का जीवन सुख-शान्तियुक्त आनन्द-शक्तिसम्पन्न होने का विधान है । और राजसी तथा तामसी मनुष्यों के संग-सेवायुक्त उनके गुण-ज्ञान को धारण करने से मनुष्य का जीवन चिन्ता-क्रोध-युक्त दुःखमय-अशान्तिमय होने का विधान है ।

श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित ध्यान-जनित आनन्द-शक्ति के ज्ञाता बालक-वृद्ध, युवक-युवतियां अर्थात् कई परिवारों ने अनुभव किया कि यह श्री गीता का सिद्धान्त निश्चय ही सत्य है ।

हे श्री प्रेमी ! आप निम्नलिखित चार अध्यायों के श्लोकों के अनुसार अपने सहित अपनी सन्तानों की परीक्षा करें कि आप लोग अपने ज्ञान चक्षुओं को बंद करके किस गुण-ज्ञान के प्रवाह में बहते जा रहे हैं ।

महाभाग्यवान् श्री महापुरुषों से प्रेम करने वाले मानव सदा आनन्द-शक्तियुक्त सम, शान्त और प्रसन्न रहते हैं और अभागे असुरों से प्रेम करनेवाले सदा विषम, अशान्त अर्थात् चिन्तित-क्रोधित एवं भयातुर रहते हैं । संग, सेवा और आज्ञापालन के अनुसार ही श्री न्यायकारी प्रभु

प्रतिक्षण प्रारब्ध बनाते रहते हैं, जिससे मनुष्य सुखी एवं दुःखी होते रहते हैं।

आप श्री गीता तत्त्वविवेचनी (भाष्य गीता प्रेस) को पढ़ें, आपको विश्वास हो जायगा कि गीता ग्रन्थ हो 'श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हुआ है। अर्थात् श्री गीता ग्रंथ का युवराज श्री विश्वशान्ति ग्रंथ है।'

इस सर्वश्रेष्ठ धर्म को पालन कर श्री विश्वशान्ति आश्रम के विश्व सेवक परमानन्द को प्राप्त हुए तथा सैंकड़ों परिवार सुख-शान्तिदायक आनन्द-शक्ति को प्राप्त हो रहे हैं। इस आदर्श सेवा-धर्म को पालन करने का मनुष्य मात्र को अधिकार है और श्री आश्रम प्रेमियों के आनन्दमय जीवन का अनुकरण करने में सब कोई समर्थ हैं। प्रसन्नचित्त रहने वाले कम आयु के बालक-बालिकाएँ इस आनन्द-शक्तिदायक विश्वसेवा विद्या के विशेष पात्र हैं।

याद रक्खें ! क्रोध-चिन्ता करने के स्वभाव वाले अध्यापक-अध्यापिकाओं के तो दर्शनों से ही आप की सन्तानें निर्भागी होती जाएँगी। अर्थात् आजीवन चिन्ता-क्रोध की ज्वाला में उबलती व उबालती रहेंगी।

मानव चार श्रेणी के भावयुक्त होते हैं जैसे गुणातीत, सात्त्विक, राजसी और तामसी। इन चार श्रेणियों के मानवों की पहचान का ज्ञान अ० १४, १६, १७, १८ के निम्नलिखित श्लोकों में विस्तार पूर्वक उल्लेख किया है।

अतः उत्तम श्री देव-देवाङ्गनाओं का संग करें और कनिष्ठ राजसी-तामसी मनुष्यों के गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों का त्याग कर दें। (शेष पृ० १९१ पर)

पद और जेल

(१) ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महा-मंत्र के जप के साथ-साथ भगवानके श्री स्वरूप चिन्तनके भाव 'पदके' दाता हैं और प्राणीमात्रके प्रति ईर्षायुक्त स्वार्थके भाव 'जेलके' दाता हैं।

(२) मन-बुद्धि द्वारा ध्यान-जनित अन्तः आनन्द अनुभूतिके भाव 'पदके' दाता हैं और इन्द्रियों द्वारा विषय-भोग जनित आनन्दके भाव 'जेलके' दाता हैं।

(३) पुजारी बुद्धियुक्त सेवा प्रेमके भाव 'पदके' दाता हैं तथा अहं बुद्धियुक्त राग-द्वेषके भाव 'जेलके' दाता हैं।

(शेष ज्ञान पृ० १९६ पर है)

अध्याय १४ का विवरण

विवरण	(१) आनन्द-शक्तिके आचार्यों के लक्षण	(२) चिन्ता के अध्यापकों के लक्षण	(३) क्रोधके मास्टरों के लक्षण
↓	↓	↓	↓
सुख - शान्तियुक्त आनन्द-शक्तिके आचार्यके लक्षण।	श्लो० २१ से २५	....	....
श्रीसात्त्विक तथा राजसी-तामसी मनुष्यों के संग के प्रभाव का ज्ञान।	” ६ ...	७ ...	८
श्रीसात्त्विक तथा राजसी-तामसी मनुष्यों के ज्ञान में श्रद्धा करने का फल।	” ८ ...	८ ...	९

विवरण		(१)		(२)		(३)
संगके प्रभावसे पुनः गुण-ज्ञान एवं सुख-दुःखके परिवर्तन होने का ज्ञान ।	श्लोक	१०	....	१०	...	१०
श्री सात्त्विक तथा राजसी-तामसी मनुष्यों के लक्षणों का ज्ञान ।	”	...	...	१२	...	१३
मृत्युके पश्चात् क्या फल होगा ?	”	१४	...	१५	...	१५
जीवित अवस्थामें अपने-अपने कर्मोंके फल-भोगका ज्ञान	”	१६	...	१७	...	१८

अध्याय १६ का विवरण

अध्याय १६ के श्लोकों का विवरण पृष्ठ १८६-१८७ में प्रकाशित हुआ है ।

अध्याय १७ का विवरण

विवरण		(१) ॐ श्री प्रभुके पदके दाताओं के लक्षण	(२) ॐ श्री प्रभुकी जेलके दाताओंके लक्षण	(३) ॐ श्री प्रभुके कालापानीके दाताओं के लक्षण
↓		↓	↓	↓
श्रद्धा की पहचान ...	श्लोक	१ से ४ ...	१ से ४ ...	१ से ४
असुर धर्म (अन्ध-श्रद्धा)	”	... ...	... ...	५ से ६
भोजन का ज्ञान ...	”	८ ...	८ ...	१०
यज्ञ का ज्ञान ...	”	११ ...	१२ ...	१३
तप-सेवा का ज्ञान ...	”	१४ से १७ ...	१८ ...	१९
दान का ज्ञान ...	”	२० ..	२१ ...	२२

अध्याय १८ के श्लोकों का ज्ञान

विवरण	आनन्द-शान्ति के दाताओं की पहचान	चिन्तायुक्त अशान्तिके दाताओं की पहचान	क्रोधयुक्त अशान्तिके दाताओं की पहचान
↓	↓	↓	↓
वर्तमानके बनावटी साधु	श्लोक	... ...	७
अकर्मण्य मनुष्य	”	८ ...	...
सच्चे साधु (श्री देव)	” ६,८ से १२ ...	... ...	...
ज्ञान ...	” २० ...	२१ ...	२२
कर्म (आचरण) ...	” २३ ...	२४ ...	२५
कर्त्ता-गुण ...	” २६ ...	२७ ...	२८
बुद्धि ...	” ३० ...	३१ ...	३२
धृति (धारणा) ...	” ३३ ...	३४ ...	३५
सुख ...	” ३६-३७ ...	३८ ...	३९

नर से नारायण

श्री गीता अध्याय २ श्लोक ५४ से ५८ तथा अध्याय १४ श्लोक २१ के २५ तक का आदर्श-दर्शन, शुद्धसत्त्व-गुण से युक्त समाधिमग्न गुणातीत श्री देव-देवाङ्गनाएँ श्री प्रभु का सात्त्विक स्वरूप हैं अर्थात् श्री विश्वपिता आनन्द-मय प्रभु की आनन्दमयी-शान्तिमयी चेतन प्रतिमाएं है। श्री आनन्दमय प्रभु की मर्यादा पालन कर प्रत्येक मनुष्य नर से नारायण बनने का अधिकारी है।

परमदयालु महाभाग्यवान् श्रीकृष्ण भगवान् ने मानव मात्रको अपने ही समान बननेकी विधि अध्याय ८/१४-१५, अ० ६ श्लोक २७ से २६, ३४; अ० १० श्लोक ९,१०; अ० ११ श्लोक ५५; अ० १२ श्लोक ६ से ८; अ० १४ श्लोक २; अ० १८ श्लोक ६५-६६ में बतलाई है।

श्री महापुरुष भगवान् के शरणागत् होने की विधि का ज्ञान निम्नलिखित है।

अध्याय २ श्लोक ७; अ० ३ श्लोक २१, ३० से ३२; अ० ४ श्लोक ३४ से ४२; अ० ६ श्लोक २७-२८; अ० १० श्लोक ६ से ११; अ० ११ श्लोक ५५; अ० १२ श्लोक १-२, ६ से ८; अ० १३ श्लोक ७ से ११; अ० १४ श्लोक १६; अ० १८ श्लोक ५६ से ५८; ६४ से ६६, ७३।

हे श्री प्रेमी ! श्री गीता के प्रत्येक श्लोक का अर्थ उच्चारण करते समय "हे अर्जुन" के स्थान पर अपने

नाम को आदर्श करके पढ़ें जैसे "हे आनन्दमोहन" और ऐसा समझते रहें कि श्री आनन्दमय भगवान् मुझे ही आदेश दे रहे हैं। ॐ आनन्दमय

(पृ० १९० का शेष ज्ञान)

(४) जड़-चेतनादि समस्त रूपोंमें ॐ आनन्दमय भगवत्दर्शनके भाव 'पदके' दाता हैं और दोष-दर्शनोंके भाव 'जेलके' दाता हैं।

स्मृति रहे! ध्यान-समाधियुक्त समता-प्रसन्नता श्री प्रभुका 'पद' है और अहंता-ममतायुक्त चिन्ता-क्रोध श्रीप्रभुकी 'जेल' है।

उपरोक्त 'पद-दायक' सात्त्विक भावों के ग्रहण और 'जेल-दायक' राजसी-तामसी भावोंके त्यागका अभ्यास करने में सब कोई समर्थ हैं। ॐ आनन्दमय

सेवा और प्रतिष्ठा

सात्त्विक-गुण धारण करनेसे आनन्द शक्तियुक्त मान-प्रतिष्ठाकी प्राप्ति होती है या बहुमूल्य राजसी वस्त्र-आभूषण धारण करनेसे ?

गुण-शक्तिद्वारा तैय्यार किए हुए देवमानव सेवा-शुश्रूषा करते हैं या देहबल से तैय्यार की हुई असुर सन्तानें ?

असुर कौन है ?

'देव' सद्गुण-सम्पन्न सदाचारी श्री सात्त्विक मानव का वाचक है और 'असुर' भौतिक अहंता, ममता, आसक्ति, कामना परायण अज्ञान विमोहित दुगुर्ण-दुराचारी अर्थात् राजसी-तामसी मनुष्य का वाचक है। श्री गीता का प्रमाण है—

दम्भो[१] दर्पो[२]ऽभिमानश्च[३] क्रोधः[४] पारुष्यमेव[५] च।
अज्ञानं[६] चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥१६।४॥

हे पार्थ ! पाखण्ड[१], घमण्ड[२] और अभिमान[३] तथा क्रोध[४] और कठोरवाणी[५] एवं अज्ञान[६] (यह छः) आसुरी संपदा को प्राप्त हुए मनुष्य के लक्षण हैं।

भावार्थ—

(१) निष्कामसेवा, दया-प्रेम, समता-सन्तोष व ध्यान-समाधि आदि आनन्द-शक्तिदायक सद्गुणों से रहित होने पर भी अपने को साधु-धर्मात्मा व पण्डित-महात्मा आदि देव-उपाधियों से युक्त प्रसिद्ध करने वाले दम्भी-पाखण्डी मनुष्य को असुर कहा है।

(२) परिवर्तनशील व विनाशशील सेवार्थ प्राप्त देह-शक्ति व धन, जन, भूमि, भवनशक्ति तथा अस्त्र-शस्त्रादि शक्तियों के घमण्डी मनुष्य को असुर कहा है।

(३) आत्म-ज्ञान से अनभिज्ञ, नाम, ग्राम, देश, भेष, भाषा, मान, जाति, आयु, विद्या, रूप, धन, पद और ऊँच वर्णाश्रम आदि के अभिमानी मनुष्य को असुर कहा है।

(४) अनुभवयुक्त सत्य, प्रिय, हितकारक अर्थात् आनन्द-शक्तिदायक देव वचनों का त्यागकर जो मनुष्य उद्विग्नता पूर्वक कठोर वाणी उच्चारण करता है उस व्यक्ति को असुर कहा है।

(५) प्रत्येक प्रतिकूलताओं में ॐ श्री प्रभु पिता के मंगलकारी विधान से अनभिज्ञ सम, शान्त व प्रसन्नमुद्रा के त्यागी क्रोधी मनुष्य को असुर कहा है।

(६) अपने ज्ञान द्वारा किए कर्मों का फल आनन्द-शान्तियुक्त न होकर कालान्तर में चिन्ता-भयदायक हो ऐसे अज्ञान विमोहित मनुष्य को असुर कहा है।

असुर श्रेणी के राजसी-तामसी मनुष्यों के लक्षण और उनके परिणाम का विस्तार ज्ञान अ० १६ श्लोक ७ से २१ तक प्रकाशित है।

स्मृति रहे! जैसे रबड़ का गुब्बारा वायु से फूलकर कुछ समय के लिए आकाश में उड़ता व चमकता हुआ दिखाई देता है वैसे असुर श्रेणी के मनुष्य भी श्री प्रभु विधान से कुछ समय के लिए संसार में चमकते हैं अर्थात् फूलते-फलते हैं परन्तु अन्त में जैसे वायु रहित गुब्बारा कुम्हलाकर रद्दी होता है वैसे ही असुर मनुष्य भी चिन्ता-युक्त भयातुर होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं।

जैसे धनहीन मनुष्य भी दुल्हा-दुल्हन बनकर कुछ घन्टों के लिए राजा-रानियों के सदृश फूलते हैं वैसे ही

असुर श्रेणी के दुर्जन मनुष्य भी दम्भ, दर्प और अभिमान के बलपर अपने को गुणवान, ज्ञानवान प्रसिद्ध कर फूलते-फलते प्रतीत होते हैं परन्तु क्रमशः कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा के सदृश्य चिन्ता, क्रोध, भय, रुदनयुक्त नाराज़मुद्रा का दर्शन श्रवण कराते हुए दुर्लभ मानव देह का त्यागकर पुनः नीच योनियों में भ्रमण करते हैं। अस्तु

मनन विचार करें! सन् १९४० के पश्चात् भारत देश के ठगधर्मियों और ठगधनियों को ॐ श्री सर्वज्ञ न्याय-कारी प्रभु जी नाना प्रकार से प्रज्वलित मानसिक अग्नियों द्वारा उबाल रहे हैं।

स्मृति रहे! श्री ध्यानमग्न देव मानव के अनुकूल संग, सेवा, जप, ध्यान, और श्रवण-पठन करने वाले असुर मनुष्य का पुनः शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के सदृश "देवपद" को प्राप्त होने का विधान है। क्योंकि असुरों के गुण और ज्ञान को धारण करने वाला असुर और देवों के गुण और ज्ञान को धारण करने वाला पुनः देव शक्ति को प्राप्त होता है।

असुर मनुष्य असुर बनाने में तथा श्री देव मानव देव बनाने में प्रयत्नशील रहते हैं।

देव बननेमें व असुर बननेमें प्रत्येक मानव स्वतंत्र हैं।

दम्भ[1], दर्प[2], अभिमान[3], यह तीन पाप कर्मों के मूल कारण हैं और कठोरवाणी[1], क्रोध[2] तथा हृदय में परिणाम हानिकारक विपरीत अर्थात तामसी ज्ञान[3] यह तीन मुख्य दण्ड विधान हैं।

श्री विश्व सेवार्थ प्रार्थना

विश्व में आनन्द-शान्ति स्थापन अभिलाषी श्री मान पुरुष समाज से व श्री भगवती देवी समाज तथा छात्र-छात्राओं के प्रति सविनय प्रार्थना है कि—

(१) श्री महापुरुष देव द्वारा शिक्षित ध्यानमग्न प्रेमीजनों का चार दिन समागम कर आत्मिक-प्रसाद रूप ध्यान-आनन्द की शिक्षा प्राप्त करें। ध्यान विद्या का अभ्यास सम्पूर्ण आनन्द व शक्तियों का सम्राट है। ध्यान-योग के ज्ञाता व दाता श्री भगवती देवी समाज व श्रीमान पुरुष समाज आपकी सेवा में विद्यमान है।

(२) स्थान-स्थान पर श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का व्याख्यान कराएँ, मानव कर्तव्य-अकर्तव्य का ज्ञान होगा।

(३) स्कूल-कालेजों में श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का भाषण दिलाएं श्री महापुरुष देव की अदृश्य शक्ति के प्रभाव से बालक-बालिकाएँ ईर्षायुक्त कामना-क्रोधदायक प्रमाद कर्मों के त्याग पूर्वक प्रेम-प्रसन्नता को धारण करते हुए संयम, सेवा, सादगीयुक्त उद्योगी, स्वावलम्बी, पुरुषार्थी व सब प्रकार के व्यवहारिक गुण-ज्ञान में दक्ष होकर कलहधाम व दरिद्रधाम एक भारतदेश का ही नहीं अपितु विश्व का भाग्य उदय करेंगे।

(४) श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ को विद्यार्थियों के कोर्स में नियुक्त करने से देश के छात्र-छात्राओं का भाग्य उदय होगा। अन्यथा तामसी आचरणयुक्त विनाशकारी कलह की शान्ति जेल और गैस-गोलियों द्वारा होनी सम्भव नहीं।

(५) समाचार पत्रों में श्री समाधिमग्न महापुरुषों का आनन्द-शान्तियुक्त शक्तिदायक विशुद्ध ज्ञान प्रकाशित कराएं।

(६) विशुद्ध ज्ञान के ग्रन्थ छपवाएं। श्री महापुरुषों का छपने योग्य ज्ञान प्रायः दस सेर कागजों पर हमारे पास लिखा है।

(७) आकाशवाणी द्वारा ज्ञान प्रचार का प्रबन्ध करें।

(८) हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित अमृतमय अमर फलदायक विशुद्ध ज्ञान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का प्रचार करें।

(९) सेवा-शक्तिदायक ब्रह्मविद्या अर्थात् गुणविद्या के विश्वविद्यालय की स्थापना कर श्री विश्वपिता आनन्द-मय प्रभु की मर्यादा की शिक्षा एवं परीक्षा का प्रबन्ध करें।

(१०) प्रेस आदि की स्थापना कर प्रचार द्वारा कलहयुक्त विश्व में शान्ति की स्थापना करें।

मुझे पूर्ण आशा है कि श्रद्धालु विवेकीजन स्वयं आत्मिक-आनन्द-शक्ति का अनुभव करेंगे तथा स्वतन्त्र भारत और विश्व में सुख-शान्तियुक्त आनन्द-शक्ति दायनी सात्त्विक संस्कृति की स्थापना करने के लिये श्री विश्व-शान्ति सद्ग्रन्थ के प्रचार में वाणी, लेखनी तथा तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करेंगे।

क्या बिना सहयोग आज तक किसी भी महापुरुषों के ज्ञान का विकास हुआ ? स्मृति रहे ! प्रत्यक्ष में विद्यमान आत्मप्रभावदायक परम आदरणीय महापुरुष श्री आनन्दमय देव जी के गुण, ज्ञान और परम प्रभावयुक्त शक्ति की उपेक्षा कर ध्यानयोग रहित राजसी-तामसी मनुष्यों के संग-सेवा से आपके दिमाग में आनन्द-शान्ति नहीं हो सकती।

वर्तमान में श्री सरकार की सेवा में अरबों की सम्पत्ति प्रतिवर्ष प्रदान की जा रही है जो अकर्मण्यता और दरिद्रता के लिए हितकर सिद्ध हो रही है। परन्तु उक्त ज्ञान से दिमागो आनन्द-शान्तियुक्त आत्मशक्ति का विकास होकर देश का निश्चिन्त व निर्भय होना सम्भव नहीं।

आशा है कि आप सेवक की प्रार्थना स्वीकार कर उपरोक्त प्रार्थनाओं पर यथा शक्ति मनन-विचार करेंगे।

ॐ आनन्दमय

नम्र निवेदन

श्री पुरुष समाज व भगवती देवी समाज तथा छात्र-छात्राओं के प्रति प्रार्थना है कि मनः शान्तिरूप ध्यान-आनन्द प्राप्ति के लिए श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा स्थापित श्री सत्संग में पधारकर अपने जीवन को आनन्द-शक्तियुक्त गुण-ज्ञान सम्पन्न बनावें।

श्री सत्संग दैनिक प्रातःकाल ६ से ८ बजे तक कम्पनी बाग़ "प्रयाग" में सेन्ट जोसेफ स्कूल के सामने मध्य के फाटक के समीप होता है। (प्रयाग पधारने की नियमावली कवर पृ० ३ पर प्रकाशित है।)

श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शिक्षित नेत्र बन्द करके शान्त मुद्रा से भजन करने वाले श्री ध्यानमग्न साधकों (श्री भगवती देवी स्वरूप हो अथवा श्रीमान पुरुष स्वरूप हो) का यदि किसी अन्य नगर में भी दर्शन हो जाए तो आप उनका चार दिन सत्संग करें *। आपको मानसिक शान्ति व ध्यान जनित आनन्द का अनुभव होगा। अन्यथा 'मैं पढ़ता सुनता हूँ बहु ग्रन्थ और गीता परन्तु मनकी परेशानी के सन्मुख (बिना ध्यान के) हूँ रीता का रीता।'

---

* सावधान—जो मानव एक घन्टा भी नेत्र बन्द कर भजन-ध्यान का अभ्यास करने में असमर्थ है उसको कथन मात्र का ही श्री विश्वशान्ति आश्रम का भक्त समझें।

ध्यान के बिना चित्त की प्रसन्नता होनी सम्भव नहीं।

ध्यान लगने के पश्चात् आप स्वयं ही कथन करेंगे कि मेरे धार्मिक-शब्द और ज्ञान-दाता प्रमादी थे।

दूसरी देश सेवार्थ प्रार्थना है कि यथा श्रद्धा-शक्ति अनुसार वाणी, लेखनी और तन, धन द्वारा प्रत्यक्ष आनन्द-शक्तिदायक भगवत् कार्यालय श्री विश्वशान्ति आश्रम की सेवा का विकासकर बनावटी धर्मियों की शिक्षा द्वारा पीड़ित दरिद्रधाम व 'कलहधाम' भारत देश को 'सम्पत्तिधाम' और 'गुणधाम' बनाने में सहयोगी बनें।
(इससे सम्बन्धित ज्ञान पृ० २०० पर प्रकाशित है।)

स्मृति रहे! देश के भाग्य विधाता बालक-बालिकाएँ मानसिक रोगों की वृद्धि करने वाले क्रोधदायक तामसी ज्ञानको धारण कर परिवार सहित देशको उबाल रहे हैं। अतः स्कूल-कालेजोंकी भयानक परिस्थितिको सुधारनेके लिए श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ परम उपयोगी सिद्ध हुआ है।

यदि हमारे वचनों में आपकी श्रद्धा हो तो श्री ग्रन्थ छपाने के हेतु श्री विश्वशान्ति आश्रम से पत्र व्यवहार करने की प्रार्थना है; श्री ग्रन्थ आपके ही नाम से प्रकाशित करा दिया जाएगा। ॐ आनन्दमय

प्रकाशिका :—श्री शाम जी भाई गोकुल आनन्दमय की मातृदेवी श्रीमती गोमती बाई जी, बम्बई—श्री ग्रन्थ ५००।

श्री देश निवासियों के प्रति प्रार्थना

(१) श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (१) के आंशिक ज्ञान में पृ० ६ पर प्रकाशित 'श्री ग्रन्थ नियमावली' के अनुसार यथाशक्ति साधन करना प्रारम्भ करें आपका शीघ्र ध्यान लगना सम्भव है।

(२) यदि आप रहन-शयन, भोजन आदि का प्रबन्ध स्वयं कर सकें तो पाच-सात दिन के लिये 'प्रयाग' सत्संग में पधारें, आपको दिमागी आनन्द-शान्तिदायक मन की एकाग्रता रूप ध्यान करने और करवाने की योग्यता प्राप्त होगी।

(३) सर्व उन्नतिदायक श्री विश्वशान्ति आश्रम के आदर्शों का निरीक्षण और श्री ध्यानमग्न सेवामय साधकों का दर्शन कर आप प्रसन्न होंगे।

(४) भगवन् विशेष स्मृति रहे! आत्मिक तृप्ति के अतिरिक्त बाहिरी सेवा का श्री आश्रम की ओर से कोई प्रबन्ध नही है। नगर की ओर से भोजनालय व धर्म शालाआपकी प्रतीक्षा में है।

ॐ आनन्दमय

श्री सार तत्त्व

श्री महापुरुषों की शब्द शक्ति के श्रद्धालु मानव इस दिव्य शक्तिप्रद श्री ग्रन्थ को नित्य नियमपूर्वक प्रत्येक माह में एक बार आद्योपान्त पठन करें।

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुषों के आनन्द सम्पन्न हृदय कमल से प्रकट हुए वैदिक, सनातन, ब्रह्मवाची महावाक्य 'ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' महामंत्रको हर समय हर कार्य करते हुए जपें आप सदा-सर्वदा शान्त, प्रसन्न व आनन्दमग्न रहेंगे।

यह महामंत्र दिमागी गुण-ज्ञान, आत्मिक-शक्ति व आनन्द-शान्तियुक्त मोक्ष-दायक है।

ॐ आनन्दमय

कवर मुद्रक—दी इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स प्रा० लि०, इलाहाबाद